मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

जुलाई ९३ मूल्य १५/-

सदगुरु विशेषांक

अद्वितीय अनुपम

आजीवन सदस्यता

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका की आजीवन सदस्यता एक गौरव है, एक स्वाभिमान है, जीवन का सौभाग्य है और साधना की पूर्णता है, यह एक अनुपम गुरुदेव के हृदय के निकट पहुंचने की प्रिय पात्रता है, साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है ....

और आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र ६६६६/- है जिसे एक मुश्त या तीन किश्तों में जमा कराकर यह सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।

और फिर अप्रैल ९३ से तो पत्रिका व्यवस्थापकों ने आजीवन सदस्य बनने वाले को उपहारों का ढेर लगा दिया है -

- पूरे जीवन भर "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर पर डाक द्वारा
- सम्पूर्ण दीक्षा - रसेश्वरी दीक्षा - एक माह के भीतर भीतर निःशुल्क
- एक इक्कीस तोले का पारद शिवलिंग - जिसकी लागत न्यौछावर ही २५०० रू० है, पर आपको सर्वथा निःशुल्क
- एक १६ x २० साइज का प्राण ऊर्जा से चैतन्य, सिद्ध गुरुचित्र निःशुल्क
- प्रत्येक शिविर में अत्याधिक उपयोगी "शिविर सिद्धि पैकेट" १, धोती, २. माला, ३. पंच पात्र, ४. गुरुचित्र तथा ५. सिद्धासन - सर्वथा निःशुल्क
- "सूर्यकान्त उपरत्न" जो मंत्र सिद्ध है, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य, सर्व कार्य सिद्धि दायक सर्वथा मुफ्त
- यह छूट केवल भारत में रहने वाले साधकों को ही प्राप्त होगी
- यह सुविधा ३ जुलाई ९३, गुरुपूर्णिमा तक बढ़ाई गई है (विशेष अनुरोध पर)।

आजीवन सदस्य

यों आप बिना उपरोक्त उपहारों के मात्र २४०० रू० देकर भी आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

आपको जीवन भर "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका निःशुल्क घर बैठे प्राप्त होती रहेगी।

और

जो साधक या पाठक किसी को विशेष आजीवन सदस्य बनने के लिये प्रेरित करेगा उसे एक धातु युक्त पारद शिवलिंग निःशुल्क उपहार स्वरूप प्राप्त होगा।

विशेष

और फिर यह आपकी धरोहर धनराशि है जो पत्रिका कार्यालय में आपके नाम से जमा रहेगी, जब भी आप आजीवन सदस्य न रहना चाहें, आप रजिस्टर्ड डाक से इस प्रकार का पत्र भेज दें, (जिसका प्रमाणीकरण कार्यालय द्वारा हो) पत्र भेजने की तारीख से दस वर्ष बाद **यह धरोहर धनराशि, बिना ब्याज के आपको लौटा दी जायेगी।**

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

फोन : ०२९१-३२२०९

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

गूहत गुह्यं तमो
वि यात विश्वमत्रिणाम्
ज्योतिष्कतां यदु श्मसि

ऋग्वेद १-८६-१०

हे गुरुदेव! मन के गुह्य अंधकार को विलीन करो। अपने में सभी को विलय करते अंधकार को, यहां से दूर भगा दो, और आपके द्वारा हमें आत्म ज्योति प्राप्त हो।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गलत समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम या तथ्य मिल जाय तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु संत होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा , और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक ,मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका से मंगवायें और न सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वंय होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री को पुस्तकाकार या अन्य किसी भी रूप में डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली के नाम से प्रकाशित किया जा सकता है। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हो) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर की होगी। ♦

विषय - सूची

पाठकों के पत्र

१. पत्रिका के मई अंक में दो अप्सरा साधनायें दी गई हैं मैने उर्वशी साधना तो पहले भी की है, और प्रारम्भिक सफलता पाई है । इस बार मैं शशिदिव्य अप्सरा साधना पढ़कर जहां चौंका वहीं अब उसको करने का मन बना लिया है। क्या मुझे ऐसा करना ठीक रहेगा। उचित मार्ग दर्शन दें। **हरीश बर्नवाल , बम्बई**

आप इस साधना को अवश्य करें और सफलता प्राप्त करें । विस्तृत विवरण के लिए जोधपुर कार्यालय से सम्पर्क करें।

संपादक

२. आप पत्रिका की लगभग प्रत्येक साधना में जहां भी सामग्री की बात आती है वहां यह क्यों लिख देते हैं कि नई माला की आवश्यकता पड़ेगी? क्या यह आपकी व्यवसायिकता नहीं ?

कल्पना श्रीवास्तव , खंडवा

आप कृपया अपनी जिज्ञासा हेतु मई माह के ही अंक में शशिदिव्य अप्सरा साधना को पुनः विस्तार से पढें फिर भी कोई शंका रहे तो आपके सुझाव का सहर्ष स्वागत है।

संपादक

३. मैंने पहली बार ही आपकी पत्रिका पढ़ी। क्या स्त्रियां भी एक कुशल सम्मोहन कर्त्री बन सकती हैं ?

सरिता बाजपेयी,इन्दौर

कोई भी ज्ञान या विज्ञान व्यक्ति के लिंग अथवा जाति पर आश्रित नहीं होता वह तो प्रायः आय पर भी आश्रित नहीं होता अतः आप भी प्रयास कर कुशल सम्मोहन कर्त्री बन सकती हैं। **सम्पादक**

४. 'मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान ' पत्रिका को मैंने पहली बार अपने क्षेत्र में देखा । हमारे क्षेत्र में हिन्दी भाषी बहुत नहीं है, क्या आपकी पत्रिका का अनुवाद अंग्रेजी अथवा किसी अन्य भाषा में भी होता है?

नूपुर बजाज,२४ परगना

शीघ्र ही हमं अंग्रेंजी तथा गुजराती में पत्रिका प्रकाशित करने वाले हैं। इसकी पूर्व सूचना अवश्य दी जायेगी । **सम्पादक**

५. 'मैं" सम्मोहन विज्ञान ' का विशेषांक पढ़ने केलिए बड़ी आशा से पत्रिका की प्रतीक्षा में था किन्तु मुझे कुछ निराशा सी हुई जब पत्रिका में सम्मोहन विज्ञान सिखाने की कोई विधि नहीं मिली।

रविन्द्र झा, हजारी बाग

आपकी आलोचना अपने स्थान पर सही है किन्तु हमने उचित समझा कि पहले अपने पाठकों को इस अछूते विज्ञान के प्रारम्भिक ज्ञान से परिचित करा दें , और उनमें उसके प्रति अभिरूचि जाग्रत करें । आप निराश न हो आगामी अंकों में प्रक्रिया सम्बन्धी ज्ञान भी अवश्य देंगें-।

-- सम्पादक

६. पूज्य गुरुदेव , मेरा आपसे करबद्ध निवेदन है कि जिस प्रकार से आपने दो वर्ष पूर्व पत्रिका में 'कथ्य ' शीर्षक से अपने आशीर्वाद से युक्त वचन हमें प्रदान किये थे उसी क्रम में हमें पुनः रस से भर दें,'कथ्य' के पुनर्प्रकाशन से ।

जीतू भाई पटेल, बड़ौदा

७. मैं पूज्य गुरुदेव से वर्षों से जुड़ा हूं और ज्योतिष में विशेष रुचि रखता हूं। मैं चाहता हूं कि पत्रिका में प्रति माह अंकों के अनुसार दिये जाने वाले भविष्य फल के स्थान पर कोई स्थाई स्तम्भ ज्योतिष का ही दिया जाय।

दिनेश मित्तल , दिल्ली.

८. पत्रिका आफसेट में छपने के बाद वैसे तो सुन्दर हो गई है किन्तु छपने वाले चित्रों की क्वालिटी से हमें सन्तोष नहीं है आप अति शीघ्र ही पत्रिका के चित्रों को भी मुख पृष्ठ की भांति आकर्षक रंगो में सजा कर दें ।

रीता शर्मा , लखनऊ.

९. पूज्यपाद गुरुदेव,साष्टांग प्रणाम !आपने एक दिवसीय बम्बई शिविर के अवसर पर हम सभी को जो कुछ भी प्रदान कर दिया उसके बदले में हमारे पास कुछ भी नहीं अर्पित करने को ।आप कृपया पत्रिका के प्रारम्भिक पृष्ठों में ही एक दिवसीय शिविरों की स्थिति दे दिया करें जिससे अधिकाधिक जन लाभान्वित हो सकें।

राजेश गुप्ता, बम्बई.

शिष्यों की शक्ति जगाने को,
यह सिद्ध पत्रिका आई है।
पृष्ठों के आंचल में कितनी
पावनता भर कर लाई है
आगे बढ़कर पाथेय बनो,
गुरुवर की वाणी आई है
शिष्यों की शक्ति जगाने को
यह सिद्ध पत्रिका आई है।
सदियों से तड़फता है मानव,
परम - ब्रह्म के दर्शन को।
मंत्र, तंत्र और यंत्र के द्वारा,
हर मुश्किल आसान बनाई है।
शिष्यों की शक्ति जगाने को
यह सिद्ध पत्रिका आई है।
हृदयों के सूखे उपवन में
दीक्षा की अमृत वर्षा से
यह पुष्प खिलाने आई है,
मन - उपवन सजाने आई है।
शिष्यों की शक्ति जगाने को,
यह सिद्ध पत्रिका आई है।
सिद्धाश्रम सिद्धों की भूमि,
हैं राम, कृष्ण, ऋषि -देव वहां,
उस सिद्ध भूमि तक जाने का,
यह मार्ग बताने आई है।
शिष्यों की शक्ति जगाने को,
यह सिद्ध पत्रिका आई है।

प्रियंका, वाराणसी

वर्ष १३ अंक ७ जुलाई ९३
सम्पादक मंडल
पत्र व्यवहार - मंत्र -तंत्र -यंत्र कार्यालय,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकार्ट कॉलोनी,
जोधपुर - ३४२००१ (राज.)
टेलीफोन -०२९१ - ३२२०६
दिल्ली कार्यालय - गुरुधाम - ३०६ कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली, टेलीफोन -०११-७१८२२४८
सम्पादक मंडल - डॉ. श्यामलकुमार बनर्जी, कृष्ण मुरारी श्रीवास्तव, गुरुसेवक
संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली
वित्तीय सलाहकार - अरविन्द श्रीमाली
प्रधान संपादक
नन्दकिशोर श्रीमाली

" सिद्धाश्रम गुरु गुटिका " पर मेरे सिद्ध सफल प्रयोग

१. यदि साधना में सफलता नहीं मिल रही हो तो सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को कुंकुम की डिव्वी में रख कर साधना स्थल पर रखें तो सफलता प्राप्त होती है।

२. भाग्योदय के लिए चार गुटिका प्राप्त कर घर के चारों कोनों में रखें।

३. सम्मान प्राप्ति के लिए सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को शिवलिंग पर चढ़ावें।

४. वशीकरण प्रयोग करने से पूर्व गुरु पूजन करते समय गुरु चित्र के आगे इस गुटिका को रखने से कार्य में सफलता मिलती ही है।

५. व्यापार में वृद्धि के लिए सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को वहीखाते वाले स्थान में लाल कपड़े में बांध कर रखें।

६. सिद्धाश्रम गुरु गुटिका की नित्य पूजा करने से घर में शांति बनी रहती है।

७. भूत या बेताल की साधना करते समय इस गुटिका को अपने सामने रखने पर भय नहीं लगता है, और सफलता मिलती है।

८. सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को एक पात्र में जल भर कर रात भर रखें, सुबह वह जल रोगी पर छिड़क दें ऐसा लगातार २१ दिन करने से रोग समाप्त होने लगता है।

९. एक कागज पर प्रेमी या प्रेमिका का नाम लिखकर,उस कागज पर गुटिका को रख कर नित्य सिरहाने रखे, तो प्रेमी वश में हो जाता है।

१०. सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को बृहस्पतिवार को पूजा स्थान में रखें, फिर लक्ष्मी साधना करें तो धन प्राप्ति होती ही है।

११. इस गुटिका पर सूर्योदय के समय अर्ध्य देने से मनोवांछित कार्य पूरे होते हैं।

१२. यदि इस गुटिका को बालक के गले में पहिना दें तो उसका पढ़ाई में मन लगने लगता है।

१३. यदि इस गुटिका को अपने वस्त्र में रखकर कचहरी जायें तो मुकदमें में सफलता मिलती है।

१४. प्रत्येक महीने की २१ तारीख को इस गुटिका का पूजन करने से अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता तथा गुरु सिद्धि प्राप्त होती है।

१५. इस गुटिका को तांत्रिक साधनाओं में अपने समक्ष रखने से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

ये तो अद्‌भुत प्रामाणिक और सिद्ध प्रयोग है

स्वामी हरिनाथ

गुरु - संदेश

* मैं गुरुदेव का पुराना सेवक हूं।
* हमने तो गुरुदेव की साधना में जीवन के पांच वर्ष लगा दिये।
* मै तो जन्मों से पलके बिछाए बैठी हूं।
* मैं तो जगदम्बा के ध्यान में सुध बुध बिसार बैठा।
* मानों मछली गर्व से कहे,कि देखो मैं इतने दिन जल से अलग रही!!
* मछली तो जल से एक क्षण भी अलग रह कर ही मर जाती है।
* और सफलता नहीं मिली।
* मिलती भी कैसे ? मछली जो नहीं बने।
* एक क्षण में तड़फ कर मर जाने की अदा सीखी नहीं गुरुदेव से तुमने।
* जो साधना का मूल मंत्र थी।
* मैंने चाहा था कि तुम भी मंथन कर सको।
* मंथन होना प्रमाण है कि तुम छोटे पोखरे, तालाब , गड्ढे नहीं रहे।
* क्योंकि मंथन तो हुआ था समुद्र में।
* अब तुममें गुरुत्व जो आ गया, गुरु को भी समुद्र ही कहा गया है।
* पर इस मंथन में विष और अमृत दोनो ही उत्पन्न होंगे।
* 'सार सार को गहि रहे, थोथा देहि उड़ाय' यह कला तुम्हें अभी सीखनी होगी मुझसे।
* विष को कंठ में धारण करना केवल मै ही जानता हूं।

-विद्यापति

सम्पादकीय

पासा फेंका प्रेम का , सारी किया सरीर
सतगुरु दांव बताइया, खेलत दास कबीर ।।

यदि कहा जाय कि कबीर दास ने इन दो पंक्तियों में ही जीवन की सारभूत बात कह दी है, तो कोई गलत नहीं। "गुरु " जीवन में आते हैं, दांव बताते हैं और खेलना होता है हमको। यह 'गुरु-मार्ग ' ही एक ऐसा मार्ग है जिसमें प्रेम का पासा फेंकने की बात कही-सुनी जाती है और इन तानों-बानों में हम फिर सहज ही जिस ओर बढ़ने का उत्साह अपने अंदर भर लेते हैं, वह होता है साधना का मार्ग । यही है" शरीर को सारी करना ।" यही कला सिखाना चाहते हैं पूज्य गुरुदेव हम सभी को।

जीवन को समस्त नकारात्मक पहलुओं से निकाल कर,गुरुपद को दूरी, भय और व्यक्ति द्वारा अपनी तथाकथित भक्ति का केन्द्र बनाने का प्रबलता से विरोध करने की कला सिखाई है पूज्य गुरुदेव ने हम सभी को, और बताया है कि गुरु तो तुम्हारे रग-रग में बहता आनन्द का प्रवाह है, उससे फिर कैसा दूजा पन और कैसी दूरी ?

आज इसी से देश के ही नही विदेशों में भी जो उनके शिष्य हैं वे उनकी एक पुकार पर दौड़ते हुये चले आते हैं। जीवन की विवशता न हो तो वे अलग रहने की कल्पना ही नही करते।

यह माह विशेष अवसर है शिष्यों के लिये, क्योंकि इसी माह में इस गुरु पूर्णिमा से अगली गुरु पूर्णिमा के मध्य प्रभु आपको ऐसा सौभाग्य दें, कि पूज्य गुरुदेव के पावन चरण आपके नगर, ग्राम और आपके घर में पड़ें आप श्रेष्ठ साधना शिविर का आयोजन कर उनका सादर आवाहन अपने स्थान पर कर सकें।

पूज्य गुरुदेव ने इस विशेष अवसर पर और इस महत्वपूर्ण विशेषांक के प्रकाशन पर अपने सभी शिष्यों एवं पाठकों को मुक्त कंठ से आशीर्वाद दिया है।

आपका अपना

नन्द किशोर श्रीमाली

कठोर से कठोर पत्थर को भी वश में किया जा सकता है

सम्मोहन के माध्यम से

एक अद्वितीय अवसर

सम्पूर्ण सम्मोहन दीक्षा

२७.६.६३

परम पूज्य गुरु देव के सान्निध्य में

* सम्मोहन तो पत्थर से पत्थर दिल को भी मोम बना देता है. . .
* सम्मोहन के द्वारा तो किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है पिता , पुत्र ,प्रेमी,प्रेमिका ,कर्मचारी मालिक और कोई भी. . .
* सम्मोहन या हिप्नोटिज्म को तो पूरे संसार के वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है, कि इसके माध्यम से कुछ भी किया जा सकता है. . .
* सम्मोहन ही वह विधा है, जिसके द्वारा अपने व्यक्तित्व को आकर्षक ,भव्य और चुम्बकीय बनाया जा सकता है. . .
* सम्मोहन के द्वारा एक या दो व्यक्ति तो क्या ,पूरी भीड़ को, जन समुदाय को वश में किया जा सकता है, कि हम जो कहे, वह भीड़ माने ही. . .
* सम्मोहन के द्वारा ही तो घर बाहिर ,गृहस्थ-समाज और जीवन की समस्याएं सुलझायी जा सकती हैं

एक ऐसा दिवस, जो आपके जीवन का स्वर्णिम सुप्रभात है

सम्पूर्ण सात सम्मोहन दीक्षा में से प्रथम और

अद्वितीय दीक्षा

२७ जून,६३

स्थान

३०६, कोहाट एन्क्लेव ,नई दिल्ली

टेलीफोन - ०११-७१८२२४८

पहले से ही व्यक्तिगत या टेलीफोन द्वारा अपना स्थान आरक्षित करवा लें

हिमालय भी जिनके समक्ष नतमस्तक है

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी
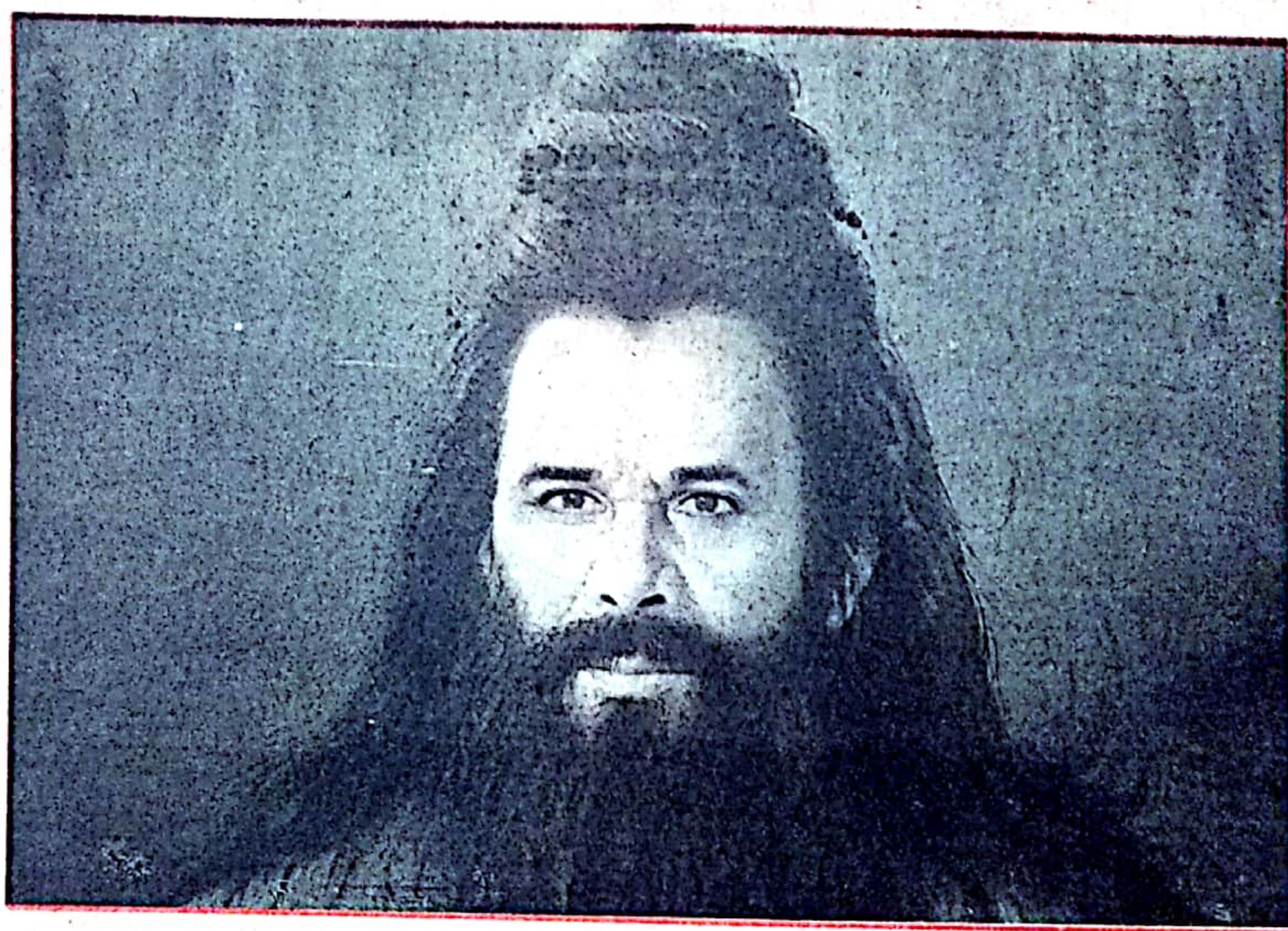
सिद्धाश्रम संसार का गौरव स्थल है, एक ऐसा पावन दिव्य पवित्र भूखण्ड है, जो कि अपने आप में अद्वितीय और अन्यतम हैं, जहां उच्च कोटि के योगी विद्यमान हैं, और साधना की जिन ऊँचाइयों पर पहुंचे हुए हैं, उनकी समानता और तुलना हो ही नहीं सकती, प्रत्येक प्रकार की साधना और सिद्धियों का यह आधार रहा है। आज भी यहां सैकड़ों वर्षों की आयु प्राप्त योगी विचरण करते हुए दिखाई दे जाते हैं। सारा वातावरण सौरभमय, दिव्य, मनोहर है,यहां की माटी चन्दन की तरह ललाट पर लगाने योग्य है, यहां बारहों महीने विविध तरह के पुष्प अपने पूर्ण यौवन के साथ खिले रहते हैं। जहां की हवा में मस्ती, पवित्रता और गुनगुनाहट है , जहां कि सिद्ध योगा झील प्रकृति का अदम्य वरदान है, जिसमें स्नान करने से एक ऐसे सुख की प्राप्ति होती है जिसका वर्णन शब्दों के माध्यम से सम्भव हो ही नहीं सकता। उस झील में स्नान करने से स्वतः समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं, काया पवित्र और दिव्य बन जाती है, अलग-अलग पर्ण कुटियों में यहां योगी ध्यानस्थ हैं, कहीं चिन्तन हो रहा है, तो कहीं कुछ समूह शास्त्रार्थ में व्यस्त हैं, कुछ साधक और योगी नवीन साधना पद्धतियों को ढूंढने में संलग्न हैं तो कहीं यज्ञ -धूम से वातावरण सुरभित है, सारा वातावरण अपने आप में अद्वितीय अनिवर्चनीय स्वप्नवत् अलौकिक है, जहां जाकर व्यक्ति अपने आप में खो

* **क्या यह सम्भव है कि एक हाड़-मांस का अदना सा आदमी छोटी सी उम्र में ही पूरे हिमालय को छान मारे . . .**

* **क्या एक साधारण व्यक्तित्व योग, दर्शन, मीमांसा, शास्त्र, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद ,मंत्र,तंत्र, चिकित्सा, साधना एवं ध्यान,समाधि सभी क्षेत्रों में पारंगत हो, सर्वश्रेष्ठ हो, अद्वितीय हो. . .**

* **नहीं, ये लक्षण , यह पहचान तो अति मानव की है, अद्वितीय युग-पुरुष की है.**

* **और एक दिन तुम सब शिष्य इस बात पर गर्व करोगे, कि तुम निखिलेश्वरानंद जी के शिष्य रहे हो ।** ...गुरु सूत्र

जाता है, जीवन के रहस्यों को प्राप्त कर लेता है, और जरा-मरण के भय से मुक्त होकर उन असीम सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है जो अपने आप में सर्वश्रेष्ठ है।

जीवन्त व्यक्तित्व : निखिलेश्वरानन्द जी

ऐसे ही अद्वितीय वेदों में वर्णित सिद्धाश्रम के संचालक स्वामी सच्चिदानन्द जी के प्रमुख शिष्य योगी राज निखिलेश्वरानन्द जी हैं जिन पर सिद्धाश्रम का अधिकतर भार है, गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी रात्रि को नित्य सूक्ष्म शरीर से सिद्धाश्रम जाते हैं, वहां की संचालन व्यवस्था पर बराबर दृष्टि रखते हैं। यदि किसी साधक योगी या सन्यासी की कोई साधना विषयक समस्या होती है, तो उसका समाधान करते है और उस दिव्य आश्रम को प्रति क्षण नवीन बनाये रखते हुए गतिशील बनाये रखते हैं। वास्तव में ही आज सिद्धाश्रम का जो स्वरूप है, उसका श्रेय स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी को है, जिन के प्रयासों से ही वह आश्रम अपने आप में गतिशील हो सका, प्राणमय और जीवन्त हो सका, तथा साधना की उष्मा से सुगन्ध मय सुरभित और सम्मोहक हो सका, इस वजह से वे अन्य सभी योगियों और ऋषियों से बहुत ऊँचे उठ गये हैं , ऐसे प्रातः स्मरणीय निखिलेश्वरानन्द जी का स्मरण ही पूरे शरीर को पवित्र और दिव्य बना देने में समर्थ है ।

गृहस्थ योगी :-

इस बात की कल्पना ही नहीं की जा सकती कि जंगलों में विचरण करने वाला योगी कभी एक छोटे से घर में भी आबद्ध होकर रह सकता है , सारे संसार में विचरण करने वाला व्यक्तित्व एक सीमा में सिमट कर रह सकता है, पर हिमालय के सिद्ध योगी स्वामी सच्चिदानन्द ज़ी ने इस बात को अनुभव किया कि भारत वर्ष से प्राचीन गूढ़ विद्याएं लोप होती जा रही हैं, इन क्षेत्रों में अनधिकृत व्यक्ति आ गये हैं और धीरे-धीरे इसके प्रति लोगों में अनास्था पैदा हो गई है यदि यही स्थिति रही तो भारत वर्ष से और विशेष कर गृहस्थ जीवन से ये विद्याएं समाप्त हो जायेंगी।

आज इस व्यक्तित्व को गृहस्थ में देखकर विश्वास नहीं होता कि यह साधारण सा धोती कुर्ता पहने हुए जो व्यक्ति दिखाई दे रहा है, उसमें ज्ञान और चेतना का समुद्र लहरा रहा है, यह विश्वास नहीं होता कि यह वही व्यक्तित्च है जिसने पूरे हिमालय को अपने पैरों से नापा है, जिसने एक एक क्षण को पूरी सार्थकता के साथ जिया है, इनके साथ हजारों सन्यासी शिष्य रहा करते थे, उन सबको साधना के क्षेत्र में अद्वितीय बनाया है, यह वह व्यक्तित्व है जिसके सामने हिमालय भी अपने आपको बहुत छोटा सा अनुभव करता है, समस्त प्रकृति जिसके सामने हाथ बांधे खड़ी है, वह व्यक्तित्व एक छोटे से दायरे में सिमट कर रह गया है। पर समाज ने व्यक्ति का मूल्य कब आंका है, जब ऐसे व्यक्तित्व हमारे बीच से चले जाते हैं तब हम हाथ मल कर पछताते है, "वशिष्ठ "और "विश्वामित्र" के तिरोहित होने के बाद ही समाज ने उनकी अजेय संकल्प शक्ति और साधना की उच्चता को पहिचाना, "शंकराचार्य" की मृत्यु के बाद एहसास किया गया कि वह अपने आप में पौरुषवान् व्यक्तित्व था । गृहस्थ जीवन में इस व्यक्तित्व ने अपने उद्देश्य प्राप्ति के मार्ग में जितनी बाधाएं, कष्ट, परेशानी, अड़चने और समस्याएं अनुभव की हैं, उतना शायद ही किसी ने अनुभव किया होगा, पग-पग पर तिरस्कार और व्यंग के कड़वे घूंट पीने पड़ें हैं, समाज के षड्यन्त्रों का गरल अपने गले में उतारना पड़ा है, इतना होने पर भी यह व्यक्तित्व अपने आप में अडिग है, अपने पथ पर गतिशील है।

गृहस्थ शिष्यों को निरन्तर प्रेरणा और साधना देते हुए मैंने देखा है कि अपने पूर्ण गृहस्थ का उत्तरदायित्व निर्वाह करते हुए उन्होंने गृहस्थ शिष्यों के मन में इस ज्ञान के प्रति ललक और चेतना पैदा की है, उनमें विश्वास का जागरण किया है, उन्हें इस बात का एहसास होने लगा है कि ये साधनाएं अपने आप में सही हैं, यदि सही तरीके से कार्य किया जाय तो गृहस्थ में रहते हुए भी अपने उद्देश्यों में सफलता पाई जा सकती है।

"त्रिजटा अघोरी" तन्त्र का परिचित नाम है,पर गुरुदेव का शिष्यत्व पाकर उसने यह स्वीकार किया कि यदि सही अर्थों में कहा जाय तो स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी तन्त्र के क्षेत्र में अन्तिम नाम है ;न तो उनका मुकाबला किया जा सकता है और न इस क्षेत्र में परास्त

(शेष पृष्ठ २४ पर)

तड़फ, बेचैनी , आंसू , हूक, विरह और वेदना की दाह में जो स्मृति आती है वह "गुरु" शब्द की ही होती है , और यह हूक पूरे अन्तर्बाह्य को भिगो देती है. . . मस्त,पूर्णता युक्त आनन्द दायक...

अन्तस हूक उठी गुरु आये

उनके आते ही जीवन का अन्तर्बाह्य पक्ष सुगन्धित होकर जगमगा उठा

पाठकों के मानस में अक्सर यह प्रश्न उठता है कि "गुरु तत्व " क्या है? ऐसी कौन सी शक्ति निहित है इस "गुरु तत्व " में जिसके लिए कहा गया है कि "प्रथमे गुरु की वन्दना " ?

प्रश्न गूढ़ है। गूढ़ इसलिये कि सामान्य मानव के धरातल पर गुरु को परिभाषित करना अत्यंत दुष्कर है, कठिन है पर अगर सीधे साधे शब्दों में कहें तो ज्ञान ही गुरु है, ज्ञान भी कौन सा ,जो तन्द्रावस्था को तोड़ दे, नींद से जगा दे हमें, यह बोध करा सके कि अभी तक जो जीवन समझा था वह वास्तविक जीवन है ही नहीं, एक गहरी नींद थी वह जिसमें आकण्ठ डूबे हैं सभी।

सद्‌गुरु की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को अगर एक शब्द में कहें तो वह है अप्रमाद (अवेयरनेस) अर्थात् जागकर जीना, जब व्यक्ति को अपने अस्तित्व का भान हो जाये।

अभी तक की यात्रा में स्वयं से ही अनभिज्ञ है व्यक्ति, स्वयं से ही परिचय नहीं है उसका, निकटतम तक ही नहीं पहुंच पाया है वह और इस निकटतम तक पहुंचाना ही सद्‌गुरु का ध्येय है तभी दूरतम तक की मंजिल तय हो सकती है क्योंकि दूर भी निकट का ही प्रसारण है।

पर मानव अपनी तन्द्रा को सहेज कर रखे हुए है, प्रमाद जाल में जकड़ा हुआ है जो प्रतिपल उसे मृत्यु की ओर अग्रसर कर रहा है और सद्‌गुरु ले चलता है उसे मुक्ति के पथ पर, अमृत की राह पर क्योंकि जागते ही शिष्य को ज्ञान हो जाता है उस अमृतकुण्ड का जो भीतर ही प्रसुप्त है जो मिट नहीं सकता , एक ऐसी सम्पदा का जो छीनी नहीं जा सकती। जो शाश्वत है, समयातीत है।

अतः यह स्पष्ट है कि गुरु कोई शरीर या नाम नहीं , किसी व्यक्तित्व या चमक -दमक युक्त आश्रम के अधिष्ठाता को भी गुरु नहीं कहते, प्रवचन करने वाले या शिष्यों की फौज लेकर चलने वाले सन्यासी को भी गुरु नाम से सम्बोधित नहीं किया जाता । जो कुछ भी वास्तविक ज्ञान है वह "गुरु" है इसीलिए गुरु को तत्व कहा गया है जो समस्त ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है। यह अलग तथ्य है कि यह ज्ञान किसी शरीर में भी विद्यमान रह सकता है और इसीलिए वह शरीर भी पवित्र और पूज्य बन जाता है फिर ऐसे उच्चकोटि के ज्ञान को धारण करने वाले व्यक्तित्व को गुरु कह सकते हैं ।

और यह भी सत्य है कि जहां भी परमसत्य को पाने की पीड़ा और अभीप्सा है, अस्तित्व किसी न किसी के माध्यम से उपस्थित हो ही जाता है, यही अस्तित्व सद्‌गुरु होता है जिसके पास बैठते -बैठते, जिसके रस मे निमग्न होते-होते सत्य एक दिन उपज उठता है। (शेष पृष्ठ ५७ पर)

निखिलं मधुरं

अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हसितं मधुरं
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
वचनं मधुरं चरितं मधुरं, वसनं मधुरं वलितं मधुरं
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

दन्त्यं मधुरं जिह्वा मधुरं, चितवन मधुरं, भृकुटि मधुरं
कर्ण मधुरं हास्यं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
पाणिर्मधुरं पादौ मधुरं, नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं
इत वै मधुरं उतवै मधुरं, मधुराधिपते निखिलं म धुरं।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं, मुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरं
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
करणं मधुरं तरणं मधुरं, हरणं मधुरं रमणं मधुरं
वमितं मधुरं शमितं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

रामं मधुरं हस्तं मधुरं, भुज वै मधुरं बाहु मधुरं
चितवन मधुरं भृकुटी मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
यष्टिर्मधुरं सृष्टिर्मधुरं, प्रिय वै मधुरं प्रियतं मधुरं
मम वै मधुरं त्वामं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

कामं मधुरं चिन्त्यं मधुरं, दृष्टिर्मधुरं जंघा मधुरं
गति वै मधुरं कार्यमधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
कांति मधुरं रंजन मधुरं, अंजन मधुरं रोमं मधुरं
नाट्यं मधुरं लीला मधुरं,मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

वेणु मधुरं केशं मधुरं, गीतं मधुरं गेयं मधुरं
चित्तं मधुरं रंजन मधुरं, मधुराधिपते निखलं मधुरं।
दिव्या मधुरं कृष्णा मधुरं,चेतन मधुरं अंगी मधुरं
प्रिय वै मधुरं वेणुमधुरं,मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

आहं मधुरं वाहं मधुरं , मोदं मधुरं कुम्भं मधुरं
श्रीं श्रीं मधुरं अंगम मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
गुणकर मधुरं सुखकर मधुरं,आशीर्मधुरं श्रीवैं मधुरं
संगम मधुरं संगिन मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

सौन्दर मधुरं लीला मधुरं, प्रगटं मधुरं प्रच्छं मधुरं
यष्टिं मधुरं तृष्टिं मधुरं मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
मधुरं मधुरं मधुरं मधुरं, मधुरं मधुरं सर्वं मधुरं
मम प्राण चरण त्वं वै मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।। ♦

पारद - पादुका पूजन

गृहे स्याद् यस्य पूजायां गुरु पारद-पादुका ।
देवा अपि च तद् भाग्यं धन्यं धन्यतरं विदुः।।

जिस सौभाग्य शाली व्यक्ति के पूजा गृह में पारद गुरु-पादुका स्थापित है उसके भाग्य से देवता भी ईर्ष्या करते हैं तथा उसे धन्य-धन्य कहते हैं।

गुरु पादुका का महत्व कोई शिष्य या साधक ही जान सकता है, सामान्य मनुष्य के लिए तो वह मात्र पादुका है किन्तु इसमें जो दिव्यता और चैतन्यता है वह अहर्निश शिष्य के हृदय में प्रवहित होती रहती है। गुरु चरण पादुका की उपस्थिति घर में साक्षात् गुरु की उपस्थिति जैसी है, क्योंकि गुरु की समस्त शक्ति का श्रोत उनके चरण- कमल ही हैं। शिष्य को जो कुछ भी प्राप्त हुआ है वह गुरु के चरणों से ही सम्भव हुआ है। जब गुरु सशरीर उपस्थित न हों या किसी प्रवास में हों तो गुरु पादुका ही शिष्य के उपास्य के रूप में वन्दनीय और सेवनीय होता है। श्री रामचन्द्र जी के वन गमन के बाद भरत जी ने १४ वर्ष तक इन पादुकाओं की उपासना की, आज प्रेमी भक्तों में भरत जी अद्वितीय और अग्रणी भक्त माने जाते हैं। गुरु के शरीर से सम्बन्धित एक-एक वस्तु परमश्रद्धास्पद एवं उपादेय होती हैं। फिर "चरण पादुका " तो शिष्य के सौभाग्य से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से जुड़े हुए हैं। गुरु पादुकायें सोने, चांदी या काष्ठ की भी हो सकती है पर "पारद पादुका" का अपना विभिन्न ही महत्व है।

"पारद " धातुओं में अद्वितीय एवं श्रेष्ठतम माना गया है। शम्भु के शक्ति रूप होने के कारण सभी देवी देवताओं के द्वारा वन्दनीय एवं स्पृहनीय है । यह अनेक श्रेष्ठ मंत्रात्मक क्रियाओं से संस्कारित होने के कारण जिस किसी भी घर में स्थापित होता है, वह घर ,वह परिवार सर्वत्र मंगलमय सुखद एवं शान्ति मय हो जाता है। सच तो यह है कि "पारद" समस्त संसार का आधार भूत तत्व है। इसलिए धर्म, अर्थ और काम प्राप्ति का मूल भूत साधन है। इतने महत्व के रहते "पारद पादुका " जिस घर में स्थापित हो व प्रतिदिन पूजन होता हो उससे देवता गण भी ईर्ष्या करते हैं, और समस्त वातावरण इस के कारण धन्य- धन्य होकर अध्यात्ममय बन जाता है।

पूजन विधि :-

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में स्नान आदि से परिशुद्ध होकर पवित्र आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जायें, अपने सामने एक लकड़ी की छोटी चौकी पर पीला कपड़ा बिछा दें तथा उस पर एक थाली स्टील या तांबें की रख दे फिर पारद गुरु पादुका को स्थापित करके पूजन आरम्भ करें।

पवित्री करण :-

इस मंत्र से अपने शरीर तथा अन्तर्मन को पवित्र करें -
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थांगतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।

आचमनम् :-

दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार पियें -
ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा,
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा,
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।।

इसके बाद पादुका के सामने पांच **"निखिलेश्वरानन्द श्रीफल "** रख दें, उसमें केसर,कुंकुंम की बिन्दी लगा दें जो साधक के सुख और सौभाग्य का प्रतीक है, बिन्दी लगाते समय निम्न सन्दर्भ का उच्चारण करें -

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः , ॐ पं परम गुरुभ्यो नमः
ॐ पं परात्पर गुरुभ्यो नमः, ॐ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः

विनियोग :-

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें। ॐ अस्य श्री पादुका मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्री छन्दः श्री गुरु देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः इसे बोल कर दाहिने हाथ के जल को भूमि पर छोड़ दें।

पादुका में **प्राण प्रतिष्ठा** के लिए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वरूप निरुपणहेतवे श्री गुरुवे नमः

फिर गुरु ध्यान करें :-

महा-रोगे महोत्पाते महा-देवि महा-मये। महा-पदि महा-पापे स्मृता रक्षति पादुका ।।
तेनाधीन स्मृतं ज्ञानं दुष्टं या च व पूजितं। जिह्वायां वसते यस्य श्री परा-पादुका-स्मृति ।।
भोग भोगार्थिना ब्रह्म. वैष्णवी -पद कांक्षिणाम्। भक्तिरेव गुरौ देवि "नान्य पंथा " इति श्रुतिः।

परम गुरु ध्यान :-

गुरु भक्ति - विहीनस्य तपो विद्या कुलं व्रतम्। सर्वं नश्यन्ति तत्रैव भूषणं लोक रंजनम ।।

परमेष्ठि गुरु ध्यान :-

गुरुः पिता गुरुर्माता गुरुर्देवो गुरुर्गति। शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।।
इसके बाद खड़ाऊं पर पुष्प समर्पित करते हुए निम्न उच्चारण करें :-

१ ॐ गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि
२ ॐ परम गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि
३ ॐ परात्पर गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि
४ ॐ परमेष्ठि गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि

इसके बाद पंचोपचार या षोडषोपचार से गुरु पादुकाओं का पूजन करें- पूजन के बाद निम्न मंत्र का **स्फटिक माला** से ४ माला ज़प करे-

।। स ह फ्रें ह स क्ष म ल व र यू म् ।।

जप समाप्ति के बाद आरती और पुष्पांजलि एवं क्षमा प्रार्थना तथा स्तुति पाठ के साथ पादुका पूजन सम्पूर्ण करें ।

शिष्य तो तन मन धन न्यौछावर कर सब कुछ पा जाता है - भोग और मोक्ष दोनों ...

म्हाने चाकर राखो जी

गुरोः कृपाप्रसादेन ब्रह्माविष्णुशिवादयः।
समर्थाः प्रभवादौ च केवलं गुरुसेवयाः।।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवगण भी गुरु कृपा एवं उनकी सेवा से ही सृष्टि संरचना, पालन एवं संहार कार्य में समर्थ हो पाते हैं।

विस्तृत आकाश मण्डल में विचरता हुआ मेघ चाहता है कि अनुकूल वातावरण मिलें तो बरसूं तथा इस जल से समस्त जीव जन्तु एवं पेड़ पौधे हरे भरे होकर आनन्द से भर जायें ,ज्यों ही उस मेघ राशि को अनुकूल वातावरण मिलता है वह जहां कहीं भी बरस जाता है धरती सस्य श्यामल होकर जन जन को उपकृत करती है। गुरु एक शक्ति पुंज है, ज्ञानधन,तेजपुंज एवं आनन्द का झोंका है,गुरु का अवतरण संसार में विश्व कल्याण के लिए ही होता है, शिष्यों को पूर्णता देने के लिए ही आते हैं, यहां उनका व्यक्तिगत कोई स्वार्थ ही नहीं होता, क्योंकि गुरु कर्म बन्धन से रहित है, इसलिए सभी दुश्चिन्ताओं , सभी द्विविधाओं से रहित है। शिष्य की पुण्य राशि ही गुरु के रूप में अवतरित होकर शिष्यों का कल्याण करती है। गुरु सदैव उस अनुकूल एवं सुपात्र शिष्य की खोज करता है, जिसके द्वारा अपने ज्ञान को विश्व में फैला सके, ज्योंही कोई सुपात्र एवं योग्य शिष्य मिलता है, त्योंही अपने सभी ज्ञान अपनी सारी सिद्धियां उस शिष्य के अन्दर स्थापित कर देता है, क्योंकि गुरु तो संसार में केवल बरसने के लिए ही आता है, देने के लिए ही आता है। इस प्रकार कोई सौभाग्यशाली शिष्य गुरु के उस पावन ज्ञान से आप्लावित होकर समस्त विश्व को पावन बना देता है।

इस उदात्त स्थिति तक पहुंचने के लिए, गुरु के उस पवित्र ज्ञान को अपने अन्दर उतारने के लिए गुरु की सेवा के मार्ग से गुजरना पड़ता है, क्योंकि गुरु को प्रसन्न करने के लिए और कोई राह शेष नहीं है, किसी भी तपस्या, साधना या किसी भी अन्य क्रियाओं से गुरु प्रसन्न हो ही नहीं सकते क्योंकि गुरु बहुआयामी होते हैं, उनका कार्य क्षेत्र बहुत ही विस्तृत होता है, किसी एक ही उद्देश्य को लेकर गुरु संसार में नहीं आते, यहां आने के अनेक कारण होते हैं और गुरु का वह विस्तृत कार्य शिष्यों के द्वारा ही पूरा होता है , क्योंकि गुरु को हजारों हाथ वाले हजारों आंख वाले, और हजारों मुख वाले कहा गया है। शिष्य ही गुरु के हाथ,पाव, मुंह आदि होते हैं, ऐसी स्थिति में गुरु की सेवा ही पवित्र तपस्या है,साधना है।

शिष्य गुरु के चाहे दूर हो या निकट सेवा में हो कोई फर्क नहीं पड़ता ।आप यदि दूर हैं और सोचते हैं कि पास में रहने वाला शिष्य अधिक भाग्यशाली है मैं उससे हीन हूं, ऐसा सोचना आपका भ्रम हैं। यदि सभी शिष्य गुरु के पास ही रहना चाहेंगें तो सुदूर फैले हुए उनके विभिन्न कार्यों को कौन पूरा करेगा। यदि कोई शिष्य गुरु के छोटे छोटे कार्यों को पूरा करता है जैसे झाडू लगाना , जल भरना, बाग बगीचे की सेवा करना आदि। आफिस में या गुरु के विशेष जगह में कार्य करने वाले शिष्य सेअपने को कभी

गुरुदेव
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

जन्मान्तरणां बहुदोषजातं, इहाधिकं तव मायापरीतः।
द्वा भ्यां च संपीडित दत्तचेतः,कथं च जाने निखिलंस्वरूपम्।।

हे गुरुदेव! जन्म- जन्मान्तरों के पाप राशि से मेरा मन मलिन है। इस जन्म में आपकी प्रबल माया ने घेर रखा है, इन दोनों से पीड़ित चित्त में,आपके उस पावन निखिल स्वरूप को कैसे जान पाऊंगा . . .

भी छोटा नहीं समझना चाहिए, गुरु की हजारों आंखें है, आपके हर कार्य को सूक्ष्मता के साथ देखते हैं, हर शिष्य को पहचानते हैं प्रत्येक की निश्छलता और पावनता पर प्रसन्न होकर ही उनके अन्दर समाहित होते हैं और चेतना देते हैं। गुरु शरीर रूप में एक ही स्थान पर स्थित हैं पर उनका सूक्ष्म रूप, निराकार रूप सर्वत्र विद्यमान् है, इसी रूप में वे शिष्य को चाहे कितनी ही दूर सेवा रत हों अपनी ज्ञान गरिमा से चेतना देते ही हैं। जब भी आपका हृदय गुरु सेवा से पवित्र होगा, इसे आप अनुभव करने लगेंगे कि गुरुदेव सूक्ष्म रूप से मेरे पास सदैव विराजमान हैं। यदि शीशा ढका हुआ है, या मैला है अथवा हिल रहा हो तो उसमें चेहरा स्पष्ट दिखाई नहीं देता, जब तक शिष्य के मन में मल विक्षेप और आवरण है, तब तक गुरु का प्रतिबिम्ब, गुरु का ज्ञान, गुरु की शक्ति उसमें प्रतिभाषित ही नहीं होगी। मल का अर्थ है, जीवों की अनेक जन्मों की एकत्रित पाप राशि, उसके कारण वह जीव गुरु की शक्ति को पहचान ही नहीं सकता

विक्षेप का अर्थ है, चंचल मन। मन यदि चंचल है इधर उधर सांसारिक विषयों में भटकता है तो भी गुरु के रहस्य के विषय में संशयशील रहता है ।आवरण का अर्थ है, गुरु के सच्चिदानन्द स्वरूप को न देख पाना अज्ञान या भ्रम वश गुरु को साधारण मानव समझ कर निम्न व्यवहार करना। इन्हीं तीनों दोषों को दूर करने के लिए गुरु की सेवा शिष्य के लिए अति आवश्यक है जब तक गुरु सेवा से शिष्य का मन इन तीनों दोषों से निर्मूल नहीं होगा तब तक गुरु के उस अद्वितीय दिव्यतम रूप को शिष्य पहचान ही नहीं पायेगा, कई बार बहुत दिनों तक शिष्य गुरु के समीप रहकर सेवारत रहते हुए भी कोरे निकल आते हैं, बाद में गुरु में ही कोई न कोई दोष दर्शन करते हुए निन्दा करने लग जाता है किन्तु यह शिष्य की अज्ञानता है, गुरु तो सदैव पूर्ण पुरुष है उसमें किन्चित भी न्यूनता नहीं है। यदि सेवारत शिष्य में थोड़ा भी अहंकार का पुट है, गर्व शेष है कि मैं गुरु की बहुत सेवा कर रहा हूं, या उनका कार्य मेरे द्वारा ही संपन्न हो रहा है अथवा गुरु का अन्य शिष्यों की अपेक्षा मैं बहुत प्रिय पात्र हूं, अन्यों से भिन्न हूं, बड़ा हूं, यह शिष्य की भूल है, जब तक शिष्य के मन में भी अहंकार का कण विद्यमान है गुरु उसमें समाहित हो ही नहीं सकता। गुरु तो अति पावन तत्व है, उसे पाने के लिए पावन बनना ही पड़ता है। गुरु को पाने के लिए सरलता और पावनता विशेष सूत्र है।

गुरु की शक्ति को पाने के लिए योग्य और सुपात्र तो केवल गुरु सेवा से ही बन सकता है, जैसा कि मैंने पहले बताया कि गुरु बहुआयामी है उनके छोटे बड़े कार्य सर्वत्र फैले हुए होते हैं, वे उसे शिष्यों के द्वारा ही पूरा करते हैं यदि गुरु अपने छोटे कार्यों में स्वयं उलझे रहेंगें तो उनका महत्व-पूर्ण समय जो शिष्यों को उच्चस्थिति में पहुंचाने के लिए लगता है इन्हीं कार्यों में बीत जायेगा जो महान कार्य वे करना चाहते हैं वे नही कर पा येंगें जो कुछ वे संसार को देना चाहतें हैं, वे कैसे दे पायेंगें, इसलिए ऐसी दशा में शिष्य का परम कर्तव्य होता है कि गुरु की रहस्य पूर्ण स्थिति को समझते हुए उनके हर छोटे बड़े कार्यों को अपने ऊपर लेते हुए उन्हें पूर्ण निर्मुक्त कर देना चाहिए ।यह शिष्य का परम सौभाग्य होता है कि किसी भी कार्य के लिए गुरु किसी शिष्य को नियुक्त करे, यदि किसी कार्य के लिए गुरु किसी शिष्य को स्थापित करते हैं तो यह उस शिष्य का परम सौभाग्य होता है । उसे निश्चित रूप से समझ लेना चाहिये कि जिस कार्य में उसको स्थापित किया हैं उसी कार्य के द्वारा उसका कल्याण संभव है, इसलिए यथा संभव उस शिष्य का कर्तव्य होता है कि गुरु द्वारा निर्देशित उस कार्य को अवश्य पूर्णता दे, यह कभी नहीं सोचना कि उस कार्य में मैं ही योग्यतम हूं अन्यों से भी उस कार्य को गुरु पूरा करवा सकतें हैं, यह तुम्हारा या उस शिष्य का सौभाग्य है कि उस सेवा में गुरु ने उसे अवसर दिया। ऋषि काल में गुरु के ज्ञान को ग्रहण करने केलिए सेवा की ही अनुकूल परम्परा रही है, इसीलिए बालक को गुरु गृह में या गुरु आश्रम में रखा जाता था, और जब तक शिष्य सेवा के द्वारा पवित्र और विनम्र न हो जाय तब तक उसे वहीं रहना पड़ता था, उस ज्ञान को ग्रहण करने की योग्यता आने पर ही गुरु उसे पूर्ण बनाकर पुनः उसे घर में सामाजिक कार्य करने के लिए, विश्व कल्याण के लिए , भेज देते थे, इसीलिए उस काल में ऋषियों की बहुतायत थी, आज हम उस सेवा के रहस्य को भूल गये गुरु के ज्ञान को ग्रहण करने की मुख्य सूत्र को हीन समझने लगे, शिष्य की इस मर्यादा को हम भूल ही गये कि गुरु की सेवा कैसे करनी चाहिए, इसीलिए उस दिव्यतम गुरु ज्ञान से वंचित हो गये, आज हमारे पास कोई ऋषि नहीं है।

(शेष पृष्ठ ५७पर)

पराम्बा शक्ति

जो

दिलाती है

सभी प्रकार के श्राप, दोष पाप व कीलन से मुक्ति

और इसी से तो साधक

पूर्णत्व प्राप्त कर पाता है।

या देवी सर्वभूतेषु क्षमा रूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।

क्या आपका जीवन किसी के श्राप से दूषित है या बंध गया है? यदि आपको साधना या अनुष्ठान करने पर लाभ नहीं मिलता है तो अवश्य ही आप बाधित हैं। रक्षा कवच धारण कीजिये इस साधना से. . .

श्राप, दोष से मुक्ति केवल भगवती पराम्बा शक्ति दुर्गा के विशेष साधना से ही संभव है। नीचे मैं एक विशिष्ट प्रयोग दे रहा हूं जिसे संपन्न कराकर मैंने कई व्यक्तियों को उनके जीवन में श्राप दोष से मुक्ति दिलाई है, और ऐसे व्यक्तियों ने जो मंत्र साधना की है उसमें भी उन्हें पूर्ण सफलता मिली है।

अष्टादश शक्ति साधना प्रयोग

इस साधना में साधक **"अष्टादश दुर्गा शक्ति यंत्र"** और अष्टादश शक्तियों का ध्यान करते हुए सात दिन तक लगातार अनुष्ठान करें तो उसके जीवन में आये हुए श्राप से उसे मुक्ति मिलती है।

यह प्रयोग रात्रि में ही करना चाहिए । अर्द्धरात्रि में जब किसी प्रकार का कोई विघ्न नहीं हो तो साधक को अपने सामने **"अष्टादश दुर्गा शक्ति यंत्र "** स्थापित कर उसके सामने दुर्गा मंत्र का जप कर विधिवत् पूजन कर निम्न १८ मंत्रो के जिसमें प्रत्येक मंत्र का सात बार उच्चारण करना है, सम्पन्न करें।

सबसे पहले यंत्र पूजन कर सात बार शापोद्धार मंत्र जप करें फिर अष्टादश शक्ति मंत्रों का जप करें, तत्पश्चात पुनः सात बार शापोद्धार मंत्र का जप करें। इस प्रयोग में साधक को इन अष्टादश शक्तियों के स्वरूप अठारह हकीक दुर्गा यंत्र के चारों ओर एक के बाद एक रखने चाहिये।

इस साधना में भगवती दुर्गा के तीव्रतम अठारह स्वरूपों का बीज मंत्र सहित जप संपन्न करना है-

शापोद्धारमंत्र :-

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रां चण्डिका देव्यै शाप नाशानुग्रह कुरू कुरू स्वाहा ।। (सात बार जप करें)

अष्टादश शक्ति मंत्र -

१. ॐ ह्रीं श्रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै
ब्रह्मावशिष्ट विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव।

२. ॐ श्रीं बुद्धि स्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्य नाशिन् यै
ब्रह्मावशिष्ट विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव।

३. ॐ रं रक्त स्वरूपिण्यै महिषासुर मर्दिन्यै
ब्रह्मावशिष्ट विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव।

४. ॐ क्षुं क्षुधा स्वरूपिण्यै देवन्दितायै
ब्रह्मावशिष्ट विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव।

५ ॐ छां छाया स्वरूपिण्यै दूत संवादिन्यै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव।

६ ॐ शं शक्ति स्वरूपिण्यै धुम्रलोचन घातिन्यै,
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

७ ॐ तृं तृषा -स्वरूपिण्यै चण्ड मुण्ड वध कारिण्यै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

८ ॐ क्षां क्षान्ति स्वरूपिण्यै रक्तबीज वध कारिण्यै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

९ ॐ जां जाति स्वरूपिण्यै निशुम्भ वध कारिण्यै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

१० ॐ लं लज्जा स्वरूपिण्यै शुम्भ वध कारिण्यै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

११ ॐ शं शान्ति स्वरूपिण्यै देव स्तुत्यै,
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

१२ ॐ श्रं श्रद्धा स्वरूपिण्यै सकल फल दायिन्यै,
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

१३ ॐ क्रां कान्ति स्वरूपण्यि राज्य वर प्रदायै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

१४ ॐ मां मातृ स्वरूपिण्यै अनर्गल कहिंमसहितायै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

१५ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सर्वैश्वर्य कारिण्यै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

१६ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्य कवच स्वरूपिण्यै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

१७ ॐ क्रां काल्यै ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

१८ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती,
स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादिव्यै नमः।
ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र शापेभ्यः विमुक्ता भव ।

इन प्रत्येक १८ मंत्रों का जप इसी क्रम में करना है, और प्रत्येक मंत्र जप के पश्चात् सात बार शापोद्धार मंत्र का जप करना है, यह शक्ति प्रयोग अत्यन्त तीव्र एवं प्रभावकारी प्रयोग है, इन १८ शक्तियों का जब आह्वान किया जाता है तब शरीर तथा मन से श्राप एवं दोष का निराकरण होता है। उस समय एक ज्वलन शक्ति सी उठती है, कुछ विचित्र भाव से होने लगते हैं साधक अपने आपको शांत रखते हुए यह प्रयोग संपन्न करें हकीक पत्थर व माला को नदी या तालाव में विसर्जित कर दें। ◆

चतुरा लक्ष्मी बीज मंत्र

यूं तो भारतीय शास्त्रों में लक्ष्मी से संवंधित सैकड़ों प्रयोग मिलते हैं, लेकिन ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि किसी साधना से पूर्व उसके प्रस्फुटीकरण की साधना होनी परम आवश्यक होती है। यदि आप किसी साधना का अंकुरण ही नहीं करेंगे तो अपनी साधना रूपी जल से विकास किस वृक्ष का करेंगे? चतुरा लक्ष्मी प्रयोग एक ऐसा ही दुर्लभ प्रयोग है, जिसके विषय में सभी विद्वान एक मत हैं कि यह वास्तव में ही एक ऐसा अचरज भरा प्रयोग है जिसके द्वारा लक्ष्मी प्राप्ति की प्रारम्भिक स्थितियां निर्मित होती ही हैं। स्पष्ट शब्दों में कहा जाय तो घोर दरिद्र व्यक्ति भी जिसके प्रारब्ध में ही दरिद्र योग लिखा हो वह भी प्रयोग को संपन्न कर अपने जीवन को नया मोड़ दे सकता है।

चतुरा लक्ष्मी बीज मंत्र प्रयोग :-

यह प्रयोग मात्र १५ दिन का है। इसमें नित्य प्रातः साधक को स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर बैठ कर पूर्व की ओर मुंह कर के **कमल गट्टे की माला** से २१ माला मंत्र जप करना चाहिए।

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिस समय पहले दिन मंत्र जप प्रारम्भ हो, नित्य मंत्र उसी समय प्रारम्भ होना चाहिए। मंत्र जप प्रारम्भ करने का समय वदलना नहीं चाहिए। चतुरा लक्ष्मी यंत्र के सामने निम्न मंत्र जप करना चाहिए

मंत्र

"ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं"

यह अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और ये चारों बीजाक्षर लक्ष्मी के चार बीज मंत्र हैं, इसलिए इनका संयुक्त जप अपने आप में अत्यन्त महत्व पूर्ण माना गया है। अनुष्ठान पूर्ण होने के वाद यंत्र को अपनी तिजोरी में रखें और कमल गट्टे की माला को पहन लें। प्रयोग पूर्ण होने के बाद आर्थिक अनुकूलता प्रारम्भ होती है और घर में किसी प्रकार का अभाव नहीं रह जाता है। ◆

चौरासी लाख योनियों से छुटकारा मिल सकता है देहत्व साधना द्वारा

'देहत्व साधना' यानि कि इस देह तत्व से मुक्ति ! यह मुक्ति पर्याय नहीं मृत्यु की। मुक्ति इससे जुड़ी व्याधियों से, इससे जुड़े तनावों से और मुक्ति इससे जुड़े अनेक द्वंद्वों से . . .

जीवन की एक अनूठी साधना, एक नवीन प्रस्तुतीकरण साधना पक्ष को समझने का और आधार बना लेना प्रत्येक साधना में सफलता का, जीवन को सम्पूर्णता की ओर अग्रसर करने का . . .

इस आशा तृष्णा, विषाद, हर्ष,उल्लास के तानों - बानों में बुने मानव जीवन में कोई बिरला ही एक क्षण रुक कर सोच पाता है कि यह यात्रा क्यों और कहां के लिए ? यद्यपि यह कोई नवीन जिज्ञासा नहीं है। जब से मानव जीवन का इतिहास मिलता है, तभी से इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि मानव ने अपने अस्तित्व के विषय में चिन्तन किया है। उसे मोह था अपनी स्वयं की देह से, अपने परिवार के प्रियजनों से और कठिन परिश्रम कर एकत्र की हुई विविध वस्तुओं से। आज भी तो मानव एकाएक सोच कर धक् से रह जाता है, कि अरे! उसका यह सब जो उसे प्रिय है एक दिन यहीं रह जायेगा, उससे छूट जायेगा। वह यह मानने को तैयार नहीं हो पाता कि वह एक दिन इस चिरपरिवेश से अलग हो जायेगा। कहीं किसी में ललक होती है इस जीवन के रहस्यों को समझने की और कहीं संस्कार वश व्यक्ति में सहज प्रेरणा होती है कि वह अपने से भी विराट् किसी अक्षय तत्व की प्राप्ति की यात्रा में संलग्न होता है। भावना जिसकी जो भी हो उपाय एक ही होता है कि व्यक्ति अपने 'स्व' को पहिचान ले, और उसमें विसर्जित हो जाय, यह विषय जटिल और दुरूह है । इसकी व्याख्या प्रायः दो चार पन्नों में तो सीमित ही नहीं। मानव क्या है, किसका अंश है, क्यों वह अलग हुआ, कैसे वह पुनः विसर्जित हो - यह विषय बुद्धि गम्य न होकर बोधिगम्य हैं। जिस भाव भूमि पर व्यक्ति इन विषयों को समझ सकता है और आत्मसात कर सकता है, वह पन्नों पर तो उतारा ही नहीं जा सकता, और इसी से इस विषय में सभी सन्त जन सांकेतिक भाषा में मेंअपनी बात कह सके। बुद्धि तो एक अनिश्चित अर्थ वाला शब्द है। क्या आप की बुद्धि का स्तर एक ही है? फिर बुद्धि से हमारा क्या तात्पर्य?

इस लेख में हमारा विवेच्य विषय यह नहीं है, अपितु यह है कि क्या मनुष्य इस जन्म - मरण के द्वन्द्व से मुक्त होकर एक ऐसी स्थिति में अवस्थित हो सकता है जो सर्वथा आनन्द व शान्ति की स्थिति हो। आनन्द व शान्ति की स्थिति तथा मोक्ष की भाव भूमि यह सब मरणोपरान्त की दशायें नहीं है भगवान बुद्ध ने जीवन के अत्यन्त प्रारम्भ में निर्वाण की दशा प्राप्त कर ली थी और वे वर्षों बाद भी जीवित रहे। मोक्ष का तात्पर्य सन्यास या सामान्य जीवन का त्याग भी नहीं, सभी स्थितियों में संलग्न रहते हुये निर्लिप्त और आनन्द युक्त रहना ही वास्तविक मोक्ष है, और मोक्ष की यह स्थिति व्यक्ति को तभी उपलब्ध हो सकती है जब वह अपने जन्म का रहस्य समझ ले, अपनी मृत्यु का रहस्य समझ ले। तब तो वह आनन्द पूर्वक जीवन के इस नाटक तुल्य वातावरण में दिन व्यतीत कर सकता है। मोक्ष का तात्पर्य अथवा प्रस्तुत लेख में जिस विषय की चर्चा की जा रही है, उससे भी हमारा यही तात्पर्य है, यही तो स्पष्ट करने का प्रयास है कि चौरासी लाख योनियों से छुटकारे का अर्थ मृत्यु या उड़कर कहीं आकाश में स्थित किसी काल्पनिक स्वर्ग में जाने से नहीं है, हमारे शास्त्रों में रूपक की शैली इतनी प्रचुरता से प्रयुक्त हुई कि हम उन्हीं को सत्य मानकर उनके शब्द जाल में खो गये। चौरासी लाख योनियां भी रूपक की ही शैली का ही एक प्रस्तुतीकरण है। इसका साधारण सा अर्थ है जीवन के बहुविध भटकाव, बहुविध द्वन्द्व व उहापोहों से निकल कर इसी जन्म में इस लक्ष्य की ओर प्रवत्त होना कि हम क्या करें जो इस जगत के द्वन्द्वों में न उलझें, उनमें भटक -भटक कर पीड़ा न पायें, व्यर्थ के मोह,और तनाव न पा लें। ऐसा कदापि नहीं होता एक व्यक्ति मर कर कुत्ता बनें या बिल्ली बने या अन्य किसी कीट पतंग में परिवर्तित हो। उसका

जीवन श्वानवत् पशुवत्, हो सकता है इसी जन्म में मानव बन सके और *प्रत्येक जन्म में मानव ही बन सके, ऐसे जीवनों का आधार होती है* **"देहत्व साधना"**। मानव बनने का अर्थ है जीवन कला, साहित्य, संस्कृति से परिपूर्ण आनन्द युक्त हों। उसमें पशुवत जीवन जीने और पशुवत् ढंग से आनन्द लेने की प्रवृत्तियां न हो।

सामान्य व्यक्ति अपने देह तत्व में ही जीवित रहता है और उसी में मर जाता है। और देह से परे प्राणों में भी जीवित रहा जा सकता है, इसका उसे बोध ही नहीं हो पाता। जीवन का श्रेष्ठतम आनन्द देह से ऊपर उठकर प्राणों में जीवित रहने में है जो अपनी देह से परे प्राणों में जाकर स्थापित हो जाते हैं उनके लिये तो फिर संसार में कुछ भी अगोचर अप्राप्त या दुखद नहीं रह जाता। जैसा कि **स्वामी विवेकानन्द जी** ने कहा कि एक योगी के समक्ष तो भूत भविष्य और वर्तमान तीनों एक ही क्षण में आकर उपस्थित हो जाते हैं जिन्हें वह पुस्तक के पन्ने की भांति पढ़ लेता है। ऐसे श्रेष्ठ योगी के लिए फिर जीवन में क्या दुखद रह सकता है और क्या उसे बांध सकता है? इस काल रूपी लहरों पर आनन्द से विचरण करती हुई नौका सदृश्य जीवन जैसा व्यक्तित्व होता है उसका।

'देहत्व साधना' व्यक्ति के 'स्व' की प्राणों में विस्तार की साधना है हमारे जीवन में प्रत्येक साधना का आधार यह देह ही होती है, जिसको साध कर हम कहीं भी स्थापित हो सकते हैं और कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं। यह अवश्य है कि देह से ऊपर प्राण और प्राण से ऊपर आत्मा की स्थिति है लेकिन इन स्थितियों तक उछाल देह पर खड़े होकर दिया जा सकता है, देहत्व साधना एक ऐसी ही विशिष्ट साधना है।

गुरु कृपा, गुरु सेवा और सम्पूर्ण त्याग से तुम्हारी चौरासी लाख योनियों का मात्र चार योनियों में परिवर्तन हो सकता है, और फिर पूर्ण गुरु सेवा से इसी जीवन में पूर्णता प्राप्त हो जाती है।

देहत्व साधना तो जीवन की एक ऐसी अनूठी साधना है जिसमें मंत्र जप, अनुष्ठान कुछ करना ही नहीं है। घी का दीपक या अगरबत्ती भी नहीं लगाना। आवश्यकता तो केवल इतनी होती है कि साधक एक छोटी वीणा की भांति बैठ जाय- बड़ी वीणा के पास, जो अनहद नाद से सदैव ध्वनित है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि पास बैठ जाना ही पर्याप्त है। पर्याप्त तो तब होगा जब छोटी वीणा के तार भी कसे हों, वह बजने को राजी हो अन्यथा उस देव वीणा से आते हुये संकेत टकरा कर लौट ही जायेंगे और होता भी यही है। वर्षों तक साथ रहे साधक, साधिकायें इसी से कुछ नहीं प्राप्त कर पाते। क्योंकि उनके तार ढीले जो पड़े रहते हैं। यह तो पूर्णाहुति की साधना है। वे जो एक विराट पथ पर चल पड़े उनके सौभाग्य की साधना है जिन्होंने जीवन का एक - एक क्षण बांध कर अपने तार कस लिये हों उनके जीवन की साधना है।

क्या हैं चौरासी लाख योनियाँ, क्या है किंवदन्तियाँ और क्या है वास्तविकता। क्या मनुष्य मरकर पशु बन जाता है, कीट पतंग बन जाता है या उसका पुनर्जन्म मानव योनि में ही होता है? जीवन चक्र के उस पार क्या है रहस्यमय संसार, इस संसार में आवागमन कैसे करें?

'गुरु सेवा' अपने शाब्दिक अर्थों में लिया जाने वाला शब्द नहीं, गुरु सेवा का तात्पर्य है उनकी इच्छाओं को समझना, उनके आदेशों को यथावत् मानना। जो गुरुदेव कहे वह करना वह नहीं जो गुरुदेव स्वयं करें . . .

इस जीवन में अप्राप्य कुछ है ही नहीं, यदि आपको सद्गुरु प्राप्त हो जाय तो। उनके समीप का प्रत्येक क्षण, प्रत्येक धड़कन सकारात्मक ही होती है। नकारात्मक तो वहां कुछ होता ही नहीं, नकारात्मक तो होता है हमारा अहं, हमारा 'स्वामी भाव' और हमारा स्वयं का बोध रखते हुये अपनी बातें मनवाने का अहं भाव। **दुख होता है तब जब हम गुरु की उपस्थिति को सार्थक नहीं बना पाते। उनके साथ प्रत्येक क्षण जीने की कला नहीं सीख पाते।** और इसी नकारात्मक भाव के निषेध की है यह साधना। इस साधना में जमीन के पग-पग पर साधना है, एक-एक पल का हिसाब रखना है। गुरु कृपा तो सदैव ही बरसती रहती है उसमें भीगने की तैयारी है। अपने को भिगोने के लिए तैयार करना है। यदि आप अपने अहं के पोखरे में स्नान करके ही तृप्त हों, तो तृप्त रहें।

'गुरु सेवा' का अर्थ निठल्लों की भीड़ नहीं, राजनीति या गुटबंदी नहीं केवल आश्रम की गतिविधियां नहीं और न उसकी शाखाओं का विस्तार! गुरु सेवा का अर्थ है स्व का विकास व विसर्जन। और विसर्जन भी कैसा? ज्यों फूलों से भरी डाली धरा पर लचक जाय। अबआप ही सोचें कि यह साधना क्या आपने सम्पन्न की है? क्या साधना आप करने के लिए तैयार हैं? ◆

मैंने शिक्षित किया है गर्भ स्थित शिशु को भी

माँ का गर्भ उच्चकोटि का ज्ञान शिक्षण केन्द्र होता है, यह तथ्य कल्पनातीत लग सकता है, पर हमारे पुराण साक्षी है कि अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान गर्भ में ही पैदा हुआ था। महर्षि शुकदेव ने समस्त ज्ञान की शिक्षा गर्भ में रहकर ही सीख ली थी, और अष्टावक्र ने चारों वेदों को गर्भ में ही सीख लिया था। यह कपोल कल्पित घटनाएं नहीं हैं, आज भी हम शिशुओं को गर्भ काल में ही वह सब ज्ञान दे सकते हैं, जो बाह्य जीवन में २५ वर्ष की अवस्था तक ग्रहण किये जाते हैं। एक मौलिक और सार गर्भित प्रामाणिक लेख - - माताओं के लिए वरदान स्वरूप . . .

एक शिशु अपनी मां के गर्भ में सर्वथा चैतन्य और पूर्णतायुक्त होता है, एक ऐसा शिशु जिसने अभी जन्म नही लिया है, परन्तु जो ब्रह्म का ही साक्षात् अंश है, जिस पर अभी संसार की काली छाया नहीं पड़ी है। जो अभी स्वार्थ से लिप्त नहीं हुआ है, जो अभी किसी प्रकार के संबंधों से बंधा नहीं है, और ऐसा शिशु जो सब कुछ देखने-समझने औरं सीखने के लिये आतुर हैं।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसारं तीसरे माह के आरम्भ में गर्भ में स्थापित हुए मांस-पिण्ड में गति और हलचल उत्पन्न हो जाती है, ठीक तीन माह २७ दिन पर उस निर्जीव पिण्ड में प्राणों का संचार हो जाता है, उसमें धड़कन और चेतना व्याप्त हो जाती है, लगभग इसी समय वह बालक या बालिका का स्वरूप भी अख्तियार कर लेता है। अब यह भ्रूण एक जागरूक व चैतन्य मानव का रूप ले लेता है।

हमारी यह यात्रा इस समय के आस-पास ही शुरु होती है। शास्त्रों के अनुसार चौथे माह के आरम्भ से आठवें माह तक इन पांच महीनों में बालक अत्यधिक चैतन्य और पूर्ण रूप से संग्राहक बुद्धि को लिए होता है। वह ब्रह्म का ही अंश होता है। इसलिए उसमें ग्रहण करने की अत्यधिक क्षमता होती है। इस अवधि में वह जो कुछ भी सीखता है वह ज्ञान स्थायी और अमिट होता है।

यह प्रकृति का चमत्कार ही है कि २२ वर्ष के युवक में जितनी ग्रहण शीलता और संग्राहक वृत्ति होती है उतनी ही संग्राहक वृत्ति गर्भस्थ शिशु में भी होती है। जन्म के बाद ऐसी शिक्षा प्राप्त बालक जल्दी ही उस शिक्षा में पारंगत हो जाता है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि पहले से ही सशक्त होती है। अतः माता - पिता को पहले से ही निश्चय कर लेना चाहिये कि गर्भस्थ शिशु को किस प्रकार का ज्ञान और शिक्षण देना है।

मेरे एक शिष्य जो कि प्रसिद्ध गणितज्ञ हैं, अपने शिशु को विश्वस्तरीय गणितज्ञ बनाना चाहते थे। पत्नी के गर्भवती होने पर वे दंपत्ति मेरे पास आए और मुझसे याचना की कि मै साधनात्मक विधि से अजन्में शिशु के शिक्षण की व्यवस्था करूं।

उनके अनुरोध की रक्षा करते हुए उनकी पत्नी को सूर्य विधि के द्वारा मंत्र साधना संपन्न कराई। मेरी आज्ञानुसार वह गणितज्ञ महोदय नित्य अपनी पत्नी के पास

बैठकर गणित के समीकरण स्पष्ट करते । ऐसा उन्होंने तीन महीने तक किया।

उचित समय पर बालक उत्पन्न हुआ, और अपनी पांचवी वर्षगांठ पर उसने पिता के समीकरण को गलत सिद्ध करके उसका सही हल भी प्रस्तुत कर दिया । उन्हीं दिनों गणित के अखिल भारतीय सम्मेलन में पांच वर्षीय उस बालक को आमंत्रित किया गया। गणित के गूढ़ रहस्यों को उसने जिस प्रकार स्पष्ट किया उससे सभी विद्वान ठगे से रह गये। जापान की टेलीविजन टीम ने पूरे दृश्य को सेल्युलाइड के पर्दे पर उतारा और सभी विद्वानों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया कि यह बालक भविष्य में विश्व स्तरीय गणितज्ञ बन सकेगा।

इस प्रकार के मैंने लगभग ३०० से भी अधिक परीक्षण किये है, और मैं यह दावे के साथ कहता हूं कि गर्भस्थ शिशु को सिखाना अत्यन्त सुलभ होता है , और उसे जो भी सिखाया जाता है वह सटीक, प्रामाणिक और अमिट होता है।

पर यह कार्य सम्पन्न कैसे हो। इसके लिये एक परम गोपनीय सूर्य साधना का विधान हैं। सर्वप्रथम साधक अपने गुरु को प्रसन्न कर सूर्य सिद्धि प्राप्त करे तभी वह सूर्य साधना के माध्यम से गर्भ स्थित शिशु को चेतना युक्त व संग्राहक युक्त बना सकता है। यह साधना ४६ दिनों की है, जिसे किसी भी महीने की द्वादशी से प्रारम्भ कर सकते हैं।

सूर्य विधि :-

नित्य स्नान कर शुद्ध श्वेत धोती धारणकर श्वेत आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाएं। सामने **मार्तण्ड यंत्र** एवं **मार्तण्ड चित्र** को स्थापित कर दें, जो कि मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो। फिर पंचोपचार विधि से यंत्र एवं चित्र की पूजा करें, अब दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग -

अस्य सूर्य मंत्रस्य भृगु ऋषिः गायत्री छन्दः दिवाकरो देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः गर्भस्थ दृष्य श्रव्य फल सिद्धये जपे विनियोगः ।

अब हाथ जोड़कर सूर्य ध्यान करें :-

ध्यान :-

रक्तांबुज युग्मभय दानहस्तं केयूरहारांगवकुंडजाढ्यम् । माणिक्यमौलिं दिननाथमीढ्ये बंधूक भांति विलसं त्रिनेत्रा।

अब **स्फटिक माला** से निम्न लिखित मंत्र जप करें-

मंत्र :-

ॐ ह्रीं तेजसे गर्भस्थ चैतन्य व्रं ह्रीं ॐ

नित्य ५१ माला मंत्र जप करें और साधना काल में मात्र दूध का ही सेवन करें। पूरे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए भूमि शयन करें और मौन रहने का प्रयास करें।

४६ दिनों तक साधना संपन्न करने के पश्चात् ११ कुमार बालको को दूध से बना भोजन करायें, श्वेत वस्त्र पहनायें व दक्षिणा दें, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है।

प्रयोग करते समय गर्भिणी स्त्री को पवित्र अवस्था में अपने समक्ष बैठाएं अब इसी सूर्य मंत्र से उसके गर्भ का प्रोक्षण करें और शिशु चैतन्य करें। गर्भस्थ शिशु के सामने पांच माला मंत्र जप करने पर वह चैतन्य हो जाता है, और वह शिशु तीन घंटे तक चैतन्य रहता है, उस अवधि में उसे जो भी सिखाया जाय वह मां के द्वारा ग्रहण करता रहता है।

मां को भी अगले तीन महीने तक संयमित रहना है वह नित्य अपने सिर धोकर खुले बालों से सूर्य का पूजन करें और स्फटिक माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। तत्पश्चात् शांत चित्त से पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सफेद आसन पर बैठे तथा जो भी शिक्षण दिया जाय उसे ध्यान पूर्वक सुने। वास्तव में ही हमारा ज्ञान अत्यधिक समृद्धिशाली है। यह दुर्भाग्य का विषय है कि हम उस क्रिया को विस्मृत कर बैठे हैं जिससे गर्भस्थ शिशु को शिक्षण दिया जा सके। ह***में चाहिये कि अपने सद्गुरु के चरणों में बैठकर इस अद्वितीय विद्या को प्राप्त करें और उत्तम कोटि के बालको का निर्माण करें,*** जिससे आगे चलकर वे माता -पिता ,गुरु और देश का नाम उज्जवल कर अतुलनीय यशस्वी हो सके।

(पूज्य गुरुदेव के प्रवचन से साभार)

कार्त्तवीर्यार्जुन प्रयोग

खोये हुए बालक का पता लगाने और वापिस घर बुलाने का आश्चर्यजनक प्रयोग

दुःखनाशं दुष्टनाशं दुरीता
भयनाशकीदिक्ष्वष्ट शक्तयः
पूज्याःप्राच्यादिषुसितप्रभाः।।

यह विशिष्ट प्रयोग समस्त दुःखों का नाश करने वाला, शत्रुओं को समाप्त करने वाला तथा विरोधियों के भय को नाश करने वाला है, सभी दिशाओं में स्थित शक्तियों की साधना कार्त्तवीर्यार्जुन साधना ही है।

कार्त्तवीर्यार्जुन सुदर्शन चक्र का अवतार है। भगवती काली ने उसकी उत्पत्ति के लिए अपना रौद्र रूप प्रदान किया, लक्ष्मी ने प्रतिष्ठा सम्मान और धन - धान्य प्रदान किया, सरस्वती ने सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान की, ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड भेदन का ज्ञान दिया, पृथ्वी ने बिन्दु साधना दी, पवन ने वायु वेग से उड़ने की क्षमता प्रदान की, तारा ने आकस्मिक धन प्राप्ति की शक्ति दी और अन्य समस्त देवताओं ने अपने शरीर की समस्त शक्ति को मिला कर जिस तेज पुंज का निर्माण किया उसे ही **"कार्त्तवीर्यार्जुन"** कहा गया है।

उपनिषदों और तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार जो साधक कार्त्तवीर्यार्जुन साधना को सम्पन्न करता है उसे स्वतः कई साधनायें सिद्ध हो जाती हैं। यह एक ऐसी साधना है जिसे प्रत्येक गृहस्थ को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। अपने जीवन में पूर्ण सुख सौभाग्य के लिए इसके मंत्र का निरन्तर जप करते रहना चाहिए जिससे उसके जीवन की समस्त बाधा दूर हो कर भय मुक्त जीवन प्राप्त हो सके।

यह एक अत्यन्त गोपनीय तांत्रिक साधना है। इस साधना का ज्ञान गुरु अपने विशिष्ट शिष्य को ही प्रदान करता है। इस के बारे में कहीं लिखित रूप से वर्णन नहीं प्राप्त होता है। आदि शंकराचार्य के पूर्व के आचार्यों तथा ऋषियों के द्वारा रचित यह एक विशेष मांत्रिक व तांत्रिक पद्धति है। यह मूल रूप से व्यक्ति की रक्षा करने वाली, विपत्तियों का नाश करने वाली साधना है। **मेरू तंत्र** में उल्लेख है कि -

१. इसके माध्यम से घर से गया हुआ पुत्र वापिस लौट आता है।

२.यदि किसी बच्चे के गले में इस यंत्र को पहना दें तो उस की सभी प्रकार से रक्षा होती है।

३. इस का प्रयोग सम्पन्न करने से उधार दिया धन वापिस प्राप्त हो जाता है।

४.इसके द्वारा चोर का पता लगाया जाता है।

५.रात्रि में विशेष विधि से प्रयोग करने पर जमीन में गड़ा हुआ धन दिखाई देता है।

इस प्रकार इसके अन्य कई प्रयोग हैं। यह मूलरूप से दीप प्रयोग है। प्रत्येक परेशानी के लिए अलग-अलग प्रकार से प्रयोग सम्पन्न करते हैं

खोये हुए बालकका पता लगाने हेतु :-

किसी भी शुक्रवार को दिन या रात में स्नान कर के सफेद वस्त्र धारण करें। दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जायें। पहले से ही **"कार्त्तवीर्यार्जुन यंत्र"** जो कि मेरू तंत्र के अनुसार पंचाम्नाय एवं दशाम्नाय तरीके से.सिद्ध किया हुआ हो, प्राप्त कर लें। इस यंत्र को अपने सामने स्थापित कर के पंचोपचार विधि से पूजन करें। अपने चारों तरफ एक हजार दीपक प्रज्वलित करें। मिट्टी अथवा धातु के दीपक तथा किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग कर सकते

हैं। ध्यान रखें कि दीपक बुझने न पाये। इस कार्य के लिए अपने ही परिवार के किसी सदस्य को नियुक्त कर दें जो बराबर दीपकों में तेल डालता रहे। एक हजार दीप जलाकर बीच में आसन पर बैठ जायें। हाथ जोड़ कर कार्त्तवीर्यार्जुन का ध्यान करें:-

ध्यान -

नमः श्री कार्त्तवीर्याय कीर्तितोयशिखामनु
हैयाधिपतिर्ड्न्तः कवचस्य मनुर्मतः ।।
सहस्त्र बाहवे तु स्यादेवं पंचागमीरितम्
उदग्रबाणांश्चपति दधतं सूर्य सन्निभम्।।
प्रपूरयन्तं वसुधां धनुर्ज्योति स्वनैस्तथा
कार्त्तवीर्या नृपं ध्याये द्ण्ड शोभित कुण्डलम्।।।

गुरुदेव
श्री कैलाश चंद श्रीमाली

यंत्र के नीचे बालक का चित्र तथा नाम लिख कर रखें। संकल्प करें और तीन दिन तक २१ माला जप करें। ऐसा करने पर कुछ ही दिनों में उस बालक या व्यक्ति के बारे में सूचना प्राप्त हो जाती है या वह स्वयं घर लौट आता है।

मंत्र

ॐ क्रें कार्त्तवीर्यार्जुन्यै फट्

यह प्रयोग अत्यन्त सिद्ध और अचूक तांत्रिक प्रयोग है। इसकी साधना प्रत्येक साधक को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। ♦

(पृष्ठ १० का शेष भाग)

वे तो सही अर्थों मे शिव स्वरूप हैं जिनका प्रत्येक शब्द अपनी अर्थवत्ता लिये हुए है जिन्होंने तन्त्र के माध्यम से उन गुप्त रहस्यों कों उजागर किया है जो अभी गोपनीय रहे हैं। वास्तव में ही योगीराज निखिलेश्वरानन्द जी ने इस विद्या को जो पूर्णता दी है वह अपने आप में अन्यतम है, उन्होंने दस महाविद्याओं को तन्त्र के माध्यम से सिद्ध कर यह बता दिया कि यह क्षेत्र अपने आप में प्रामाणिक है। कई बार इन गृहस्थ शिष्यों की उदासीनता और स्वार्थपरता देखकर दुःख होता है जब उन्हें तुच्छ और नगण्य वस्तु मांगते हुए सुनता हूं तो विचार होता है कि ये गृहस्थ कितने भोले और सामान्य व्यक्ति है कि सामने गंगा बह रही है और यह एक चुल्लू भर पानी से ही सन्तुष्ट हो जाना चाहता है इतना होने पर भी योगीश्वर निखिलेश्वरानन्द प्रसन्नचित हैं वे सब कुछ जानते हुए भी अनजान बने रहते हैं असीम सिद्धियां प्राप्त होने पर भी सामान्य मनुष्य की तरह उन बाधाओं का सामना करते हैं अड़चनों और कठिनाइयों से जूझते है और यथा सम्भव सामान्य बने रहते हैं, उनका कहना है " मैं अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक समस्या के निराकरण के लिए साधना और सिद्धियों का सहारा नहीं लूंगा"। सम्पूर्ण सिद्धियों के स्वामी होने पर भी परम पूज्य निखिलेश्वरानन्द जी बाधाओं और परेशानियों से जूझते हुये सफलता प्राप्त करने के आकांक्षी हैं। वस्तुतः उनका गृहस्थ जीवन अत्यधिक सुखी और सफल है गृहस्थ के रूप में अपने आपको पूरी तरह से छुपाये हुए हैं। अपने गुरुदेव की आज्ञा का निर्वाह करते हुए भारतवर्ष की खोई हुई थाती को पुनर्जीवित कर उसे समाज को सौंपा है। आज ज्योतिष अपनी पूर्णता के साथ स्पष्ट है, गृहस्थ शिष्यों के माध्यम से उन्होंने मन्त्रों और साधनाओं को पुनर्जीवित कर भारत वर्ष को पुनः गौरव प्रदान किया है, जो कि वास्तव में ही उसके पास था। आवश्यकता है,ऐसे युग पुरुष को समझने की, उनके चरणों में बैठने की,उनसे सीखने की, ज्ञान और विज्ञान में पारंगत होने की, सफलता और साधनाओं में श्रेष्ठता प्राप्त करने की। हजारों-हजारों वर्षों में कभी -कभी ही ऐसा व्यक्तित्व उत्पन्न होता है, और पूरे युग को एक नवीन दिशा दृष्टि प्रदान करता है।

ऐसे अनिर्वर्चनीय अद्वितीय गृहस्थ योगी परमहंस निखिलेश्वरानन्द जी को शत् - शत् वन्दन। ♦

पूज्य गुरुदेव के जो भीतर है,
वह संसार में नहीं है और
जो संसार में है वह पूज्य गुरुदेव के भीतर नहीं है।

-श्रेष्ठा

रति-प्रिया साधना

वृद्धता को यौवन में बदलिये इस साधना के द्वारा

यौवन तो यौवन ही होता है, समुद्र की उफनती लहर की तरह आता है और गरजता बरसता लौट जाता है जीवन के तट पर यादों की सीपियाँ छोड़ कर . . .

ये लहरें थमे नहीं, लहरों पर लहरें आती ही रहें यह संभव है

रति प्रिया साधना से . . .

वृद्धावस्था जीवन का एक कड़वा सच है। नहीं चाहते हुए भी व्यक्ति इसे ढोने के लिए मजबूर होता है। मानव शरीर के आन्तरिक जैविक चिन्ह की शक्ति में कमी तथा शिथिलता आना वृद्धावस्था के प्रारम्भ होने का संकेत है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

छोटे-छोटे कोषों से मिलकर बना है मानव शरीर। इन कोषों के विभाजन के फलस्वरूप ही मानव शरीर का विकास होता, है कुछ निश्चित क्रम पूरा होने के बाद कोषों का विभाजन रुक जाता है और मानव शरीर की एक विशेष आकृति निर्धारित हो जाती है। इस निर्माण प्रक्रिया के साथ ही साथ विनाश प्रक्रिया भी मानव देह में चलती रहती है। विनाश क्रम में कुछ ऐसे तत्वों का निर्माण हो जाता है जो कोषों के आवरण को भेद कर अन्दर प्रवेश कर जाते हैं और क्रोमोसोम को नष्ट करके अनेक कोषों को समाप्तकर देते हैं।

इन्हीं कारणों से मानव देह की जैविक शक्ति क्षीण होने लगती है और मानव शरीर यौवन से वृद्धता की ओर अग्रसर हो जाता है। जैविक शक्ति में कमी व्यक्ति के अन्दर यौवन काल में भी उत्पन्न हो सकती है,जो व्यक्ति युवावस्था में ही वृद्ध दिखने लगे उस को अपने आप में ग्लानि महसूस होने लगती है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, उस की सबसे बड़ी इच्छा रहती है कि वह पूर्ण यौवन युक्त बना रहे। भले ही वह प्रौढ़ावस्था में कदम रख चुका हो किन्तु अपने आप को ज्यादा से ज्यादा आकर्षक व यौवन युक्त प्रदर्शित करने का प्रयास करता है। बचपन में आनन्द के हिंडोले में झूला हुआ, यौवन के सुगन्ध से सराबोर व्यक्ति ४० वर्ष के बाद जब इस अवस्था में पहुंचता है तो वह जीवन से अवश्य ही थोड़ी निराशा महसूस करने लगता है।

इसके लिए कई उपायों का प्रयोग करते हैं, योग की कक्षाओं में भाग लेते हैं। इसके अलावा कभी किसी समाचार पत्र या पत्रिका में विज्ञापन (यौवन पुनः प्राप्त करें चेहरे की झुर्रियां मिटाये)पढ़ता है तो व्यक्ति उन्हें भी अपनाने में पीछे नहीं रहता । इन सबका परिणाम होता है शरीर में कुछ नयी बीमारियां, चेहरे पर कुछ भद्दे दाग, इन्हें दूर करने के लिए व्यक्ति फिर प्रयासरत होता है। अन्त में हार कर असमय ही बुढ़ापे के चंगुल में फंस जाता हैं।

पहले तो यह समझना आवश्यक है कि "यौवन" शब्द का तात्पर्य क्या है? गुलाब का एक पुष्प कली से पूर्ण पुष्प बनने के बीच का समय, एक ऐसा समय एक ऐसा स्वरूप जिसे बार बार निहारने को जी चाहता है उस पुष्प में होती है ताजगी ,सुगन्ध। ऐसे पुष्प को तो देख कर ही आनन्द आ जाता है। "यौवन" शब्द का यही अर्थ है। यौवन केवल जवानी के आयु से ही सम्बन्धित नहीं है, यह

तो शरीर के भीतर उत्पन्न हुए विविध भावों का शरीर के माध्यम से प्रकटीकरण है यदि यौवन काल को प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति के शरीर में ताजगी नहीं है, रूप माधुर्य प्रेम और आनन्द नहीं है तो ऐसे व्यक्ति का जीवन अपनी लाश को अपने ही कंधों पर ढोने के समान है।

चाहे संस्कृत के काव्य हों अथवा तंत्र के ग्रन्थ, उपनिषद् हो या पुराण प्रत्येक में स्त्री स्वरूप को ''रति'' तथा पुरुष स्वरूप को ''कामदेव'' की शक्ति के रूप में वर्णित किया गया है। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक पुरुष और स्त्री जन्म से ही आकर्षक और सौन्दर्य युक्त हों, लेकिन क्या ऐसा संभव है कि ''रति-प्रिया'' साधना द्वारा कामदेव व रति के समान बना जा सकता है? असम्भव व अप्राप्त को संभव व प्राप्त करना ही **'साधना सिद्ध'** करने का मूल उद्देश्य होता है।

किन कारणों से करें:- रति -प्रिया साधना

१.जब अपने आप से उदास रहने लगें, हर समय सुस्ती छायी रहे, किसी काम को करने में मन न लगे।

२. जब आप चालीस वर्ष में ही सत्तर वर्ष के लगने लगें।

३.जब आप सामने वाले को आकर्षित करने में अपने आप को असमर्थ महसूस करने लगें।

४. जब बिना कारण के जीवन नीरस लगने लगे।

५. जब जीवन का सुखद सम्बन्ध और सौन्दर्य बिखरने लगे।

ऐसी अन्य अनेक परिस्थितियां जहां दवा या योग के द्वारा लाभ नहीं मिलता है तब एक मात्र उपाय रति-प्रिया साधना सम्पन्न करना ही शेष रह जाता है।

रति-प्रिया साधना : कैसे सम्पन्न करें:-

इसके लिए आप **'' रति प्रिया यंत्र''** तथा **'' रति प्रिया माला''** प्राप्त कर लें। इसका विशिष्ट मुहूर्त में सिद्ध व प्राण-प्रतिष्ठित होना आवश्यक है। शुक्रवार को रात्रि में नौ बजे के बाद स्नान करके अपनी इच्छानुसार सुन्दर व आरामदायक वस्त्र पहन लें। साधना कक्ष का वातावरण अगरबत्ती जलाकर सुगन्धयुक्त बना लें। एक चौकी पर गुलाब के फूल की पंखुड़ियों से स्वस्तिक बना कर रति प्रिया यंत्र स्थापित करें। दोनों हाथों में इत्र लगा कर माला पर इत्र मलें और रतिप्रिया यंत्र के चारों तरफ रख दें। हाथ जोड़ कर कामदेव व रति के रूप का ध्यान करें और उनसे आप अपनी इच्छा पूरी करने के लिए प्रार्थना करें। फिर **रति प्रिया माला** से निम्न यंत्र की २१ माला मंत्र जप सम्पन्न करें। ऐसा सात दिन तक करें। प्रत्येक दिन यंत्र के नीचे रखी पंखुड़ियों को बदलते रहें। धीरे धीरे अपने व्यक्तित्व में आने वाले निखार को देखकर आप स्वयं आश्चर्यचकित रह जायेंगे।

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं रति प्रियायै पूर्ण सौन्दर्य देहि देहि फट्

प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र व माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें, या मंदिर में भगवान के आगे समर्पित कर दें। निश्चय ही उसी दिन से सौन्दर्य अपने आप निखरने लगेगा। ♦

श्री घंटाकर्णः धन प्राप्ति मंत्र

भारतीय तंत्र साहित्य में घंटाकर्ण का स्थान विशेष है क्योंकि ये देवताओं के प्रधान सेनापति कार्तिकेय के तृतीय सहायक सेनापति थे,वे अन्य कोई ध्वनि सुनना पसन्द नहीं करते थे, इसके लिये उन्होंने अपने कानों के समीप घंटे लटका लिये थे जिसके फलस्वरूप उनके कानों में कोई भी अनिश्चित शब्द प्रविष्ट नहीं होता था, इसीलिये इनका नाम घंटाकर्ण पड़ा।

यह मंत्र व्यापार वृद्धि और आर्थिक उन्नति के लिये श्रेष्ठतम है इससे संबंधित साधना को किसी भी पूर्णिमा से किया जा सकता है। साधक को सफेद धोती पहननी चाहिए और सफेद धोती ही अपने शरीर पर ओढ़नी चाहिए। आसन किसी भी प्रकार का हो सकता है, उत्तर की तरफ मुंह करके साधना करनी चाहिए। यह साधना मात्र ११ दिन की होती है और नित्य ४० माला जपनी चाहिए। कमल गट्टे की माला ज्यादा उपयुक्त है, अन्यथा अन्य किसी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है। मंत्र जपते समय शुद्ध घी का दीपक जलता रहना चाहिए। यह मंत्र ऋण उतारने में अत्यधिक सहायक और प्रभावकारी है।

मन्त्र जपते समय सामने **'गोमती चक्र'** व **'घंटाकर्ण यंत्र'** रख देना चाहिए और इसके सामने ही मंत्र जाप करना चाहिए। जब ११ दिन पूरे हो जायं तो गोमती चक्र व यन्त्र को अपनी तिजोरी या आलमारी में रख देना चाहिएं इससे जीवन में व्यापार वृद्धि आर्थिक उन्नति अद्भुत ढंग से होती है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मीं पूरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

क्या आप पत्रिका के स्थाई सदस्य हैं

यदि नहीं तो

आप अपने जीवन का सुनहरा भविष्य खो रहे हैं

आप आज ही

पत्रिका शुल्क मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेज कर गौरव शाली वार्षिक सदस्य बन जाइये

इससे

- आपको निश्चित रूप से घर बैठे पत्रिका हर माह प्राप्त होती रहेगी।
- आप हमारी गौरवशाली पत्रिका के वार्षिक सदस्य बन सकेंगे
- समय -समय पर जो उपहार मुफ्त में पत्रिका सदस्यों को प्राप्त होते हैं वे प्राप्त होते रहेंगे।
- इस पत्रिका प्राप्ति के एक माह के भीतर -भीतर पत्रिका सदस्य बनने वालों को

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त

''गुरु सिद्धि महायंत्र''

शुद्ध ताम्र पत्र पर अंकित

२" x २"

मुफ्त

- **आप आज ही हमें मात्र पत्र द्वारा पत्रिका सदस्य बनने की इच्छा लिख कर भेंज दें।**

हम आपको अगले माह से अंक व उपहार १६२ /- रु.की वी.पी. से भेज देंगे आगे भी नियमित रूप से हर माह निष्ठापूर्वक पत्रिका भेजने का वायदा करते हैं

१५०/- रू. पत्रिका शुल्क व १२/- रू. डाक व्यय

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान : हाईकोर्ट कॉलोनी , जोधपुर (राजस्थान), टेलीफोन : ०२९१-३२२०६

परकाया प्रवेश के विषय में मैंने भी हजारों बातें सुनी थी पर इस दुर्लभ प्रक्रिया का दिग्दर्शन मुझे पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी के सानिध्य में ही हुआ। यह घटना रुद्र प्रयाग की है जहां मंदाकिनी और अलकनन्दा का अनुपम संगम स्थल है, यहीं पर गुरुदेव हम सन्यासी शिष्यों को साधना की बारीकियों से अवगत करा रहे थे।

परकाया प्रवेश की चर्चा चलते ही पूज्य गुरुदेव बोले, "भारतीय योगियों " के लिये यह कोई नवीन शब्द नहीं है, प्राचीन काल से ही वे इस प्रक्रिया का उपयोग करते आ रहे हैं, अपने किसी प्रिय को जीवन दान देने के लिए, किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अथवा स्वयं को चिरयौवनमय बनाये रखने के लिए। परकाया प्रवेश का तात्पर्य कुछ विशेष क्रिया से अपने शरीर को मृतवत् बना देना और अपने शरीर स्थित प्राणों को निकाल कर दूसरे मुर्दा शरीर में प्रवेश कराकर उसे जीवित कर देना है।

पर इसके लिये प्राणों पर नियन्त्रण होना अनिवार्य है और सामान्यतः हमारा अपने प्राणों पर कोई नियन्त्रण नहीं होता। मूलभूत अन्तर यही है, क्योंकि परकाया प्रवेश में सिद्धहस्त साधक का अपने प्राणों पर पूर्णतः नियन्त्रण होता है, वह उसे मात्र अपनी इच्छा शक्ति से कहीं पर भी विचरण करने भेज सकता है।

शंकराचार्य ने "परकाया प्रवेश" द्वारा सीखी सन्तानोत्पत्ति क्रिया. . .

आज से कुछ सौ वर्ष पहले शंकराचार्य ने प्रामाणिक रूप से इस प्रयोग को सम्भव कर दिखाया था। राजा की मृत्यु हो जाने पर शंकराचार्य ने अपने प्राणों को देह से अलग कर राजा की मृत देह में प्रवेश ले लिया था, फ़लस्वरूप मृत राजा कुछ ही क्षण बाद जीवित हो गया। राजा के शरीर में रहकर शंकराचार्य ने गृहस्थ जीवन की उन युक्तियों का अनुभव किया जिसके माध्यम से संतान उत्पन्न होती है।

इस प्रकार छः मास तक शंकराचार्य के प्राण राजा की मृत देह में रहकर राज्य कार्य करते रहे, एक निश्चित अवधि बीतने पर उन प्राणों ने राजा की देह को छोड़ दिया और वापस अपनी मूल देह में आ गये, इस प्रकार शंकराचार्य की देह छः महीने बाद वापस जीवित होकर क्रियाशील हो उठी।

अतः यह स्पष्ट है कि यदि इस प्राण तत्व को पकड़

कदाचित आपको विश्वास न हो पर साधनाओं का सागर तो असंख्य मोतियों को समेटे हुए है, हमारी बुद्धि तो वहां तक जा ही नहीं सकती और इसीलिये हम इन गूढ़ विद्याओं को कपोल कल्पित मान लेते हैं।

हालांकि यह विद्या पूर्णतः लुप्त मानी जाती थी परन्तु यह हर्ष का विषय है कि यह विद्या जीवित है और उतनी ही प्रासंगिक है जितनी शंकराचार्य के समय में थी ।

पहली बार इस गोपनीय रहस्य को उजागर कर रहे हैं स्वामी चैतन्यानन्द अपने ज्ञान, चिन्तन और अनुभव के आधार पर. . . .

परकाया प्रवेश आज भी सम्भव है

आप स्वयं अपनी आंखों से देख लीजिए इस साधना के द्वारा

भरोसा नहीं होगा पर यह सच है कि आज भी परकाया प्रवेश उतना ही प्रासंगिक है जितना शंकराचार्य के समय में था। ये साधनायें और सिद्धियां तो हमारे पुरखों की बपौती रही है और हमने प्रयत्न कर इनमें सफलता भी पाई है। आप भी उसी रास्ते पर हैं। पूरी शक्ति के साथ साधना में बैठिये और इस दुर्लभ सिद्धि को हस्तगत् कीजिये।

लें तो उससे मनोवांछित कार्य भी ले सकते हैं। परकाया प्रवेश इसी सिद्धान्त पर आधारित है और यौगिक अथवा मांत्रिक किसी भी विधि से साधक इस प्रक्रिया में निष्णात हो सकता है।

यौगिक प्रक्रिया

परकाया प्रवेश का व्यावहारिक ज्ञान देते हुए गुरुदेव ने कहा, "योगी को प्रारम्भ में अपनी श्वास को नाभि में स्थित कर देना चाहिए, ऐसा करने से वह नाभि पूर्ण शरीर को उष्मा और श्वास-प्रश्वास को संभाले रहेगी।

इसके बाद पूरे शरीर को शवासन में लाकर निश्चल कर देना चाहिए और नाभि में से ही प्राण वायु को निकाल देना चाहिए"।

"जब नाभि के द्वारा प्राण तत्व को बाहर निकालकर उस सामने वाले व्यक्ति या पशु में प्राण तत्व का संचरण किया जाता है तो संचरण भी उसकी नाभि के द्वारा ही होता है। ऐसी स्थिति में भी नाभि के अन्तस्तल में श्वास प्रश्वास स्पन्दन युक्त बना रहता है, जिससे पूरा शरीर उष्मायुक्त रहकर स्वस्थ रहता है, उसमें किसी प्रकार की दुर्गन्ध व्याप्त नहीं होती, इस प्रकार से प्राण तत्व को दूसरे में आरोपित कर अपने शरीर को बिना प्राण तत्व के कई वर्षों तक रखा जा सकता है।"

व्याघ्र जीवित हो उठा

कुछ शिष्यों के आंखों में संशय के भाव देखकर पूज्य गुरुदेव ने इस प्रक्रिया के व्यावाहरिक पक्ष का प्रदर्शन करने का निश्चय किया। एक मृत व्याघ्र का शरीर मंगवाया गया, व्याघ्र अपनी स्वाभाविक मृत्यु से ही मरा था हम सब शिष्य - शिष्यायें उन्हें घेर कर बैठ गये।

गुरुदेव जी ने कहा मैं इस वृक्ष के तले ही लेट जाता हूं और अपने सूक्ष्म श्वास को नाभि स्थल में स्थापित करता हूं। तत्पश्चात् नाभि से ही प्राण तत्व निःसृत कर, इस मरे हुए व्याघ्र के नाभि स्थल में प्राण तत्व को संचारित करूंगा, ऐसा करते ही मेरा यह शरीर लगभग निश्चल हो जायेगा, उसमें किसी प्रकार की कोई हरकत नहीं होगी, पर यह व्याघ्र इसी समय जीवित होकर वैसे ही कार्य सम्पन्न करने लगेगा जैसा सजीव व्याघ्र करता है।

"मैं जब पुनः अपने शरीर में न लौटूं तब तक मेरी हिंसक पशुओं से रक्षा करना। मैं तो मुश्किल से पन्द्रह बीस मिनट के बाद ही लौट आऊंगा"। ऐसा कहकर गुरुदेव लेट गये और मात्र एक या दो मिनट में ही अपने शरीर को शवासन मुद्रा में लाकर नाभि में श्वास का संचरण कर प्राण तत्व को व्याघ्र में प्रवेश कर दिया।

ऐसा होते ही हमने आश्चर्य के साथ देखा कि व्याघ्र अलसाकर उठ खड़ा हुआ उसने अंगड़ाई ली और झुरझुरी लेकर उछलता हुआ घोर जंगल में विलीन हो गया।

इधर गुरुदेव लेटे हुए थे। उनकी नाभि में बहुत ही धीमे -धीमे श्वास नियमित था जिससे उनके जीवित होने का प्रमाण मिलता था।

लगभग बीस - बाईस मिनट बाद हमने उसी व्याघ्र को जंगल में से दौड़ कर आते हुए देखा और वह उसी स्थान पर आकर लेट गया जहां पहले से मृत पड़ा था, दूसरे ही क्षण गुरुदेव उठ खड़े हुए, हमने व्याघ्र के पास जाकर देखा तो वह पूर्णतः मृत था। वस्तुतः पूज्य गुरुदेव द्वारा आज परकाया प्रवेश की क्रिया देखकर हम सभी रोमांचित और आह्लादित थे।

मांत्रिक प्रक्रिया

सद्गुरु की अनुमति प्राप्त कर साधक किसी भी पुष्य नक्षत्र से यह साधना प्रारम्भ कर सकता है। सर्वप्रथम स्नान करके वह अपने सामने "**परकाया प्रवेश सिद्धि यंत्र**" स्थापित कर दे। इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार की सामग्री, चित्र आदि की आवश्यकता नहीं होती।

विनियोग :-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सत्ये,हं शवले, हस्ख्फ्रें खर्वे,क्लीं रामे, हस्ख्फ्रें महा परिवृत्तो शून्यं परकाया सिद्धि नारद ऋषिः गायत्री छन्दः श्री गुरु देवता, गुं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं परकाया प्रवेश सिद्धि प्रीत्यर्थ मन्त्र जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक मानस पूजन सम्पन्न कर निम्न लिखित मंत्र का जप प्रारम्भ करें।

मूल मंत्र

ॐ परात्परायै, विनिर्मुक्तायै परकायै ह्रीं कुलैश्वर्यै फट्।

यह मंत्र मात्र पांच लाख उस यंत्र के सामने जपना होता है और मंत्र जाप समाप्ति के बाद जब सिद्धि प्राप्त हो जाती है, तो योग सिद्ध शवासन लगाकर परकाया प्रवेश किया जा सकता है। ◆

हुक्म पर उनके जान देती हूं मैं,
नहीं जानती ,भला क्या है,बुरा क्याहै।

- नूपुर

यदि

कोई मानसरोवर झील के तट पर जाकर भी प्यासा रहे
तो वह भाग्यहीन ही है

इसी प्रकार ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '' पत्रिका की शानदार अद्वितीय ''सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड'' योजना होते हुए भी उसका सदस्य न बने

तो

वह निश्चय ही दुर्भाग्य शाली है

क्योंकि

इसमें मात्र एक बार इक्यावन हजार रूपये जमा करा देने पर

* जीवन भर पत्रिका मुफ्त में प्राप्त होती रहेगी।
* भारत वर्ष में कहीं पर भी शिविर होगा,उसमें आप निःशुल्क भाग ले सकेंगें।
* प्रत्येक शिविर में सारी सामग्री ''फ्री '' मिलेगी।
* प्रत्येक पत्रिका में प्रकाशित साधानाओं में से किसी एक साधना की सामग्री (जो सम्पादक चाहेंगे) निःशुल्क प्राप्त होगी।
* गोल्डन कार्ड मेंबर को शिविर किट फ्री मिलेगा।
* विशेष तंत्र रक्षा कवच : जिसकी न्यौछावर ग्यारह हजार रुपये हैं।
* एक बड़ा मंत्र सिद्ध दक्षिणावर्ती शंख - जिसकी न्यौछावर पांच हजार रूपये हैं, निःशुल्क दिया जायेगा।
* एक मधुरूपेण मंत्र सिद्ध एक मुखी रूद्राक्ष - जिसकी न्यौछावर पंद्रह हजार है, निःशुल्क दिया जायेगा।
* एक बड.ा ३० X ४० साइज का गुरु चित्र प्रदान किया जायेगा।
* प्रथम सामान्य दीक्षा से शांभवी दीक्षा तक निःशुल्क प्राप्त होगी।

(आप उपरोक्त धनराशि को दो या तीन किश्तों में भी जमा करा सकते हैं)

और फिर

यह धरोहर धनराशि है, जब साधक ''गोल्डन कार्ड मेंबर '' न रहना चाहे तो लिखित में रजिस्टर्ड डाक से ऐसा पत्र लिख दें, पत्र मिलने के दस वर्ष बाद आपकी धरोहर धनराशि लौटा दी जायेगी, जिस पर ब्याज नहीं मिलेगा।

ड्राफ्ट इस पते पर भेजें

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी , जोधपुर - ३४२००१, (राजस्थान)
टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

श्रावण मास

तो

सर्वकामना सिद्धि अमृत महोत्सव है

श्रावण महीने में जो विशिष्ट शिव साधना सम्पन्न कर लेता है, उसके भाग्य में लिखा हुआ दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाता है, भगवान शिव की यह साधना उसकी दरिद्रता को मिटा कर सम्पन्नता की पंक्तियां लिख देती है, यदि जीवन में कर्जा है, व्यापार बाधाएं हैं, आर्थिक न्यूनता है , तो फिर श्रावण के इन प्रयोगों से बढ़ कर अन्य कोई साधना , अन्य कोई प्रयोग है ही नहीं क्योंकि ये प्रयोग सरल हैं,अचूक हैं और अद्वितीय हैं।

श्रावण मास भगवान भोलेनाथ, शिव का मास है, जिसमें सही पूजा साधना करने से भगवान शंकर सारी इच्छाओं को पूर्ण कर देते हैं यदि जीवन में शिवत्व प्राप्त करना है, तो श्रावण मास से अधिक कोई भी सिद्ध मुहूर्त नहीं है इस पुण्य मुहूर्त की प्रतीक्षा केवल साधु योगियों को ही नहीं हर साधक ,स्त्री -पुरुष सबको रहती है, इस मास का आनन्द कुछ और ही है? अलमस्त फुहारों से भरा यह मास मन और शरीर के भीतर ही भीतर एक विशेष उत्साह ,आवेग ,चेतना जगाता है।

शिव की तो महिमा ही निराली है, प्रसन्न हुए तो कुबेर को देवताओं का कोषाध्यक्ष बना दिया , रावण की नगरी को सोने की बना दिया, अश्विनी कुमारों को सारी आयुर्वेद विद्या सौंप दी , महामृत्युंजय स्वरूप होकर भीषण से भीषण रोग की समाप्ति शिव कृपा साधना से ही प्राप्त होती है । जीवन में श्रेष्ठता शिवत्व के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है, श्रावण मास में सम्पन्न किया जाने वाला हर प्रयोग सौभाग्यदायक ही रहता है।

जहां शिव हैं वहां लक्ष्मी हैं

माता पार्वती , शक्ति स्वरूप जगदम्बा है जो कि शिव का ही स्वरूप है, माता गौरी स्वयं अन्नपूर्णा , लक्ष्मी स्वरूप हैं शिव की पूजा - साधना करने से लक्ष्मी साधना का ही फल प्राप्त होता है, और सभी देवताओं में अग्र पूज्य गणपति तो साक्षात् शिव पुत्र हैं जो सभी प्रकार के विघ्नों, अड़चनों, बाधाओं को समाप्त करने वाले देव हैं।श्रावण मास की साधना से गणपति साधना का भी साक्षात् फल प्राप्त होता है, इसीलिए कहा गया है कि जहां शिव हैं वहा सब कुछ है और जिसने शिवत्व प्राप्त कर लिया , उसने अपने जीवन में पूर्णत्व प्राप्त कर लिया , उसके लिए कठिन से कठिन कार्य भी सरल बन जाता है।

पांच सोमवार :

पांच भाग्योदयकारक दिवस :-

संवत् २०५० के श्रावण मास के ये पांचों सोमवार विशेष योगों से सम्पन्न हैं प्रत्येक सोमवार अपना अलग प्रभाव लिये हुए हैं उसी के अनुसार साधना प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए -

पहिला सोमवार :(५.७.९३) :-

श्रावण कृष्ण पक्ष द्वितीया उत्तरा भाद्रपद, मकर राशि स्थित चन्द्रमा , सौभाग्य योग से सम्पन्न यह सोमवार अद्भुत है, ऐसे योग में निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधना की जानी चाहिए।

१. लक्ष्मी को घर में स्थायित्व देने के लिए।

२.ऋण समाप्त होने व निरन्तर आर्थिक उन्नति के लिए।

३.नौकरी लगने,बेकारी दूर होने व नौकरी में प्रमोसन के लिए।

४. भूमि से द्रव्य लाभ ,लॉटरी आदि उत्तम योगके लिए।

दूसरा सोमवार (१२.७.९३) :-

श्रावण कृष्ण पक्ष अष्टमी, रेवती नक्षत्र मीन राशि स्थित चन्द्रमा सर्वार्थ सिद्धि कामना पूर्ति योग बना है उससे इस शुभ अवसर पर, इस सोमवार को निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधना प्रयोग सम्पन्न की जानी चाहिये।

१. पारिवारिक कलह दूर करने व गृहस्थ जीवन में पूर्ण अनुकूलता के लिए।

२. घर के पितृ दोष,गृह दोष तांत्रिक दोष, आदि समाप्त करने के लिए।

३.आश्चर्यजनक भाग्योदय प्राप्ति के लिए।

४. मनोवांछित पति या पत्नी प्राप्ति
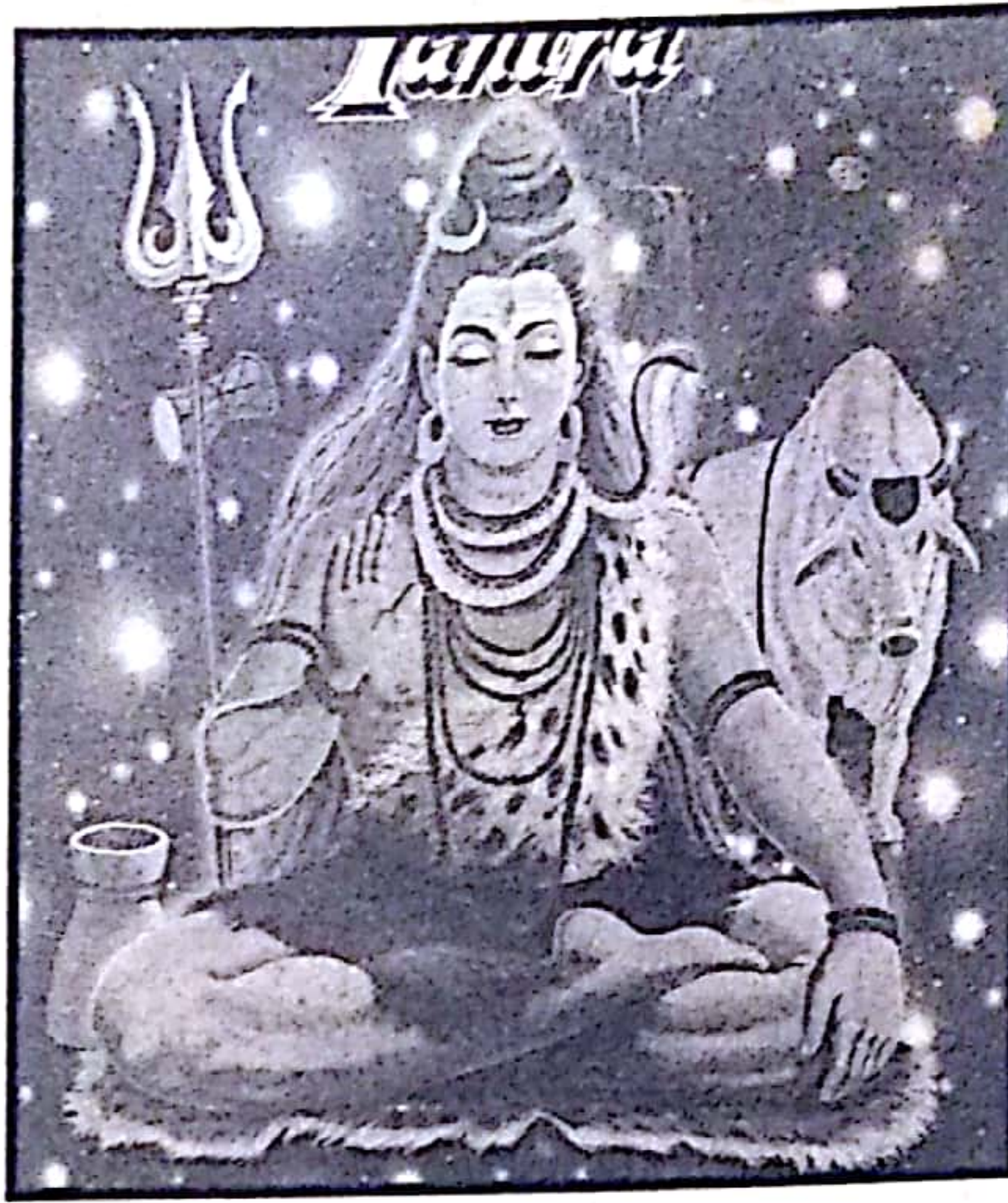
के लिए या इच्छित प्रेमी अथवा प्रेमिका को वश में करने के लिए।

तीसरा सोमवार (१९.७.९३) :-

श्रावण कृष्ण पक्ष सोमवार,पुनर्वसु एवं पुष्य नक्षत्र का योग हरियाली अमावस्या(सोमवती अमावस्या) यह सोमवार तो अद्भुत ही है शुष्क जीवन में सम्पूर्ण रस वर्षा के लिए इस दिवस की साधना निष्फल जा ही नहीं सकती,ऐसे सिद्धिकारक दिवस को भगवान शिव की पूर्ण साधना -उपासना करने वाला साधक धन्य-धन्य हो जाता है निम्न कार्यों की पूर्ति हेतु इस सोमवार का प्रयोग किया जाना चाहिए

१. अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति , पति या पत्नी की पूर्ण आयु के लिए।

२. सन्तान प्राप्ति और पुत्र सन्तान के लिए।

३.कन्या के शीघ्र विवाह और उसके योग्य वर प्राप्ति के लिए।

४. पूर्ण सौन्दर्य एवं यौवन प्राप्ति के लिए

चौथा सोमवार (२७.७.९३)

श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी,स्वाती नक्षत्र तुला राशि में चन्द्रमा होने से यह सोमवार साधक को काल पर विजय दिलाने में सहायक है। निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इस सोमवार को प्रयोग सम्पन्न करने चाहिए-

१. शत्रुओं का नाश करने के लिए

२. मुकदमें में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिये

३.पूर्ण रोग मुक्ति के लिए

४. किसी भी प्रकार की राज्य संकट की समाप्ति के लिए

पांचवा सोमवार (२.८.९३) :-

श्रावण पूर्णिमा, श्रवण नक्षत्र, रक्षा बन्धन पर्व होने के कारण यह सोमवार अत्यन्त भाग्योदय कारक है। इस सोमवार को उपर्युक्त चारों सोमवार में की गयी साधना में सिद्धि प्राप्त करने के लिए पूजन किया जाता है।

मनोकामना सिद्धि साधना
''श्रावण साधना''

पांचों सोमवार को प्रयोग सम्पन्न करने के लिए साधकों की सुविधा हेतु **''श्रावण मास-सर्व कामना सिद्धि पैकेट'**' बनाये गये हैं , अतः साधक पत्रिका प्राप्त होते ही तत्काल सूचित कर दें, जिससे उचित समय पर उन्हें यह पैकेट भेजा जा सके।

इसके अतिरिक्त पूजन के लिए निम्न सामग्री एकत्र कर लें-

१.आसन(सफेद),२. जल-पात्र,३.गंगा जल, ४. चांदी या स्टील की प्लेट ,५.कुंकुम ६. चावल ७.केसर ८.बिल्व -पत्र ९.पुष्प१०. पुष्प माला ११. दूध,दही,घी ,चीनी ,शहद १२. नारियल १३. मौली या कलावा१४. यज्ञोपवीत १५.अबीर-गुलाल १६. अगरबत्ती १७.कपूर

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

येनोदात्त तपः चयेन सततं सन्यस्तमाभूषितम्,
ब्रह्मानन्द रसेनषिक्त मनसा शिष्याश्च संभाविताः।
ब्रह्माण्डं नवरागरंजित वपुः हस्तामलवद् धृतम्,
सोऽयं भूतिविभूषितः गुरुवरः निखिलेश्वरः पातु माम्।।

जिसने अपने उदात्त तपः पुञ्ज से सन्यास धर्म को विभूषित किया, ब्रह्मानन्द में निरन्तर अभिषिक्त जिसने अपने अनन्त शिष्यों को अमृत सेचन किया, नई नई विभिन्न कलाओं से जिसने ब्रह्माण्ड को 'हस्तामलकवत्' धारण किया है, ऐसे अनन्त विभूतियों से भूषित परम पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द मेरी रक्षा करें।

श्री निखिलेश्वरानन्द कवचम्

साधक के लिए अमृत घट स्वरूप

सिद्धाश्रम के सर्वश्रेष्ठ योगी श्रीधरानन्द जी ने इस कवच को ब्रह्माण्ड से प्राप्त किया है। सिद्धाश्रम के प्रत्येक योगी बाहरी बाधाओं और तंत्र प्रयोगों से रक्षा हेतु तथा साधना में सिद्धि प्राप्त करने के लिए अपने सामने परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का चित्र स्थापित करके तथा अपनी भुजा पर श्री निखिलेश्वरानन्द कवच धारण कर इस पाठ का प्रयोग करते हैं , जिससे वे निरन्तर सभी दृष्टियों से उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं।

ठीक इसी प्रकार साधक और शिष्य भी निरन्तर अपने पूजा क्रम में इस कवच का पाठ करें तो वह साधक और उसका परिवार शरीर बाधा, राज्य बाधा एवं सभी बाधाओं से मुक्त रहता है।

ॐ अस्य श्री निखिलेश्वरानन्द कवचस्य, श्री मुद्गल ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्री गुरुदेवो निखिलेश्वरानन्द परमात्मा देवता। "महोस्त्वं रूपं च" इति बीजम्। "प्रबुद्धं निर्नित्यमिति" कीलकम्। " अथौ नैत्रं पूर्ण" इति कवचम्। श्री भगवतो निखिलेश्वरानन्द प्रीत्यर्थं पाठे विनियोगः।

करन्यास :-

श्री सर्वात्मने निखिलेश्वराय -अंगुष्ठाभ्यां नमः

श्री मंत्रात्मने पूर्णेश्वराय- तर्जनीभ्यां नमः

श्री तंत्रात्मने वागीश्वराय- मध्यमाभ्यां नमः

श्री यंत्रात्मने योगीश्वराय - अनामिकाभ्यां नमः

श्री शिष्यप्राणात्मने सच्चिदानन्द प्रियाय- करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्

अंग न्यासः-

श्रींशेश्वरः हृदयाय नमः,

ह्रीं शेश्वरः शिरसे स्वाहा।

क्लींशेश्वरः शिखायै वषट्,

तंपसेश्वरः कवचाय हुम्

तापेश्वरः नेत्रत्रयाय वौषट्

एकेश्वरः करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

रक्षात्मक देह कवचम्

शिरः सिद्धेश्वरः पातु, ललाटं च परात्परः
नेत्रे निखिलेश्वरानन्दः , नासिका नरकान्तकः ।।१।।

कर्णौ कालात्मकः पातु , मुखं मंत्रेश्वरस्तथा।।
कण्ठं रक्षतु वागीशः, भुजौ च भुवनेश्वरः ।।२।।

स्कन्धौ कामेश्वरः पातु, हृदयं ब्रह्मवर्चसः।
नाभिं नारायणो रक्षेत् उरू ऊर्जस्वलोऽपि वै। ।३।।

जानुनी सच्चिदानन्दः पातु पादौ शिवात्मकः
गुह्यं लयात्मकः पायात् चित्तं चिन्तापहारकः ।।४।।

मदनेशः मनःपातु, पृष्ठं पूर्णप्रदायक :
पूर्वं रक्षतु तंत्रेश : यंत्रेशः वारुणीं तथा ।।५।।

उत्तरं श्रीधरः रक्षेत् दक्षिणं दक्षिणेश्वरः
पातालं पातु सर्वज्ञः ऊर्ध्वं मे प्राणसंज्ञक : ।।६।।

कवचेनावृतो यस्तु यत्र कुत्रापि गच्छति
तत्र सर्वत्र लाभः स्यात् किंचिदत्र न संशयः ।।७।।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितं
धनवान् बलवान् लोके जायते समुपासकः ।।८।।

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः
नश्यन्ति सर्वविघ्नानि दर्शनात् कवचावृतम् ।।९।।

य इदं कवचं पुण्यं , प्रातः पठति नित्यशः
सिद्धाश्रम पदारूढः ब्रह्मभावेन भूयते ।।१०।।

कवच पाठ पूर्ण करने के बाद साधक नित्य पूजा-क्रम पूर्ण करके गुरु आरती सम्पन्न करें।

कहीं आप ऋण के दलदल में तो नहीं फंस गये ?

ऋण एक ऐसा कष्ट है कि व्यक्ति परिस्थिति वश ले तो लेता है किंतु अपना स्वाभिमान गिरवी रख देना पड़ता है। बाद में तो फिर यही ऋण उसके मन मस्तिष्क पर दबाव डालकर उसे खोखला बना देता है, मानो भीतर ही भीतर दीमक लग गयी हो - - -

यदि किसी के जीवन में सबसे बड़ा दुख है तो वह है 'ऋण' , और ऋण का जहर पूरे शरीर में फैलकर ऋणी के मस्तिष्क में प्रभाव डालता है। जिस प्रकार दल-दल में डूबने वाला व्यक्ति उस दल-दल से बाहर निकलने का जितना प्रयास करता है वह उतना ही अधिक फंसता है, ठीक यही स्थिति कर्ज में डूबे व्यक्ति की होती है। एक कर्जे को उतारने के लिए दूसरा कर्जा लेता है, और उसे उतारने के लिए तीसरा। हर समय इस आशा में रहता है कि किसी न किसी प्रकार कर्जे को उतार दूंगा, लेकिन यह दल-दल ऐसा है कि जिससे बचकर बहुत कम ही बाहर आ पाते हैं। एक लोकोक्ति है इस संसार में सभी विश्राम करते है निद्रा लेते हैं, लेकिन काल चक्र, ऋण और ऋण का सहयोगी ब्याज कभी भी विश्राम नहीं करते, इनका चक्र चौबीसों घंटे घूमता रहता है।

मनुष्य के जीवन में तीन प्रकार के ऋण आते हैं, प्रथम माता-पिता का ऋण,द्वितीय गुरु ऋण और तीसरा धन ऋण। इन तीनों ऋणों को व्यक्ति को अपने जीवन मे उतार देना चाहिए अन्यथा इन ऋणों का दोष उसे अपने अगले जीवन में भोगना पड़ता है, और ऋण हमेशा बढ़ता है, जब कि ऋण का शाब्दिक अर्थ घटना है।

मातृ-पितृ ऋणः-

मा-बाप का ऋण व्यक्ति पर इसलिए होता है कि उनके कारण ही वह इस मनुष्य जीवन में प्रवेश कर सका, और इस संसार में सभी प्रकार के आनन्द सुख का मार्ग उनके द्वारा बना , अतः जो व्यक्ति अपने जीवन में माता - पिता की सेवा नहीं करता है तो उसे "ऋण दोष" लगता है, और यह दोष उसे अपने जीवन में नहीं तो अगले जीवन में उतारना ही पड़ता है।

गुरु ऋण :-

दूसरा ऋण गुरु ऋण होता है, गुरु का तात्पर्य है जो आपको दीक्षा दे ज्ञान दे, जीवन के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराएं, उस गुरु के प्रति यदि जाने - अनजाने दोष हो जाय , अवज्ञा हो जाय, गुरु का अपमान किया जाय, गुरु के वचनों का पूर्ण रूप से पालन नहीं किया जाय, गुरु सेवा में कमी रहे, अर्थात् मन,वचन,कर्म से किसी भी रूप में गुरु की श्रद्धा में कमी आने पर गुरु ऋण सहस्त्र गुणा बढ़ जाता है। ऋण व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार जुड़ जाता है कि उसे सांसारिक जीवन में बाधाओं के चंगुल में

फंसा देता है, और इस महा चुंगल से मुक्ति पाने का उपाय गुरु के पास ही होता है।

लक्ष्मी ऋण :-

तीसरा ऋण आर्थिक ऋण है जो व्यक्ति अपनी क्षमता से बाहर अपने महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु, सांसारिक भोग - विलास में डूबने हेतु, झूठी शान शौकत में वृद्धि करने हेतु लेता है इसके अतिरिक्त असत्य भाषी, आलसी, क्रिया हीन, साधना हीन , व्यक्ति को भी जीवन में आर्थिक कर्जे का बोझा ढोना ही पड़ता है।

एक बार मैंने गुरुदेव से पूछा कि मानव जीवन के तीन सबसे बड़े दुख कौन से है? तो गुरुदेव ने कहा - कि जब पुण्य का क्षय होता है तो पाप अपना प्रभाव डालते हैं, और जब साधना से, सद्विचारों से , सुकार्यों से व्यक्ति मुंह मोड़ लेता है तथा अहंकार एवं किसी भी बल के घमंड से अपने को महान समझने लगता है तो उसके जीवन में तीन दोष में से एक दोष अवश्य ही आ जाता है, प्रथम बीमारी, द्वितीय वाद-विवाद अर्थात् मुकदमा, तृतीय ऋण (दरिद्रता)। इन तीन दोषों में सबसे भयानक है ऋण दोष, कर्जा। क्योंकि यह कर्जा जीवन में अब तक किये गये सारे कारजों (कार्य) पर पानी फेर देता है, अतः व्यक्ति को अपने जीवन में इन तीन दोषों से मुक्ति अवश्य ही पा लेनी चाहिये।

पूर्व जन्म के दोष :-

ऊपर जो तीन ऋणों का वर्णन आया है यदि किसी व्यक्ति ने अपने जीवन में इन्हें पूरा नहीं किया ,तो ये दोष उसके अगले जन्म में प्रभाव डालते हैं, और उसके कारण ही मनुष्य गरीब घर में पैदा होता है,आगे बढ़ने के साधन उपलब्ध नहीं होते हैं, घर परिवार में कलह का वातावरण रहता है, व्यक्ति शारीरिक और मानसिक तौर पर दुःखी रहता है,और सत्य कहा जाय तो उसका जीवन एक प्रकार से नीरस एवं कष्ट से गुजरते हुए बीत जाता है।

हे दरिद्रता ! तुम कठोर हृदया हो तुम्हारे कारण मुझे कटु वचन सुनने पड़ते हैं, नीचा देखना पड़ता है, मुझमें कायरता क्रोध समा गया है, निम्नता आ गई है अतः तुम्हें, मैं अपने से दूर करने के लिए कृत संकल्प हूं।

जैसा गुरुदेव ने कहा कि तीन दुःख प्रधान होते हैं उनमें यदि आपके पास तीसरा दोष, दुःख ऋण अर्थात् लक्ष्मी की कमी नहीं है तो आप बीमारी की बाधा को पार कर सकते हैं, मुकदमें, वाद-विवाद, लड़ाई -झगड़े के कुचक्र से निकल सकते हैं, लेकिन यदि धन का ऋण है तो ये तीनों दोष वृद्धि करते हैं।

ऋण दोष का निवारण कैसे हो ?

जितनी बड़ी बीमारी होती है उसके लिये यह आवश्यक नहीं कि उसका इलाज भी उतना ही बड़ा हो, कई बार बड़ी - बड़ी औषधियां काम नहीं करती वहीं साधारण सी औषधि से रोग जड़ से समाप्त हो जाता है।

ऋण की माता का नाम है निर्धनता और निर्धनता को नष्ट कर देने वाली देवी है, लक्ष्मी और जब तक साधक लक्ष्मी की विशेष साधना नहीं करता तब तक उसे ऋण से मुक्ति नहीं मिल सकती, और जिस दिन साधक यह संकल्प कर लें कि मैं इस निर्धनता के नाश के लिए कृत संकल्प हूं, क्रियाशील हूं,परिश्रम के लिए तैयार हूं, लक्ष्मी की आराधना के लिए, लक्ष्मी को सम्मान देने के लिए तत्पर हूं, तभी वह अपने जीवन में इस दोष से मुक्त हो सकता है।

लक्ष्मी उपासना में ऋण दोष को दूर करने के लिये विभिन्न प्रकार के प्रयोग वेदोक्त ग्रन्थों में दिये गये हैं । **विश्वामित्र संहिता** में भी एक अत्यन्त श्रेष्ठ प्रयोग दिया गया है, और इसके अतिरिक्त साबर साधनाओं में भी ऋण निवारण प्रयोग हैं। लेकिन व्यक्ति जब तक अपने जीवन में माता -पिता की सेवा और गुरु सेवा और इसके साथ इन दोनों के प्रति अपने ऋण के महत्व को नहीं समझेगा, तब तक उसे धन ऋण से पूर्ण मुक्ति नहीं मिल सकती।

विश्वामित्र प्रणीत ऋण हर्ता प्रयोग

विश्वामित्र ने जब अपना राजपाट छोड़ सन्यास धारण कर लिया तो उन्होंने देखा कि निर्धनता के कारण व्यक्ति का जीवन कष्टमय हो जाता है, और वह संसार के कुचक्र में ही फंसा रहता है। इसलिये उन्होंने **ज्येष्ठा लक्ष्मी** साधना की रचना की। इस प्रयोग को जो साधक सात दिन तक संपन्न करता है, और उसके उपरान्त **''ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र''** का प्रतिदिन जप करते हुए एक लाख मंत्र सम्पन्न कर देता है तो उसे किसी न किसी माध्यम से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, और वह अपना ऋण उतारने में समर्थ होता है।

इस साधना में मुख्य रूप से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **''ज्येष्ठा लक्ष्मी यंत्र'' नौ लक्ष्मी सिद्धि श्रीफल** , आवश्यक है, ये फल ज्येष्ठा लक्ष्मी की शक्तियों के द्योतक हैं, और इनका पूजन अवश्य करना चाहिये।

प्रयोग विधि विधान : -

विनियोग -

ॐ अस्य श्री ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुछंदः । ज्येष्ठालक्ष्मी देवता ह्रीं बीजम्। श्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

अब ज्येष्ठा लक्ष्मी का ध्यान कर उस यंत्र को ताम्र के पात्र में पुष्प का आसन देकर स्थापित करें -

(शेष पृष्ठ ५०पर)

जब मैंने पुष्पदेहा अप्सरा सिद्ध की

और प्राप्त किया धन, ऐश्वर्य और प्रियतमा का आनन्द

संभव है आपने इससे पूर्व भी अप्सरा साधनायें की हों और सफलता पायी हो लेकिन देह की मादकता की दृष्टि से जो अप्सरा पूर्ण सौन्दर्य शास्त्र में अपूर्व मानी गयी वह है ''पुष्प देहा अप्सरा''. . . पुष्प देहा अप्सरा यानि कि पुष्पों सी देह हो जिसकी, कोमल और सुगन्धित . . . ., शीघ्रता से सिद्ध होने वाली साबर पद्धति में रहस्योद्घाटन, एक दुर्लभ सौन्दर्य साधना का . . .

नारी कितनी मोहक रचना है इस धरा पर ईश्वर की । पुरुष कितने भी तनाव में क्यों न हो, कैसी भी उदासी के वातावरण में क्यों न हो, नारी के पास एक से एक उपाय होते हैं कि वह उन तनाव के क्षणों में अपनी मधुरता से, अपने स्नेह से, अपने अन्दर की गुनगुनाहट से और बांहों को उसके गले में डाल क्षण मात्र में ही सब कुछ धो सा देती है। नारी का भी यह रूप यदि अप्सरा वर्ग से हो तो सौन्दर्य कितना गुना बढ़ जाता है- इसको तो जिन्होंने अनुभव किया है वे ही समझ सकते हैं । पुरुष वर्ग अपनी सारी चतुराई भूल जाता है। उसका सारा दर्प एक ओर धरा रह जाता है, नारी के आकर्षण के आगे, और यही नारी का सबसे बड़ा गुण है। कोई नारी की मांसलता में बद्ध हो जाता है , कोई उसके घने बालों के सौन्दर्य में, कोई बोलती हुई आंखों के जादू में, कोई मुस्कान की फांसों में और कोई हृदय छू लेने वाली शैली में, या उसके दिल को गुदगुदा देने वाले अंदाज में-- कोई भी नहीं बच सका ।

साधना की दुनियां में योगियों, यतियों और संन्यासियों ने भी इस तथ्य की विवेचना कर इसका महत्व समझा और उन्होंने ने भी अप्सरा वर्ग की साधनायें कर अपने शुष्क और नीरस जीवन में रस घोला। अनेक प्रमुख सन्यासियों ने बिना झिझक और बिना लाग लपेट के स्वीकार किया है कि उन्होंने पूर्णता के साथ अप्सरा साधना संपन्न की है, जिसमें कोई भी घटिया पन नहीं है। वास्तव में घटिया पन तो हमारी ही देह में, हमारी ही आंखों में होता है जो आलोचना के माध्यम से मुंह से फूट निकलता है। कसक तो हमारे ही अन्दर होती है कि काश! हमें भी ऐसा सौन्दर्य जीवन में मिल पाता, और मैं भी भोग कर सकता । हम जब भोग नहीं कर पाते तो आलोचनायें कर अपने अन्दर का आक्रोश निकालते हैं।

अप्सरा वर्ग की साधना यदि हम स्पष्ट शब्दों में कहें तो व्यक्ति की मूलभूत भावना 'काम - भावना' से संबंधित है,जो कि समस्त जीवन में सरसता व गति का आधार है। साधना में प्रत्येक साधक के साथ एक ऐसी दशा अवश्य आ जाती है कि वह निरन्तर साधना तत्व का चिन्तन करते रहने से, उसकी

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

भोपाल ७ मई ९३

आज परम पूज्य गुरुदेव का आगमन भोपाल में "एक दिवसीय शिविर" में सुनकर पूरा **सिद्धाश्रम साधक परिवार** उस तरफ उमड़ पड़ा था, जहां पूज्य गुरुदेव का प्रवचन होना था, प्रातः दीक्षा समारोह हुआ, साथ ही इक्कीस किलो पारद शिवलिंग का पूजन ,रुद्राभिषेक । शाम को लक्ष्मी -गणेश साधना समारोह भी। टी. सुब्बाराव और उनकी पत्नी ललिता सुब्बाराव के अथक प्रयासों से यह शिविर अत्यधिक सफल रहा, इसी शिविर में कुछ महत्वपूर्ण समर्पित साधकों ने ६-७ जून को अमरकंटक में शिविर लगाने की घोषणा की । गुरु सेवक की इस शिविर को सफल बनाने में जितनी सराहना की जाय, वह कम है।

बम्बई - ९ मई ९३

बम्बई के उपनगर मुलुण्ड में एक दिवसीय साधना शिविर अत्यधिक सफल रहा, गणेश वट्टाणी और हरीशचन्द्र झा (पुजारी) इस शिविर के लिये पिछले एक महीने से अथक परिश्रम कर रहे थे, , और उनका यह परिश्रम इस शिविर में साफ -साफ दिख भी रहा था, प्रातः पंच रत्न मंदिर में नवग्रह स्थापन व प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम था, शाम को साधना शिविर । इसी शिविर में डॉ. किशोर भाई, अनिल बघेरा और विशेष कर गणेश वट्टाणी ने १३ जून ९३ को बोरीवली में एक दिन का साधना शिविर लगाने की घोषणा की।

अहमदाबाद १६-१७ जून ९३

समर्पित साधक एवं शिष्य हरीश जोशी (जो अहमदाबाद के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं) के प्रयासों से अहमदाबाद में १६-१७ जून को भव्य शिविर सम्पन्न होने जा रहा है, दीक्षा समारोह के साथ साथ साधना शिविर के लिये भी जोशी जी अथक प्रयास कर रहे हैं, जिससे समस्त साधकों को ज्यादा से ज्यादा आनन्द एवं लाभ के साथ - साथ पूज्य गुरुदेव का साहचर्य प्राप्त हो सके।

अमेरिका -वाशिंगटन डी.सी. १२ मई ९३

वाशिंगटन डी.सी. में पूज्य गुरुदेव के शिष्य वीरेन्द्र श्रीवास्तव -'आनन्दानन्द 'के नेतृत्व में भव्य शोभा यात्रा निकली, और एक दिन की गणपति साधना सम्पन्न की, जिसमें दस हजार से भी अधिक साधकों ने भाग लिया तथा उन्हें अद्वितीय आनन्द भी प्राप्त हुआ। गुरु भाई आनन्दानंद ने वीडियो फिल्म के माध्यम से गुरुदेव द्वारा ६००० से भी अधिक साधकों को दीक्षा दी।

सहयोगी :-

सत्यनारायण दुबे

डॉ. सत्यनारायण दुबे कई वर्षों से **सिद्धाश्रम साधक परिवार** से जुड़े हुए हैं पेशे से डॉक्टर होने के साथ साथ वे अत्यधिक नम्र , विनीत एवं पत्रिका परिवार के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं और इस संस्थान की प्रत्येक गतिविधि से जुड़े हुए हैं।

यों तो दिल्ली में सैकड़ों हजारों फिजिसियन हैं, पर डॉ. दुबे के हाथों में तो जादू है। जिस रोगी का भी वे केस हाथ में लेते हैं उनके इलाज से वे शीघ्र ही ठीक होने लग जाते हैं जटिल से जटिल रोगों पर भी उन्होंने सफलता पाई है,मरीज के प्रति उनका रवैया अभिभावक की तरह बन जाता है उनका निश्छल एवं सराहनीय कदम यह है कि उन्होंने यह निश्चय किया है कि **सिद्धाश्रम साधक परिवार** से संबंधित किसी भी रोगी को वे सर्वाधिक प्राथमिकता देंगे . . . अब तक जितने भी गुरु भाई हमसे मिले हैं सभी ने उनकी सराहना की है।

'मंत्र-तंत्र-यंत्र-विज्ञान ' पत्रिका में भी उन्होंने अपने अनुभव देने का निश्चय किया है, गुरु परिवार के प्रति तो वे पूर्णतः समर्पित हैं ही।।

उनका पता है:-

डॉ. सत्यनारायण दुबे
ए १/११७, लारेंस रोड
दिल्ली

टेलीफोन - ७१८०९६६

अगर तुम शिष्य हो तो तुम्हे १-२-३ जुलाई को पानीपत (गुरुपूर्णिमा) में आकर मुझसे मिलना ही है।

- गुरुदेव

कली कली खिल उठती है

सम्मोहन दीक्षा से

कली कली खिली, तन की ही नहीं मन की भी, जिस पर रिमझिम फुहारें आकर सावन की रुक गयी हो, ढलकने का जी ही न चाह रहा हो उन बूंदों का . . .

यही अदा, यही ताजगी तो है,

सम्मोहन दीक्षा . . .

नेपोलियन बोनापार्ट जो कि कद में अत्यन्त ही लघु था, उसकी एक कथा प्रसिद्ध है। एक बार वह अपनी लायब्रेरी में कोई किताब अपनी शेल्फ से निकालना चाह रहा था किन्तु ऊँचाई पर होने के कारण उसे बार-बार उचकना सा पड़ रहा था। यह देखकर उसका जनरल ,जो कि उसके पास ही खड़ा था बोला,"लाइये मैं वह किताब निकाल देता हूं, मैं आपसे बड़ा हूं"। नेपोलियन ने मुस्करा कर उत्तर दिया, "बड़े नहीं जनरल, लम्बे!"

यह घटना हमें बताती है कि व्यक्ति अपने कद , रंग या आकार प्रकार से ही आकर्षित करने वाला हो, यह आवश्यक नहीं। वह लम्बा चौड़ा गोरा बलिष्ठ हो सकता है, लेकिन उसमें कशिश सी भी हो, यह सदैव आवश्यक नहीं। आपने भी अपने दैनिक जीवन में, यात्राओं में आते जाते, सड़कों पर , बसों में सैकड़ों ऐसे युवक युवती देखें होंगें जो कि सौन्दर्य शास्त्र के माप दण्डों केअनुसार तो पूर्ण पुरुष या पूर्ण नारी की संज्ञा पा सकते हैं, लेकिन उनमें कोई ऐसी बात नहीं दिखती कि उन्हें दो क्षण रुककर निहार लिया जाय या मन ऐसा चाहे कि ठिठक कर व पलट कर एक बार फिर उनको देखें। दूसरी ओर कभी-कभी कोई साधारण कद काठी का युवक या कोई सांवली सी लड़की दिख जाती है और मन एक दम से रुक कर उसे देखने का फिर -फिर कर उठता है। यह साधारण अन्तर नहीं। यदि हम दर्शन की या अध्यात्म की भाषा में कहें तो यह व्यक्ति के अन्दर का प्रकाश होता है, जो चेहरे पर आभा सी बन कर बिखर जाता है, लेकिन जब इसी बात को हम विज्ञान के रूप में समझने-समझाने की वात करते हैं तो इसकी संपूर्ण विवेचना आवश्यक हो जाती है।

यद्यपि अध्यात्म और वैज्ञानिक पक्ष में कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं है। जिन बातों को भारतीय शास्त्र सीधी -सादी भाषा में या काव्य की रूपात्मक भाषा में कहते है, विज्ञान भी उन्हीं तत्वों को कभी तरंगों का आधार लेकर, तो कभी अणुओं के किन्हीं संयोजन-विघटन को रख अपना पक्ष स्पष्ट करता है, ज्ञान व विज्ञान में कोई मतभेद नहीं है। उनके प्रतिपादन के ढंगो में अन्तर है, जिससे वह एक दूसरे के विरोधी से लगने लगते हैं।

सम्मोहन के संदर्भ में भी यही बात है। हम जिसे आत्मा का प्रकाश,आभा मण्डल,दैवी आभा कह कर व्याख्यित करते हैं, विज्ञान उसी बात को इस रूप में बताता है कि व्यक्ति का जब ध्यान शरीर के अमुक स्थान पर होता है, तो कोई अल्फा या बीटा तरंगें निकल कर उसके चारों ओर चुम्बकीयता बढ़ा देती है। सामान्य वर्ग ऐसा पढ़कर - सुनकर जल्दी ही प्रभावित भी हो उठता है। प्रति प्रश्न तो इन व्याख्याओं के साथ भी किये जा सकते हैं कि तरंग कैसे उत्पन्न होती है? चुम्बकीयता क्यों प्रत्येक व्यक्ति में अलग अलग होती है? इत्यादि।

हमारा उद्देश्य विज्ञान की आलोचना करना नहीं क्योंकि वे भी हमारे ही ज्ञान की पुष्टि में ही संलग्न हैं, और उनके प्रयासों, आलोचनाओं शोध कार्यों से भारतीय ज्ञान को विश्व के समक्ष मंच मिला है । हमारा विवेच्य विषय तो यह है कि हम कैसे सम्मोहन विज्ञान को समझें और समझने से भी अधिक अपने जीवन में उतारें । भारतीय पक्ष इसी से न्यून सा रह गया , क्योंकि उसने ज्ञान को जीवन में उतारने पर अधिक बल दिया, उसकी विवेचना करने की अपेक्षा । सम्मोहन अपने आप में बहुत प्रचारित शब्द तो बना, लेकिन मानस में अधूरा अर्थ ही प्रतिबिम्बित करने वाला। जनसामान्य इसे प्रेमी - प्रेमिका के आकर्षण -विकर्षण का कोई कौतूहल मात्र समझता है, या यह कि हम

अमुक को बाध्य कर उससे ऐसा कार्य बलात् ले सकेंगे।

सम्मोहन तो सभी भारतीय विद्याओं की भाँति जीवन की एक विशिष्ट शैली और कला है अपने आप में ताजगी भरने की। इसके द्वारा व्यक्तित्व में आकर्षण, चुम्बकत्व लपक जैसे गुण तो आते ही हैं साथ ही यह आन्तरिक रूप से भी उमंग, उत्साह और शीतलता देने का ऐसा सफल प्रयास है कि फिर व्यक्ति की शक्तियां गुणात्मक रूप से बढ़ने लगती है, हम चाह कर भी अपने रुटीन जीवन को बदल नहीं पाते। प्रत्येक व्यक्ति में प्रबल इच्छा होती है कि वह अपने जीवन को संवारे, उसमें रंग भरे -आकर्षण के और उत्साह के। लेकिन उसके दिन प्रतिदिन के प्रयासों के बाद भी जब कुछ नया नहीं घटित हो पाता, तो स्वतः ही उसके अन्दर उदासीनता सी समाने लगती है, वह फिर सामान्य जीवन क्रम से समझौता कर दिन काटने लगता है।

सम्मोहन रुटीन जीवन में परिवर्तन का प्रयास है। सम्मोहन के द्वारा जब व्यक्ति के अन्दर ताजगी, खिंचाव और कुछ कौंधने जैसा भर जाता है, जब लोग उसके पास खिंच खिंच कर आने लगते हैं। उससे बातें करने का प्रयास करने लगते हैं तो स्वतः ही
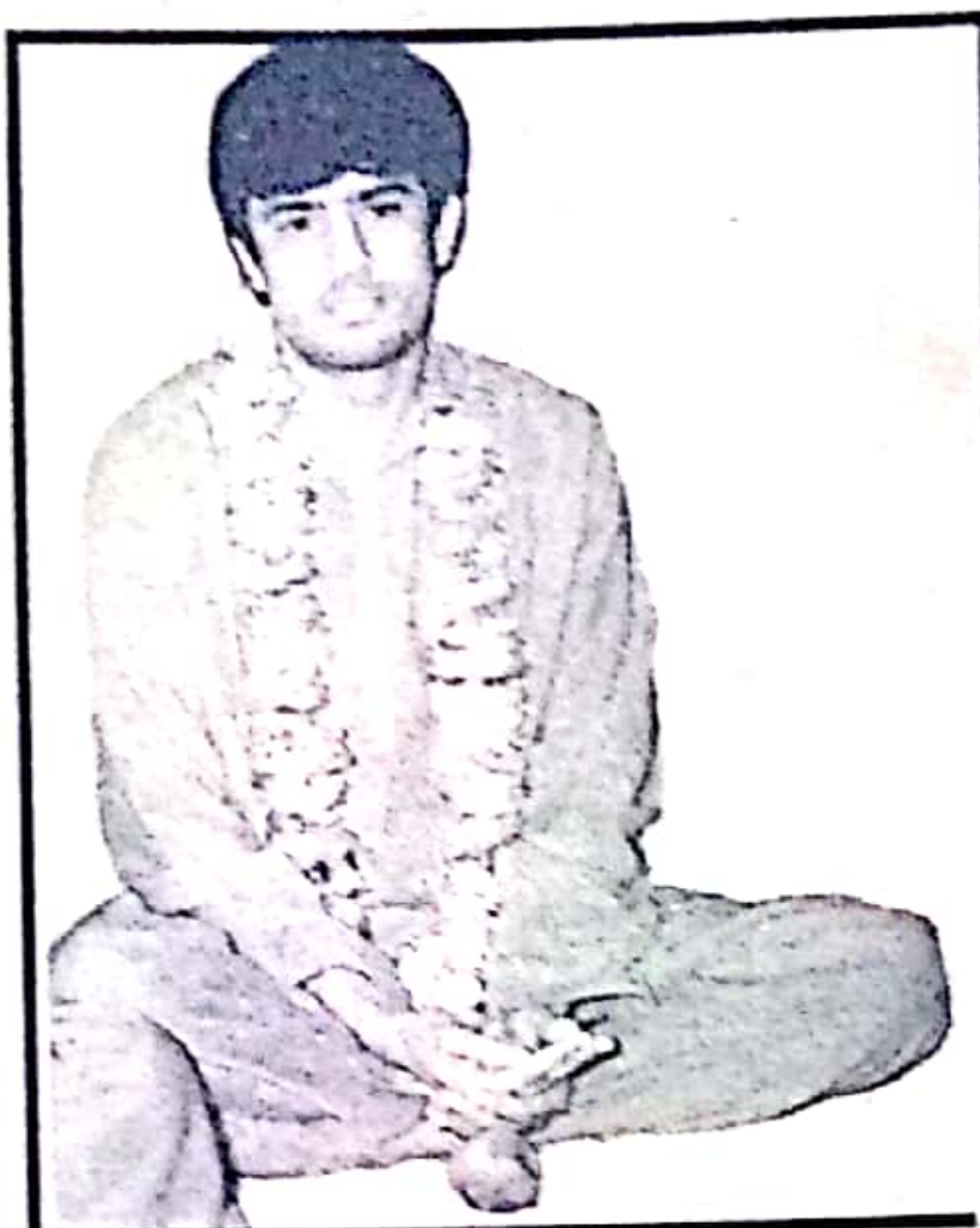
गुरुदेव
श्री अरविन्द श्रीमाली

उसके मन में आत्म -विश्वास जगता है। जीवन के प्रति नया उत्साह, नये सपने और उमंग आती है वह सकारात्मक ढंग से सोचने की दिशा में जीवन में पहली बार बढ़ता है कल तक उसे यही संसार जो ऑफिस, घर, टी.वी. और अखबार की हेड लाइन के सिवा कुछ दिखता ही नहीं था, बहुत कुछ बदला -बदला सा दिखने लगता है, तब उसे अपने घर के किसी मोड़ पर खिला कोई फूल भी लुभा सकता है, कोई बच्चा उसका दो क्षण ध्यान अपनी ओर खींच सकता है और स्त्री उसको नये ढंग से सुन्दर दिख सकती है- जिस ढंग से उसने अभी तक स्त्री को देखा ही न हो। जब यह सब अन्दर घटित होता है तब व्यक्ति स्वयं आकर्षण एवं सौन्दर्य से भर जाता है। वह विश्व का सौन्दर्य निहारता है और विश्व उसका सौन्दर्य।

सम्मोहन कोई ऐसी विद्या नहीं है कि आपकी आंखें खूब बड़ी बड़ी हो जायेंगी या आप सम्मोहन करने के प्रयास में आंखें फाड़ फाड़ कर सबको घूरते रहें, या आप रातों रात चालीस के बजाय बाईस के दिखने लगेंगें, किन्तु यह तो अवश्य ही होगा कि आपके शरीर में कुछ ऐसी प्रक्रियायें आरम्भ हो जायेंगी कि आप चालीस के होते हुये भी पच्चीस वर्ष के युवक का उत्साह और क्षमता अपने अन्दर स्वयं अनुभव करने लगेंगे, इस परिवर्तन से आपके अन्दर से उत्साह व आनन्द की जो तरंगें निकलेंगी उससे लोग खिंच कर आपके पास बैठेंगे, आनन्द अनुभव करेंगें। यही सम्मोहन का मूल मंत्र है कि लोग आपके पास खिच कर बैठें और उनकी उठने की इच्छा न हो।

सम्मोहन यदि हम प्रक्रिया के रूप में अपनाते हैं तो वह भी एक श्रेष्ठ उपाय है किन्तु वह लम्बा मार्ग है। सम्मोहन शक्ति का अपने शरीर में जागरण एक अन्य उपाय से भी संभव है और वह है कि हम योग्य गुरु से '**सम्मोहन दीक्षा**' प्राप्त करें।

(शेष पृष्ठ ५० पर)

सम्मोहन दीक्षा :- सम्पूर्ण जीवन का सौन्दर्य

किन रंगो से नहीं भर देती है सम्मोहन दीक्षा व्यक्ति के जीवन को, शारीरिक सम्मोहन और सौन्दर्य से लबालब भरने के बाद .....
क्या कुछ नहीं घटित हो जाता इस एक दीक्षा से
स्वतः आरम्भ हो जाती हैं ध्यान की प्रक्रियाएं
सूझने लगते हैं व्यक्ति को अपनी समस्याओं के हल
छंटने लगते हैं आपके अन्दर छाये उदासी और विषाद के काले बादल
जीवन में आरम्भ हो जाती है वह निश्चिन्तता भरी नींद जो आपको युवावस्था के दिनों में मादकता में सुलाये रखती थी
सहज हो जाती है कार्यालय में संगी साथियों से सभी स्थितियां और सहज हो उठते हैं आपके अधिकारी आपसे,अनायास ....
गृह कलह,पुत्र की उद्दण्डता, पत्नी की चिड़चिड़ाहट, पति का झुंझलाना बात-बात पर - यह सब तो इतिहास की बातें हो जाती है..
जनसम्पर्क से जुड़े व्यक्तियों के लिए तो यह साक्षात् वरदान है और इस युग में भला आप ही कहिए कौन सा क्षेत्र जनसम्पर्क का नहीं रहा?
व्यापारी बन्धु तो अभिभूत हो उठे हैं इस दीक्षा को प्राप्त कर इससे मिली व्यापारिक सफलताओं को लेकर ....
तभी तो यह दीक्षा ही नहीं,एक विद्या सी सिखाने की बात नहीं, सम्पूर्ण जीवन का सौन्दर्य और सम्पूर्ण जीवन की शैली कह कर पुकारी गई है।

टेलीपैथी साधना

हमारे मस्तिष्क में विचार बनते ही सारे आकाश मंडल में तरंग के माध्यम से फैल जाते है। टेलीपैथी इन्हीं तरंगों को पकड़ने का निश्चित उपाय है।

यह सिर्फ छोटी सी साधना है, पर इसकी छलांग बहुत ऊंची है, इससे आप परिचय में आने वाले व्यक्ति के मन की बात जानकर उसे अपने वश में कर सकते हैं, जीवन में उन्नति के शिखर पर पहुंच सकते है . . .

सभ्यता के आरम्भ से ही मनुष्य इस प्रयत्न में लगा हुआ है कि येन केन प्रकारेण वह दूसरों के मन की बात को पहले से ही जान ले और अपने आप को सुरक्षित बनाये रखे। ऐसा आवश्यक भी है क्योंकि आजकल के वातावरण में सामान्य मानव प्रति क्षण आतंकित व सतर्क रहता है, विश्वासघात व नुकसान की आशंका उसे सताये रहती है और इस व्यर्थ के मानसिक तनाव का कुप्रभाव शरीर पर पड़ता ही रहता है।

हमारे प्राचीन तंत्र शास्त्र के पास टेलीपैथी साधना के रूप में सारी समस्याओं का समाधान है। यह विज्ञान उन तरंगों को पकड़ता है जो सामने वाले के दिमाग में गूंजती रहती है। हमारे विचार हमारे मस्तिष्क में बनते हैं और इनका प्रतिविम्व मस्तिष्क में बनता है। विचार तरंगों के माध्यम से वातावरण में गूंजती हुई तरंग को ग्रहण करने की और भेजने का आधार भूत सिद्धान्त भी यही है।

योगियों ने सर्वप्रथम त्राटक के द्वारा इस सिद्धि को हस्तगत करने का प्रयत्न किया। वे सफल भी हुए परन्तु आंशिक रूप में ही, क्योंकि त्राटक में मुख्यतः दो खामियां थी। एक तो यह कि व्यक्ति को सामने बिठाकर ही उसके विचार जाने जा सकते थे जो कि हर परिस्थिति में संभव नहीं हो पाता दूसरे यह पद्धति तभी सफल हो सकती है जब आप उच्चकोटि के त्राटक कर्ता हों।

अतः यह पद्धति अधिक लोकप्रिय नहीं हो सकी

नवीनतम प्रणाली :-

उच्चकोटि के योगियों ने इस दिशा में अनुसंधान प्रारम्भ किये और ऐसी पद्धति का अविष्कार करना चाहा जिसमें चार विशेषताएं हो-

१ जो शीघ्र सिद्ध होती हो।

एक ऐसी स्थिति की कल्पना कीजिए कि दो राष्ट्राध्याक्ष परस्पर रक्षा समझौतों को लेकर मिलने वाले हैं तभी एक देश के राष्ट्रा ध्यक्ष को, उनके एक वरिष्ठ वैज्ञानिक जो टेलीपैथी साधना में सिद्ध हस्त हैं,चुपके से सूचित करते हैं कि आप समझौते पर हस्ताक्षर मत करिये, क्योंकि दूसरे राष्ट्राध्यक्ष के विचार हमारे देश के प्रतिकूल हैं। सम्पूर्ण विश्व में हलचल मचाने वाली टेलीपैथी साधना . . . .

२ जो अपने आप में पूर्ण प्रभावयुक्त हो ।

३ जिसमें जटिल विधि विधान और महगें उपकरण प्रयुक्त न हों।

४ जो सामने खड़े व्यक्ति पर तो प्रभावयुक्त हो ही, किसी चित्र पर प्रयोग करने पर भी उसके मन की बात जानी जा सके, चाहे वह व्यक्ति हजारों मील दूर बैठा हो।

आखिरकार अपने २१ वर्षों के अथक प्रयास के पश्चात **स्वामी प्रियानन्द जी** ऐसी सर्वांगीण तंत्र प्रणाली की खोज में सफल हो गये। इस नवीन प्रणाली में इन चारों ही विशेषताओं का समावेश था। पूज्य गुरुदेव के समक्ष उन्होंने अपने अनुसंधान की प्रामाणिकता को सिद्ध किया और वास्तव में ही इनकी प्रणाली सभी परीक्षणों में खरी उतरी।

इस सम्बन्ध में जो तथ्य ज्ञात हुए उनसे यह स्पष्ट हो गया कि विचारों की कोई भाषा नहीं होती। चाहे व्यक्ति बंगाली हो, मद्रासी हो अथवा अंग्रेज हो, टेलीपैथी सभी पर समान रूप से लागू होती है, क्योकि यह तो व्यक्ति के मन की विचार धारा को पकड़ने की साधना है। जिस क्षण वह कोई विचार अपने मस्तिष्क में लाता है, उसी क्षण वह विचार पूरे वायुमंडल में व्याप्त हो जाता है, और इस से सिद्ध व्यक्ति उसी क्षण विशेष में उन विचारों को ग्रहण कर दूसरों के विचारों को जान लेते हैं।

साधना उपकरण :-

इस साधना में तीन उपकरणों की आवश्यकता होती है जिसे साधक को पहले से ही मंगाकर रख लेने चाहिए -

१ **प्रियंकू माला -** यह एक विशिष्ट माला है जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए।

२ **मनः शक्ति गुटिका-** इसे टेलीपैथी गुटिका भी कहा जाता है यह अपने आप में एक श्रेष्ठ गुटिका होती है जो कि विशेष मंत्रों से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होती है।

३ **मनःशक्ति यंत्र** -यह तांबे पर बना हुआ एक विशेष यंत्र होता है जो मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होता है। गुटिका व यंत्र के संयुक्त रूप से साधना में विशेष प्रभाव व्याप्त हो जाता है।

साधना नियम :-

१. यह साधना मात्र ५ दिनों की है और इसमें नित्य तीन घण्टे देने होते हैं।

२. पूरे साधना काल में एक समय भोजन करना चाहिए। ब्रह्मचर्य व्रत का दृढ़ता से पालन करना चाहिए ।

३. साधना काल में आप अपनी नौकरी या व्यापार में भी संलग्न रह सकते हैं।

४. तीन घण्टे तक एक आसन पर बैठकर जप करना चाहिए।

५. आसन पर किसी भी तरीके से बैठ सकते हैं, पद्मासन लगाना अनिवार्य नहीं है।

साधना विधि :-

सर्वप्रथम साधक स्नान कर पीले वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय । सामने एक लकड़ी के बाजोट पर सफेद कपड़ा बिछा दें । कपड़े के ऊपर एक स्टील या ताम्र प्लेट में **मनःशक्ति गुटिका** और **मनःशक्ति यंत्र** स्थापित कर दें। इन दोनों उपकरणों को जल से स्नान कराकर कुंकुंम या केसर से तिलक करें अक्षत , पुष्प समर्पित करें, सामने शुद्ध घृत का दीपक व अगरबत्ती लगायें। तत्पश्चात **प्रियंकू माला** को भी प्लेट में गुलाब के पुष्पों पर रखकर गुलाब के पुष्पों से पूजन करें, यह क्रम नित्य दोहरायें।

इसके बाद अपने दोनों हाथों में गुलाब का इत्र मल कर माला के ऊपर उन हाथों को फेरना चाहिए जिससे माला सुगन्धित हो जाय, अब माला हाथ में ले लें और प्लेट के बीचों बीच यंत्र को रखकर उसके ऊपर मध्य में गुटिका को रख दें और मंत्र जप प्रारम्भ करें।

(शेष पृष्ठ ६० पर)

मोटापा या थुलथुल शरीर जीवन के लिए अभिशाप ही कहा जाता है जो मोटे होते है वे ही इस बात को समझ सकते हैं कि मोटापा अपने आप में कितना अधिक दुखदायी होता है, वह समाज में तो उपहास का पात्र होता ही है पर साथ ही साथ मोटापा कई बीमारियों को भी शरीर में ले आता है। डायबिटीज या मधुमेह, ब्लड-प्रेशर और इस प्रकार की कई कष्ट साध्य बीमारियां केवल मोटापे के कारण ही आती हैं।

पर अब मोटापा शब्द असम्भव नहीं रहा है इस मोटापे को दूर किया जा सकता है । इसके लिए कुछ उपाय विश्व के वैज्ञानिकों ने अनुभव किये हैं **वे निम्न नौ सूत्र हैं** जिनका पालन करने से ९० दिन में मोटापा दूर हो सकता है-

१. मन से हीन भावना निकाल देनी चाहिए कि वह मोटा है इसके फलस्वरूप वह समाज में उपहास का पात्र है इस बारे में सोचना ही मोटापे को और बढ़ाना होता है। इसीलिए हर समय प्रसन्नचित्त बने रहना चाहिए।

२. मोटे व्यक्ति के लिए यह जरूरी है कि वह सुबह जल्दी उठ जाय, और रात्रि को भरपूर नींद ले, जल्दी उठना मोटापे को कम करना है।

३. कम खाना या उपवास रखने से मोटापा दूर नहीं होता ।

आप उतना भोजन अवश्य करिये जितना आप के लिए आवश्यक है, परन्तु भोजन के पदार्थों में परिवर्तन कर दीजिये, ।इस प्रकार का संतुलित आहार लीजिये कि जिससे आप को संतुलित कैलोरी प्राप्त हो सके।

४. आज से आप सात दिन तक बिल्कुल निराहार रहें, केवल बीच बीच में थोड़ा थोड़ा गुनगुना पानी लेते रहें, आठवें दिन से केवल सलाद या फल या फलों के रस पर समय व्यतीत करें।

५. इस के बाद अगले सात दिनों के लिए दोपहर का भोजन छोड़ दें, किसी भी हालत में गेहूं या आटे से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करें। उबली हुई सब्जियों या सलाद से पेट भरें। घी, दूध,दही, मांस , मछली आदि वसा युक्त पदार्थ का भूल कर भी सेवन न करें।

६. टहलना ही मोटापे को कम करने का सर्वोत्तम साधन है परन्तु भोजन करने के बाद टहलना व्यर्थ है। भोजन करने से पूर्व दो कि.मी. तक तेज चाल से चलना निश्चय ही मोटापे को कम करना है। इसलिए ज्यादा से ज्यादा टहलने की आदत डालिए।

७. ऐसे काम कीजिये जिससे कि आप को शारीरिक परिश्रम थोड़े बहुत रूप में करना ही पड़े । बाजार में आप पैदल चलिये। घर के बाहर टहलिये। कुछ ऐसे कार्य करिये जिससे आप को ज्यादा से ज्यादा चलने का अवसर मिल सके और इस बात का ध्यान रखिये कि अपने दैनिक आहार में पानी ज्यादा से ज्यादा लें। भोजन करने से पहले भी आप पानी से पेट भर लें, जिससे कि आप को कम भोजन करना पड़े।

८. मोटापे को दूर करने के लिए सर्वोत्तम आसन देहासन है। इस के लिए आप अपने पेट को अन्दर डालने का प्रयत्न करिये । दोनों पैरों के बीच एक फीट का फासला रख कर खड़े हों ।आगे की ओर थोड़ा सा झुक कर प्रयत्न करिये कि पेट अन्दर की ओर जाय, ऐसा प्रातः काल पन्द्रह से बीस बार अवश्य करिये।

९. **आयुर्वेद** में एक उत्तम कोटि का पौधा **"विरचिनी "** होता है, जो अपने आप में अद्वितीय है, इस पौधे के जड़ के चूर्ण को सुबह शाम एक -एक रत्ती पानी के साथ लीजिये और ऊपर लिखे सारे नियमों का पालन करिये तो निश्चय ही मात्र ९० दिनों में आप अपना १० किलो वजन कम करके पहले से ज्यादा चुस्त ज्यादा स्वस्थ और ज्यादा सुन्दर बन सकते हैं। ♦

९० दिनों में

दस किलो वजन कम कीजिये इन उपायों से

इन्हें आजमाइये सफलता पाइये

ये गलत कहा किसी ने
तेरा पता नहीं है।
तुझे ढूंढने की हद तक
कोई ढूंढता नहीं है।।

सिद्धाश्रम साधक परिवार,बम्बई

शिष्योपनिषद

शिष्य तो ऐसे होते हैं

लोकेषु धन्यं शिष्योपनिषद् वै
वैशिष्टयजातेन विराजमानं
प्रत्यक्षरम् अप्रतिमं विधानं
दिव्योत्तमं तद् ऋषिभिश्च पूतम्।

संसार के श्रेष्ठतम ग्रन्थों में से एक ग्रन्थ है- ' शिष्योपनिषद ' जिसका एक एक शब्द, एक एक अक्षर दिव्य है, पवित्र है, और उंच्चकोटि के ऋषियों की तपस्या से अनुसिक्त है, यह ग्रन्थ शिष्यों के लिये जाज्वल्य मान हीरक खण्ड है, जिसके प्रकाश में शिष्य एक रजकण से आकाश को छूने की हिम्मत कर सकता है, जो शिष्यों के लिये रामायण महाभारत और गीता की तरह पवित्र दिव्य और मानवता की उच्चतम ऊँचाइयों को लिये हुए है-

चैतन्यं सशरीरं च, गुरुं ज्ञाननिधिं तथा
प्राप्य धन्यं नरोयाति देवोऽपि परिहीयते।।

कई कई जन्मों के पुण्य होते हैं तब कोई मानव की योनि प्राप्त करता है और फिर मानव की योनि प्राप्त करने के बाद वह शिष्य बन जाता है तो जरूर उसके पिछले कई जन्मों के पुण्य उदय हुए होंगे। शिष्यों को तो केवल 'गुरु' का चित्र और नाम ही मिलता है, (जैसे हम "गुरु कबीर दास" के शिष्य हैं पर उन्हें तो कबीर का नाम और चित्र ही मिलता है) अपनी आंखों से तो वशिष्ठ के दर्शन किये नहीं, इसी प्रकार गुरु शंकराचार्य और गुरु गोरखनाथ की शिष्यता प्राप्त होती है और वे धन्य हो जाते हैं पर जिनको साक्षात् शरीर में स्थित जीवित जाग्रत गुरु मिल जाते हैं, उनके भाग्य से तो देवता भी ईर्ष्या करते हैं।

सदेह चैतन्य गुरुं च प्राप्य
तं सेवया न परितोषमेति।
तत्रापि शिष्यत्वं यो न गृह्यते
सौभाग्यदीनः पशुभिः समानः ।।

ऐसे जीवित जाग्रत गुरु मिल जायं, और शिष्य उनकी समीपता प्राप्त न कर सके या उनके चरणों में बैठकर पैर दबाने का अद्वितीय आनन्द न प्राप्त कर सकें,तो ऐसा शिष्य अभागा ही कहा जा सकता है।

शिष्यः कुलीनः धनवांश्च सुन्दरः
तथापि रुक्षः वृक्ष इवेति ।
संस्पृश्य मलयं परिदिध्यमेति,
इमं च सौभाग्यचयेन लभ्यते ।।

शिष्य चाहे कितना ही ऊंचे कुल का हो ,या धनाढ्य हो, सुन्दर हो या बुद्धिमान हो , पर है वह खेजड़ी का रुखा-सूखा ठूंठ ही, जिसमें कोई सौन्दर्य या सुगन्ध नहीं होती ,पर वह जब गुरु रूपी चन्दन के पेड़ से घर्षण करने में सफल हो जाता है,तो वह

रुखा पेड़ भी चन्दन की तरह महकने लग आता है पर ऐसा सौभाग्य तो भाग्य से ही मिल सकता है।

शिष्य त्वं गुरु रेक चरणं
त्यागात्परि पुत्र कुलं परेवं ।
लघुक्षुद्रधार गंगावदेत्वं,
स धन्य रूपं स्वर्णिमददाति ।।

शिष्य की शिष्यता तभी सार्थक होती है,जब वह सब कुछ त्याग कर गुरु चरणों में पहुंच जाय, घर- बार पुत्र ,पत्नी ,समाज, परिवार के त्याग से ही उसमें उच्चता का भाव और तीव्रता आती है, तभी वह गंदानाला रूपी शिष्य गुरु रूपी गंगा में मिलकर पवित्र,उज्जवल और दिव्य बन जाता है, ऐसा होने पर उसका जीवन धन्य निर्मल और स्वर्णिम बन पाता है।

आज्ञाविधानात् पूर्व स शिष्यः
सचेतनः सर्वगतिश्च भूयात् ।
स्वल्पादनः स्वल्पकथावकाशः,
निद्राजितः स शिष्यत्वमेति ।।

शिष्य वह होता है, जो बिना आलस्य किये हरदम सावधान और तत्पर रहे, न मालूम उस सामान्य शरीर की गुरु को कब जरूरत पड़ जाय, गुरु से उठने से पहिले उठ जाय, गुरुदेव के सोने के बाद सोये, और शिष्यत्व के पांचो नियम -१. गुरुदेव के पुकारने पर तुरन्त आंख खुल जाये और आज्ञा पालन को तत्पर हो जाय २. हरदम सचेष्ट और सावधान रहे ३. गुरुदेव की आज्ञा का पहला शब्द सुनते ही उस आज्ञा पालन में तत्पर हो जाय ४. अल्पाहारी हो, और ५. कम बोलने वाला हो।

संकेत व दतं शिष्य
उत्तम मध्यमा वपु।
प्रयादं मेवकार्यत्वं
अधमाधम देवतं।।

जो शिष्य गुरुदेव का हल्का सा इशारा समझकर ही कार्य करे वह उत्तम शिष्य होता है जो आज्ञा मिलने पर कार्य करते हैं वे मध्यम स्तर के शिष्य होते हैं पर जो आज्ञा मिलने पर भी आलस्य वश धीरे-धीरे कार्य करते हैं वे सामान्य या अधम शिष्य कहे जाते हैं।

शान्तश्च दक्षश्च सचेतनश्च ,
उत्थापनं स्याद् गुरुरागमेन ।
ससावधानः न वदेच्चदीर्घ
जागर्ति शिष्यत्वं भावरूपम् ।।

गुरुदेव का पदार्पण होते ही सनसनाहट सी फैल जाय, सभी शान्त और चुप हो जांय, यह कर्तव्य है, गुरुदेव का आभास पाते ही उठकर खड़ा हो जाय, उनके सामने सीधा खड़ा रहे, गुरुदेव के सामने जोर से न बोले या अन्य गुरुभाई को जोर से बोलकर आज्ञा न दे, जंभाई न ले, अव्यवस्थित तरीके से खड़ा न रहे, लेटे नहीं, मूर्ख की तरह बैठ न जाय, या बिना उनकी आज्ञा के प्रलाप न करे, यही शिष्य का शिष्यत्व है।

(शेष पृष्ठ ७२ पर)

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

दीपक शर्मा, गुरदास पुर

प्रश्न : **मुझे विशेष धन लाभ कब होगा?**

उत्तर : आपका नवमेश लग्न स्थित होने से जीवन में धन का अभाव कभी नहीं रहेगा। किंतु नवमेश की महादशा आरम्भ होने पर ही विशेष फल प्राप्त होगा।

करूणेश सिन्हास, मथुरा

प्रश्नः **मेरे साथ लम्बे समय से चल रही रोग की दशा कब समाप्त होगी?**

उत्तर : आपके शुक्र का षष्ठ भाव में स्थित होना आपको सदैव रोग ग्रस्त रखेगा। अतः स्थाई शान्ति का उपाय प्राप्त करें।

दीन दयाल ,महाराजगंज उ.प्र.

प्रश्नः **पड़ोसियों से अनावश्यक रूप से एवं अनायास विवाद हो जाता है, क्या करें?**

उत्तर : आप इस हेतु तांत्रोक्त गृह बाधा निवारण प्रयोग सम्पन्न कर, शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। ज्योतिष उपाय इतने प्रभावी नहीं रहेंगे।

राकेश उपाध्याय , विदिशा

प्रश्नः **मैंने सुना है कि औषधि ग्रहण में नक्षत्र का विवेचन भी लाभदायक रहता है।**

उत्तर : निश्चित रूप से। आप अपने जन्म नक्षत्र में औषधि न लें। मूल नक्ष त्र इस कार्य के लिए सर्वाधिक उपयुक्त नक्षत्र है।

दीपक सिंह, जयपुर

प्रश्नः **मैं होटल मैनेजमेंट के क्षेत्र में जाना चाहता हूं, कृपया उचित मार्ग दर्शन दें।**

उत्तरः आपकी कुण्डली में शुक्र की स्थिति प्रबल नहीं, अतः विशेष सफलता संदिग्ध ही है।

कुसुम गुप्ता , खंडवा

प्रश्नः **पति के स्वभाव में उग्रता हेतु क्या करें?**

उत्तर : आप इस हेतु यदि ज्योतिष उपाय के स्थान पर साधनात्मक उपाय अपनायें तो अधिक उचित रहेगा, वैसे बृहस्पति का दान लाभप्रद रहेगा।

रामानंद , वाराणसी

प्रश्नः **आप कोई उचित धन प्राप्ति का उपाय बतायें?**

उत्तर : आपका कारक ग्रह शनि है अतः शनि से संबंधित वस्तुओं के क्रय विक्रय में भाग लें।

अनुपमा रस्तोगी, लखनऊ

प्रश्नः **मेरे तीन पुत्रियां ही हैं कृपया पुत्र प्राप्ति का उपाय बतायें।**

उत्तर : यद्यपि आपने केवल अपनी ही कुण्डली भेजी है अपने पति की नहीं, फिर भी उपयुक्त रहेगा कि आप पुत्र के लिए पुत्रेष्टि प्रयोग करें जिससे निश्चित सफलता मिल सके।

रूपम भार्गव, नई दिल्ली

प्रश्नः **मैं विमान परिचारिका बनने में रुचि रखती हूं किंतु सफलता नहीं मिल रही ।**

उत्तर : आपके लिए विज्ञापन जगत का क्षेत्र अधिक सफलता दायक रहेगा।

सुखविंदर कौर , लुधियाना

प्रश्नः **मेरे पिता को व्यवसाय में निरंतर घाटा हो रहा है इसका हल बतायें।**

उत्तर : यदि आपके पिता स्थान परिवर्तित कर अपने वर्तमान स्थान से दक्षिण दिशा में जाकर यही व्यवसाय करें तो शीघ्र ही लाभदायक सिद्ध होगा।

◆

आप अपनी समस्या से सम्बन्धित कोई भी एक प्रश्न नीचे दिये गये कूपन में लिखकर भेजें। इस कूपन में लिखी समस्या का ही उत्तर पत्रिका में प्रकाशित होगा ।

कूपन क्रमांक :- १११
नाम :-...
जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्.........
जन्म स्थान .... जन्म समय ....
पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..
....
आपकी एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव
पीतम पुरा, नई दिल्ली-११००३४

जन्मांकों के अनुसार भविष्य

१. जिनकी जन्म तिथि १,१०,१९ या २८ है
पत्नी से विवादों का निपटारा व दाम्पत्य जीवन की श्रेष्ठता । धनागम में विशेष परिवर्तन की स्थिति नहीं। किसी दूर स्थित संबंधी के आगमन से परिवार में उल्लास का वातावरण प्रयास करके जीवन में हंसी खुशी के क्षणों को पकड़ें।
अनुकूल तिथियां - ४,७,२१
प्रतिकूल तिथियां- २,१८,२३
यात्रा -६,१७,२२
सामाजिक सम्पर्क- ६,२१,२८

२. जिनकी जन्म तिथि- २,११,२० या २९ है-
पुत्र की उद्दण्डता से मन में क्षोभ रहेगा। डांटने फटकारने के बजाय समझा कर मार्ग पर लाना ही इस समय की मांग है। मित्र वर्ग से आशा न रखें । अनावश्यक विवाद मे भी न उलझें।
अनुकूल तिथियां ३,११,१८,३०
प्रतिकूल तिथियां- ५,७,२३
यात्रा- १४,१७,२८
सामाजिक सम्पर्क- ६,१७,२९

३. जिनकी जन्म तिथियां ३,१२,२१ अथवा ३० है-
प्रेम प्रसंग में मधुर मिलन होगा आपस के गिले शिकवे दूर होंगे, धन कहीं फँस न जाय इसका ध्यान व्यापारिक सौदों में रखना आवश्यक, रोगो का हल्का प्रकोप।
अनुकूल तिथियां -८, १४, २५ ,३०
प्रतिकूल तिथियां १८,१९,३१
यात्रा ६,११,२७
सामाजिक सम्पर्क-६,६,२५,२७

४. जिनकी जन्म तिथि ४,१३,२२ या ३१ हैं-
कार्यालय मे जो दायित्व आपको सौंपा जाय उसके विषय में पहले विशेषज्ञ रूप में जानकारी प्राप्त कर लें । दायित्व पूर्ण कार्यों को लेकर यात्रा का विचार अभी त्याग दें। कमर दर्द अथवा वात रोग का उभर कर आना भी संभव है । धनागम श्रेष्ठ।
अनुकूल तिथियां- ३,१२,२१
प्रतिकूल तिथियां -८
यात्रा- २१,२३,३०
सामाजिक सम्पर्क- ७,१६

५.जिनकी जन्म तिथि- ५,१४ या २३ हो-
अनुकूल समय । दूर की यात्रायें भी सम्भव मनोनुकूल परिवर्तन। मन में उत्साह साहित्यिक कार्यों के लिए भी अनुकूल समय । आने वाले दिनों में इच्छित कार्यों को पूर्णता देने का आधार भूत समय।
अनुकूल तिथियां - ५,११,१७,२१
प्रतिकूल तिथियां- १४,२८
यात्रा- १३,२७,२६
सामाजिक सम्पर्क- ३,२७,३१

६. जिनकी जन्म तिथि - ६,१५,२४ हैं-
चिंता में अपने क्षणों को नष्ट न करें। जो बीत गया वह अब केवल आपके इस समय को पकड़ने से ही सुधरेगा। उत्तम समय। अपने आप को नये कार्यों में संलग्न करें। मित्रवर्ग आशातीत रूप से सहयोगी रहेगा।
अनुकूल तिथियां- ५,७,२६,३१
प्रतिकूल तिथियां - ४,१३
यात्रा- ३,७,११,२८
सामाजिक सम्पर्क - ५,१८,२३

७. जिनकी जन्म तिथियां ७,१६,२५ है-
अपने स्वभाव में परिवर्तन करें। भावनाओं में बहना उचित नहीं। किंचित सूझबूझ व चतुराई से विवादों का निपटारा करें, अन्यथा हानि भी संभव किसी अनुभवी मित्र से विचार विमर्श कर मार्ग ढूंढें। पारिवारिक स्थिति बहुत अनुकूल नहीं।
अनुकूल तिथियां १,६,१४,२३
प्रतिकूल तिथियां - ५,१८,२७
यात्रा-१७,२४,२७
सामाजिक संपर्क- ३,८,१७,२३

८. जिनकी जन्म तिथि- ८,१७,२६ है-
यदि आपको आकस्मिक रूप से किसी योजना में धन लगाने का प्रस्ताव स्वतः मिले तो बिना हिचक धन लगा दीजिये। यद्यपि भूमि के विक्रय को अभी टाल दीजिए। पत्नी की उपेक्षा उचित नहीं। पुत्र की पढ़ाई पर ध्यान देना उचित ।
अनुकूल तिथियां - २,१८,२२,३०
प्रतिकूल तिथियां- ३,२७,३१
यात्रा - ८,१२,२६
सामाजिक सम्पर्क-८,२२,२६

६, जिनकी जन्म तिथि ६,१८,२७ हो-
व्यापारी बन्धुओं के लिए अनुकूल समय नही इस दौरान वे नये सौदे न करें और अपनी ऋण में गयी पूंजीं को प्राप्त करने का प्रयास करें, सावधान रहें आप पर आक्षेप अथवा चरित्र हनन की स्थिति भी आपके प्रतिद्वन्द्वी ला सकते हैं।
अनुकूल तिथियां -२,२०,२७
प्रतिकूल तिथियां- १,१८,२६
यात्रा: ३,१४,२७,३०
सामाजिक संपर्क - ३,२८

♦

धिक् धनं धिक् बलं धिक् कुलं धिक् विचाष्टितम्।
तेषां नात्पद्यते भक्ति, गुरुर्देवे महेश्वरो ।।

जिसने जीवन में गुरु की भक्ति नहीं की, जो गुरु चरणों के समीप नहीं बैठा जिसने गुरु की सेवा नहीं की, उसके धन को धिक्कार है। उसके कुल, व्यक्तित्व और उच्चता को धिक्कार है।

(पृष्ठ३६ का शेष भाग)

ॐ रक्त ज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ।

अब हाथ में सुगन्धित पुष्प लेकर "यंत्र" में ज्येष्ठा लक्ष्मी की भावना रखते हुए निम्न मंत्र पढ़ें -

ॐ संविनूमये परे देवि परामृत रस प्रिये ।अनन्नां देहि ज्येष्ठायै परिवारार्चनाय मे । अब नौ श्रीफल को जो ज्येष्ठा की नौ शक्तियों के प्रतीक हैं उनको पूर्व दिशा से प्रारम्भ करते हुए क्रमशः निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए स्थापित करने चाहिये-

१. ॐ लोहिताक्ष्यै नमः २. ॐ विरूपायै नमः ३. ॐ करालयै नमः ४. ॐ नील लोहितायै नमः
५. ॐ समदायै नमः ६. ॐ वारूण्यै नमः ७. ॐ पुष्ट्यै नमः ८. ॐ अमोघायै नमः
९. ॐ विश्वमोहिन्यै नमः ।

अब साधक अष्टगंध से इस पूरी सामग्री के चारों ओर एक घेरा बना दें तथा चारों दिशाओं में चार दीपक जलाकर रखें, तथा निम्न ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र की ५ माला का जप अवश्य करें।

ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र :-

ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नम : ।

इसके पश्चात् साधक सारी सामग्री को एक थाली द्वारा ढक दें और दूसरे दिन पुनः इस प्रयोग को संपन्न करें, इस प्रकार सात दिन तक प्रयोग करने के पश्चात् साधक बाद में केवल ज्येष्ठा लक्ष्मी का मंत्र ही जपें।

जो साधक एक लाख मंत्र जप कर लेता है तो उसे जीवन में ऋण संबंधी किसी प्रकार की बाधा का सामना नहीं करना पड़ता है। मंत्र जप पूरा होने पर सारी सामग्री नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। ♦

(पृष्ठ ४० का शेष भाग)

दीक्षा अपने आप में प्रक्रिया के रूप में तो गहन व गोपनीय विषय है किन्तु अपने अर्थों में कोई गूढ़ विषय नहीं है। दीक्षा तो सबसे सरल सीधा उपाय है किसी भी ज्ञान को अर्जित करने का । जैसे वर्षा का जल चारों ओर से बहता हुआ व्यर्थ जा रहा हो उसे एकत्र कर बांध बना दिया जाय । उस एकत्रित जल से बिजली भी बना ली जाय और खेतों में सिंचाई भी कर ली जाय । दीक्षा इसी तरह का प्रयास है। व्यक्ति के अन्दर शक्ति के अणु जो इधर से उधर व्यर्थ से बहते हुये घूमते फिरते हैं उन्हें एक सुसंयोजित ढंग से एक निश्चित दिशा में गतिशील करना ही किसी भी दीक्षा का उद्देश्य होता है, इन्हीं को यदि महाकाली दीक्षा से आबद्ध किया जाय तो वे आन्तरिक रूप से महाकाली की प्राप्ति की दशायें निर्मित करते हैं, यदि लक्ष्मी प्राप्ति की ओर अग्रसर करें तो लक्ष्मी प्राप्ति होती है। इन्हें ही हम यदि सम्मोहन दीक्षा के माध्यम से सम्मोहन प्राप्ति की ओर अग्रसर करें तो व्यक्ति के अन्दर सम्मोहन की अपूर्व दशाएं जाग्रत हो जाती हैं।

जो अपने प्रयासों से अपने अन्दर सम्मोहन शक्ति या चुम्बकीय शक्ति जाग्रत करने का प्रक्रियात्मक उपाय करते हैं, उन्हें भी एक स्तर पर आकर गुरु कृपा प्राप्त करना अति आवश्यक हो जाता है, क्योंकि यह तो प्राण विज्ञान का क्षेत्र है और भारतीय शास्त्रों में गुरु को ही 'प्राण' कहा गया है। ♦

मनुष्य शरीर अपने आप में प्रभु का श्रेष्ठतम वरदान है और जो व्यक्ति इस शरीर को भली प्रकार से समझ लेता है, उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता ।

यह मानव जीवन केवल मात्र धन कमाने या सन्तान पैदा करने के लिए ही नहीं बना है, अपितु इसका मूल उद्देश्य यह है कि हम ऊर्ध्वमुखी बनें हमारा जीवन जिस अंश से बना है, उसी अंश में लीन हो जाए और हम अपने जीवन में ही उस ब्रह्म से साक्षात्कार कर ले जो कि मानव जीवन का परमलक्ष्य और ध्येय होता है।

आज अधिकांश व्यक्ति कुण्डलिनी के बारे में जानते है कि बिना योग्य गुरु के कुण्डलिनी जागरण सम्भव नहीं । जिस मानव की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है,वह उस ब्रह्म के दर्शन तो करता ही है , साथ ही साथ उसके शरीर पर एक विशेष चमक,उसके चेहरे पर एक विशेष आभा उसके मन में एक विशेष प्रकार का निर्मल भाव आ जाता है। वास्तव में ही वे व्यक्ति धन्य है, जिनकी कुण्डलिनी जाग्रत हो चुकी होती है।

हमारे शरीर में मूलतः सात चक्र माने गये हैं जिनमें १.मूलाधार २.स्वाधिष्ठान ३.मणिपुर ४.अनाहत ५.विशुद्ध चक्र ६. आज्ञा तथा ७. सहस्त्रार चक्र,प्रमुख है। मेरुदण्ड के नीचे कुण्डलिनी सोयी हुई अवस्था में रहती है और साधक विशेष प्रयत्न से इस कुण्डलिनी को जाग्रत कर मनोवांछित फल प्राप्त करने में समर्थ हो पाते हैं।

कुण्डलिनी जागरण दो प्रकार से सम्भव है प्रथम तो विशेष आसन प्राणायाम के द्वारा , तथा दूसरे योग्य गुरु के द्वारा शक्तिपात के माध्यम से। जब गुरु देखता है कि प्रयत्न करने पर भी शिष्य कुण्डलिनी जागरण में सफल नहीं हो रहा है,तब गुरु अपने प्रभाव तथा तपस्या के अंश से शिष्य की सोई कुण्डलिनी को जाग्रत कर उसे समर्थ बना देता है और उस शिष्य को वे सभी अनुभव होने लगते हैं जो कि जाग्रत कुण्डलिनी से सम्पन्न व्यक्तियों को होते हैं।

पाठकों और साधकों को अत्यन्त जिज्ञासा रहती है कि कुण्डलिनी जाग्रत होते समय कैसे अनुभव होते हैं मैं कुछ व्यक्तियों के अनुभव नीचे दे रहा हूं जिन्हें कुण्डलिनी जागरण का अनुभव हुआ है और जिन्होंने इस आनन्द को प्राप्त किया है।

जब मेरी कुण्डलिनी जाग्रत हुई

आदिमकाल से लगातार आज तक
सारे धर्म शास्त्रों का निचोड़ यही रहा है कि
मानव जीवन की सार्थकता केवल खाने-पीने-सोने या सन्तान उत्पन्न
करने में नहीं अपितु जीवन को उर्ध्वमुखी बनाकर कुण्डलिनी जागरण में है
भारत में ही नहीं पूरे विश्व में मानव की छटपटाहट यही है कि उसकी कुण्डलिनी
जाग्रत हो जाय, जिससे कि वह स्वयं को तथा ईश्वर को पूर्णता के साथ समझने में सक्षम हो सके।
प्रस्तुत लेख में उन्हीं व्यक्तियों के अनुभव हैं जो इस दिव्यता को पाने में सफल हो सके हैं . . .

पूरे शरीर में विद्युत प्रवाह सा बना रहा.. .

पी.के.तारे,६, बी.एल.लेन,कलकत्ता.

मेरे मन में बार-बार विचार आता था कि मेरा जीवन व्यर्थ जा रहा है, और जब तक मैं किसी योग्य गुरु का आश्रय प्राप्त कर नहीं लूंगा तब तक न तो मुझे अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा और न मैं अपने जीवन में उस अनिवर्चनीय बिन्दु के दर्शन कर सकूंगा जो कि बिरले लोगों को प्राप्त होता है। सेवा से निवृत्त होने के बाद इस ओर मेरा रुझान बढ़ गया मेरा सम्पर्क काफी समय से मंत्र सृष्टा डा० श्रीमाली जी से था जब मैने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने मुझे विशेष आसन और प्राणायाम विधि समझाई, मैं अपने जीवन में ही अपनी कुण्डलिनी जाग्रत कर लेना चाहता था और उन्होंने मुझे आश्वासन दिया था कि यदि मेरे बताये हुए रास्ते पर चलते रहोगे तो निश्चय ही अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर लोगे।

इस बीच मैं हर दो महीने के अन्तराल से जोधपुर जाता रहा और प्रत्येक बार आठ दस दिन तक वहीं रहता, मैं जो कुछ अभ्यास कर रहा था, उन्हें बताता और आगे के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर लेता।

एक दिन जब मैं अपने घर में ड्राईंग रूम में बैठा हुआ प्रातःकाल का अखबार पढ़ रहा था, तो मेरी रीढ़ की हड्डी में सनसनाहट सी अनुभव हुई, और ऐसा लगा जैसे कोई जानवर अन्दर ही अन्दर रीढ़ में ऊपर चढ़ रहा है। मेरे लिए यह विचित्र अनुभव था, और उसी समय मेरा शरीर पसीने-पसीने हो गया ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर पसीने से नहा गया हो मैने अन्दर जाकर अपना कुर्ता खोल दिया परन्तु फिर भी स्वेद बह रहा था, मैं पलंग पर सो गया।

शाम को भी मुझे सनसनाहट अनुभव होती रही, परन्तु अब पसीना आना बन्द हो गया था, और शरीर के अन्दर विशेष गर्मी अनुभव हो रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे शरीर में कोई अग्निपुंज प्रकट हो गया हो और उसकी लपटें बाहर निकलने को आतुर हों। बार-बार मेरा कण्ठ सूखता था और मैं बार-बार पानी पीने को बाध्य होता था।

रात भर मुझे नींद नहीं आई मैं नहीं समझ रहा था कि यह क्या हो रहा है। मैंनेअपने फैमली डाक्टर से सम्पर्क स्थापित किया परन्तु वह भी किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका।

दूसरे दिन भी मेरा शरीर झनझनाता रहा, मै बार-बार बेचैन हो रहा था और कुछ ऐसा अनुभव कर रहा था मेरे शरीर में से कुछ निकलने के लिए आतुर है।।

मैंने पत्नी को अपनी बात समझाई मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं अपनी पत्नी को ज्ञान दूं, और जितना जो कुछ ज्ञान मेरे अन्दर है, वह पत्नी में उडेल दूं।

दिन भर मैं इसी प्रकार उत्तेजित रहा, मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा था, डॉक्टर ने मुझे नींद की गोलियां लेने को कहा, मैंने उन गोलियों को लिया भी, परन्तु मुझे फिर भी नींद नहीं आई।

शाम को जब मैं बाहर लान में बैठा था तो अचानक मेरी आंखें मुंद गई और ध्यान लग गया। मैंने देखा कि मैं एक विचित्र लोक में उड़ रहा हूँ, और उसका दृश्य अपने आप में अद्भुत तथा अनिवर्चनीय है।

जब मेरी आंख खुली तो ज्ञात हुआ कि इस समाधि में एक घंटा लग गया। पत्नी तो लगभग घबरा गई थी और मेरे पुत्र ने समझा कि शायद मै बैठा - बैठा बेहोश गया हूं। उसने डाक्टर बुला लिया था, परन्तु डाक्टर ने नाड़ी तथा हृदय की गति जांच कर कहा कि मैं स्वस्थ हूं और बेहोशी के कोई लक्षण नहीं हैं।

इससे मेरा पुत्र चिन्तित हो गया जब कि वास्तव में मैं बेहोश के समान बैठा हुआ था। जब एक घंटे बाद मेरी आंख खुली तब उनकी जान में जान आई, मैने अनुभव किया कि मैं अत्यन्त हल्का हो गया हूं, मेरा शरीर फूल के समान कोमल और सुगन्धित सा हो गया है, मुझे अपने शरीर से सुगन्ध ा सी निकलती हुई अनुभव हुई। इसके बाद मेरा दिमाग लगभग शांत सा हो गया जो उत्तेजना और गर्मी मैंअनुभव कर रहा था, वह अब नहीं रही और मैं अपनेशरीर में एक विचित्र प्रकार का आनन्द और प्रकाश सा अनुभव करने लगा। पत्नी के अलावा मेरे अन्य परिचितों को भी ऐसा लगा कि मेरे चेहरे पर एक प्रकार की दीप्ति सी आ गई है, मेरी आंखों मे एक विशेष प्रकार की करूणा झलक रही है, और मेरे शरीर से हल्की-हल्की सुगन्ध निकल रही है।

मैं एक सप्ताह बाद ही जोधपुर अपने गुरु के पास पहुंच गया तब मुझे पहली बार गुरुमुख से ज्ञात हुआ कि मेरी कुण्डलिनी जाग्रत हो गई थी और उसी के फलस्वरूप ये अनुभव हो रहे थे।

मेरे सिर से प्रकाश उत्सर्जित होने लगा

प्रकाश सिंह रतूड़ी ग्राम - भौंरा

जिला- शिमला ,हि.प्र.

मेरे जीवन का वह दिन वास्तव में ही सौभाग्यशाली था जिस दिन मेरी कुण्डलिनी जाग्रत हुई, मैं वर्षों से अपने जीवन में यह आशा संजोये हुए था कि किसी दिन मेरी इच्छा अवश्य ही पूर्ण होगी।

मेरा मूल ध्येय मंत्र और तंत्र में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना था, मैने इसके लिए प्रयत्न किये और यह मेरे गुरु की मेरे ऊपर विशेष कृपा रही कि उन्होंने मुझ अकिंचन को इतना अधिक दे दिया कि मैं आज भी अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूं।

तन्त्र के क्षेत्र में जब मैं काफी बढ़ गया तो मुझे गुरु के द्वारा आदेश मिला कि मै कुण्डलिनी साधना प्रारम्भ करूं, इसके लिए अपने गुरु के निर्देशन में ही कार्य प्रारम्भ किया और नित्य छः घंटे तक इसका

नियमित रूप से अभ्यास करने लगा।

इस प्रकार लगभग चालीस दिन बीत गये, एक रात्रि को मैं गुरु के घर से लगे हुए लॉन में बैठा हुआ था, कि मेरी आंखें अचानक मुन्द गईं और मेरे मुंह से अनवरत गायत्री मन्त्र का जाप होने लगा, जब कि मैं उस समय किसी अन्य मंत्र का जाप कर रहा था, वह मंत्र मैं भूल गया और पता नहीं कैसे मेरे मुंह से गायत्री मंत्र का जप प्रारम्भ हो गया।

मुझे यह भी ध्यान नहीं रहा कि मैं कितने समय तक गायत्री मन्त्र का जप करता रहा, परन्तु इतना मुझे अवश्य ध्यान रहा कि मैं अपने आप में हल्का हो गया हूं। मुझे अन्दर ही अन्दर गुरु के क्रोध का डर लग रहा था और मैं उस मन्त्र को याद करने की चेष्टा कर रहा था, जिसे पिछले एक सप्ताह से जप रहा था पर प्रयत्न करने पर भी मुझे वह मंत्र याद नहीं आ रहा था।

प्रातः पांच बजे के लगभग मेरी आंखें मुन्द गई, और मैं समाधि में चला गया। इससे पूर्व इस प्रकार से कभी भी समाधि नहीं लगी थी। मैने इस बार समाधि में देखा कि मैं इस लोक से इतर अन्य लोकों में विचरण कर रहा हूं पर प्रयत्न करने पर भी आंखें खुल नहीं पा रही हैं।

अचानक मैंने अनुभव किया कि मेरे सिर पर किसी का हाथ है, और वह हाथ धीरे - धीरे सिर को सहला रहा है, उनके स्पर्श से मेरी आंखें खुल गई, यद्यपि आंखें खोलने के लिए मुझे काफी परिश्रम करना पड़ा। आंखें खोलते ही मैने देखा कि गुरु देव मेरे सामने खड़े हैं और काफी धूप निकल आई है, शायद मैं समाधि में तीन से ज्यादा घण्टे रहा था।

आंखें खुलते ही पूरे शरीर में झनझनाहट सी अनुभव होने लगी और ऐसा लगा जैसे मेरी उंगलियां बिजली के नंगे तार को छू गई हो, सारा शरीर थरथराने लगा, और मैं सप्रयास गुरु के चरणों में झुक गया।

तब मुझे अनुभव हुआ कि मेरी कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो गई है, और वह आज्ञा चक्र तक पहुंच गई है, इसके बाद लगभग एक सप्ताह तक शरीर में झनझनाहट सी होती रही, और दिन में किसी भी समय मेरी समाधि लग जाती, जबकि इससे पूर्व प्रयत्न करने पर भी समाधि नहीं लगती थी। मेरा शरीर हल्का हो गया था, पता ही नहीं चलता था कि मेरा शरीर है भी या नहीं, यही नहीं अपितु शायद मेरा शरीर हवा में उड़ता हुआ सा अनुभव हो रहा था।

एक सप्ताह में ही मेरा चेहरा भर गया था, चेहरे पर एक विशेष प्रकाश का अनुभव कर रहा था, ऐसा भी अनुभव हो रहा था कि मेरे सिर के चारों ओर एक प्रभामण्डल सा बन रहा है।

इसके बाद तो सहस्त्रार चक्र तक कुण्डलिनी को पहुंचाने में सक्षम हो सका था और बाद में मैंने कुण्डलिनी अमृतीकरण भी किया था, जो कि अपने आप में अद्भुत है, अप्रतिम है अपने आप में विलक्षण है।

मेरा रोम-रोम गुरु के चरणों में नतमस्तक है कि उन्हीं की कृपा से यह सब कुछ प्राप्त हो सका है। मेरा स्वयं कुछ नहीं है, जो कुछ है गुरु का ही है, और उन्हीं की कृपा, आशीर्वाद मेरे जीवन का संबल है। योगीराज गुरुदेव श्री श्रीमाली जी की एक ही शब्द में मेरी अभ्यर्थना है कि -'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्य मेवं समर्पयेत'। ♦

इस माह के व्रत पर्व और त्यौहार

आषाढ़ पूर्णिमा	३.७.९३	गुरुपूर्णिमा
श्रावण कृष्ण पंचमी	६.७.९३	महालक्ष्मी जयन्ती
श्रावण कृष्ण एकादशी	१५.७.९३	कामदा एकादशी
श्रावण कृष्ण त्रयोदशी	१७.७.९३	भाग्योदय जयन्ती
श्रावणी अमावस्या	१९.७.९३	सोमवती अमावस्या
श्रावण शुक्ल तृतीया	२२.७.९३	हरितालिका दिवस
श्रावण शुक्ल चतुर्थी	२२.७.९३	विनायक चतुर्थी
श्रावण शुक्ल पंचमी	२३.७.९३	नाग पंचमी
श्रावण शुक्ल अष्टमी	२६.७.९३	दुर्गा सिद्धि दिवस
श्रावण शुक्ल एकादशी	२९.७.९३	पवित्रता एकादशी
श्रावणी पूर्णिमा	२.८.९३	रक्षा बंधन,गायत्रीजयन्ती

(पृष्ठ ३७ का शेष भाग)

बारीकियों को समझते रहने से, उसकी गुत्थियों में डूबते- उतराते रहने से जीवन के इस अति आवश्यक पक्षऔर मूलभूत चिंतन से परे हट जाता है, सौन्दर्य उसके जीवन से हट जाता है, तब उसके लिए एक मात्र उपाय बचता है कि वह पूर्णता से अप्सरा साधना करें।

अप्सरा का तात्पर्य होता है ऐसी देव वर्ग की स्त्री, जो सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपमेय हो, न केवल चेहरे की सुन्दरता वरन् शारीरिक सौन्दर्य, वाणी - सौन्दर्य, नृत्य, संगीत, काव्य, हास्य-विनोद सभी प्रकार के सौन्दर्यों से भरपूर हो। जिसको देखते ही मन में काम स्फुरण आरम्भ हो ही जाय। अप्सराओं के वर्ग में एक सौआठ अप्सराओं का वर्णन है और इनमें से भी जो अप्सरा एक मत से सर्वाधिक उत्तेजक देह और कामुकता से भरी देह -गन्ध लेकर सामने आती है उसका नाम है **'पुष्प - देहा'**। नाम के ही अनुरूप उसकी देह मानों पुष्प की पंखुड़ियों को ही एकत्र करके बनाई गयी हो, मानों गुलाब की कोमल व नरम पंखुड़ियां जिन पर से ओस की बूंद ढलकी तक न हो, उन्हें आपस में बिना मसले, कोमलता से बांध कर एक नारी शरीर तैयार कर दिया हो, और उसमेंसेगंध फूट रही हो- सारे शरीर को हौले हौले जगाती हुई, जिसकी ताजगी असमय बूढ़े पड़ गये मन में जवानी के भीगे-भीगे दिनों की याद दिला जाय अत्यन्त उन्नत ऐसा वक्ष-स्थल जो व्यक्ति की कल्पना से भी परे हो, कि उनके बोझ से सारा शरीर लचक लचक जा रहा हो, और देखने में ऐसा कि मानों कोई गुलाब का खिला पुष्प ही लेकर मसल दिया गया हो, जैसे कि कोई पेड़ फूलों से भर गया हो और सीधा खड़ा न रह पा रहा हो, ऐसा ही जवानी से भरा मादक शरीर - जो साधक के ऊपर जादू करने को तैयार हो ऐसा सौन्दर्य ! जिस किसी ने भी पुष्प देहा की साधना की वह उसको पहली बार देखकर ही कामोत्तेजना से सुधबुध खो बैठा है और कई-कई दिनों तक उसकी आंखों के आगे केवल पुष्पदेहा का चेहरा और उफनते वक्ष स्थल वाला शरीर नाचता रहा है। शारीरिक मादकता की दृष्टि से और व्यक्ति को पहली बार में ही बेसुध कर देने वाले सौन्दर्य से युक्त जो अप्सरा है उसी का नाम है **"पुष्प देहा"** यानि जिसकी देह ही पुष्प हो। विशेष बात तो यह है कि **अप्सरा स्वयं ही इस धरा पर विचरण करती रहती है कि श्रेष्ठ पुरुष, श्रेष्ठ साधक जिनके अन्दर कामनायें और इच्छायें लबालब भरी हों - उसे सिद्ध कर अपनी बाहों में समेट लें**। यदि ऐसे सौन्दर्य को अपनाने के लिये एक बार नहीं बार-बार साधना करनी पड़े तब भी कोई घाटे की बात नहीं, पुष्प देहा के संपर्क में जो भी साधक आये हैं वे एकाएक कामोत्तेजना और यौवन की ऊष्मा से इतने अधिक भर उठे कि उनके अन्दर स्वतः कायाकल्प की प्रक्रियायें आरम्भ हो गईं। पुष्प देहा की अभी तक जो साधना विधि प्रचलित थी वह मंत्रोक्त पद्धति से थी जिसमें मंत्र जप के अतिरिक्त अंग न्यास, कर न्यास, विनियोग और मुद्राओं का लम्बा क्रम था तथा सफलता की संभावनायें भी प्रबल नहीं रहती थीं। इस कठिनाई को समझ **गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी** ने साबर पद्धति ढूंढ निकाली। उन्होंने दोनों विधियों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया और निश्चित रूप से बताया कि इस पद्धति में सफलता की संभावनायें शतप्रतिशत हैं।

साधना विधि

यह केवल चार शुक्रवारों की साधना है जिसमें वस्त्र, आसन, दिशा किसी का भी कोई महत्व नहीं, आवश्यक है तो व्यक्ति के मन में उत्साह, उमंग, सुगन्धित द्रव्य, मधुर संगीत और कामनाओं से भरा मन। इस साधना में एक सौ आठ गुलाब के पुष्पों की एक माला आप स्वयं धारण करें तथा एक माला पास में रख लें जब आपके समक्ष पुष्प देहा प्रगट हो तब प्रयुक्त करें सामने चांदी के पात्र में गुलाब की पंखुड़ियां बिछा कर उस पर **साबर मंत्रों से सिद्ध पुष्पदेहा अप्सरा यंत्र** स्थापित करें। सामान्य अथवा प्रयुक्त किया हुआ यंत्र इस साधना में लाभप्रद सिद्ध नहीं होगा, इत्र का दीपक जलायें जो सम्पूर्ण साधना में जलता ही रहे। इस साधना में जिस विशेष साबर मंत्र का मंत्र जप किया जाना है वह केवल हकीक माला से ही संभव है तथा यह **हकीक माला**, अप्सरा माला के रूप में भविष्य में भी लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। इसमें निम्न **२१ माला मंत्र जप एक ही रात में पूर्ण करना होता है।**

मंत्र

ह्रीं ग्लीं ब्लौं पुष्पदेहा पूर्ण सुख सौभाग्य देहि देहि मम् वश्यं ब्लौं फट्

इस प्रकार चार शुक्रवार करें तो सफलता मिलती है फिर जब कभी प्रयोग करना हो तो उस यंत्र को धारण कर मात्र ग्यारह बार मंत्र उच्चारण करने पर पुष्प देहा सशरीर साधक के सामने उपस्थित होती है, तथा साधक उसे जो भी आज्ञा देता है वह पुष्पदेहा अवश्य ही पूरा करती है, धन ऐश्वर्य सुख एवं जनोनुकूल रति तुल्य आनन्द देना ही पुष्प देहा का कर्त्तव्य होता है। ◆

पौराणिक गाथा का एक उज्ज्वल पृष्ठः-

गुरु हि परमं गतिः

महर्षि याज्ञवल्क्य श्रेष्ठ तत्वदर्शक हैं, परन्तु उनका मन गृहस्थ से ऊब गया है। वे गृहस्थ में रहना नहीं चाहते,उनका चिन्तन ऊर्ध्वमुखी होता जा रहा है।

ऋषि की दो पत्नियां थीं-मैत्रेयी और कात्यायनी।

ऋषि ने मैत्रेयी से कहा-"मैं जीवन का शेष भाग परम ज्योति के दर्शन हेतु लगाना चाहता हूं इसलिये मैं ऊर्ध्वमुखी होकर साधना सम्पन्न करने की इच्छा रखता हूं। मैं आज ही तेरा कात्यायनी के साथ बंटवारा कर देना चाहता हूं, मेरे इस आश्रम में जो भी धन -सम्पदा है उसके दो भाग कर देता हूं, एक भाग तेरा और दूसरा कात्यायनी का।"

क्या इस धन से मैं अमर हो सकती हूं?मैत्रेयी ने पूछा।

इस आश्रम की सम्पदा तो क्या, यदि पृथ्वी की सम्पूर्ण सम्पदा भी प्राप्त हो जाय तब भी उससे अमर नहीं हो सकती, इससे परम पद या ब्रह्म ज्योति के दर्शन प्राप्त करना सम्भव नहीं है--याज्ञवल्क्य का स्पष्ट उत्तर था।

तब उस सम्पदा को लेकर मैं क्या करूंगी? यह धन दौलत पुत्र , बान्धव , आश्रम आदि मेरे क्या काम के, जिससे कि मेरा कल्याण न हो सकें यह सारी सम्पदा मेरे जीवन में क्या काम की, यदि मैं स्वयं का कल्याण न कर सकूं और जीवन को ऊर्ध्वमुखी न बना सकूं, यदि आप मुझे भोग देना ही चाहते हैं तो मुझे ऊर्ध्वमुखी होने की प्रक्रिया समझाइये, उस परम ज्योति के दर्शन करने की विधि बताइये, जिससे कि मैं अमर हो सकूं,वही मेरा सच्चा भाग होगा-मैत्रेयी ने निश्चयपूर्वक याज्ञवल्क्य से निवेदन किया।

पर उस पथ का ज्ञान तो गुरु ही दे सकता है, मैं तेरा पति हूं परन्तु **जब तक तुझ में शिष्यत्व भाव जागृत नहीं होगा तब तक मैं वह ज्ञान नहीं दे सकूंगा, ज्ञान के लिये शिष्यत्व प्राप्त करना जरूरी है, इसके लिये आवश्यक है कि तुम पूर्ण समर्पण भाव से गुरु की बन सको।** अभी तक तो तुम मेरी पत्नी थी, शिष्या नहीं, पत्नी को भाग दिया जा सकता है, अमरत्व ज्ञान तो शिष्या बनने पर ही सम्भव है--याज्ञवल्क्य ने स्पष्ट व्याख्या की।

तब मैत्रेयी ने शिष्यत्व स्वीकार किया और याज्ञवल्क्य को पति के स्थान पर गुरु के रूप में देखा,और उनसे ब्रह्म विद्या का उपदेश प्राप्त किया । याज्ञवल्क्य ने आत्मा का गूढ़ रहस्य खोलकर उसके सामने रख दिया।

कई उदाहरण देकर गुरु याज्ञवल्क्य ने शिष्या मैत्रेयी को आत्म तत्व का दर्शन कराया और मैत्रेयी ने उस गूढ़तम ज्ञान -,ब्रह्म का रहस्य प्राप्त कर लिया।

और इतिहास साक्षी है कि कात्यायनी हमेशा हमेशा के लिये धन सम्पदा लेकर समाप्त हो गई, जबकि मैत्रेयी ने कुछ भी भौतिक सम्पदा न लेकर युगों-युगों तक के लिये अमर हो गई।

वस्तुतः शिष्य समर्पण होता है, शिष्य मिलने की प्रक्रिया होती है, जब शिष्य पूर्णता के साथ गुरु में मिल जाता है तभी वह अमरत्व प्राप्त करने में सफल हो पाता है और यही जीवन की पूर्णता है, श्रेष्ठता है,दिव्यता है।♦

क्षौणी पतित्व मथ वैकम किंचनत्वं,नित्यं ददासि बहुमान मथापमानम्।
वैकुण्ठवास मथवा नरके निवासं,गुरुदेव देव! ममूनास्ति गतिस्त्वदन्या।।

गुरुदेव! आप मुझे पृथ्वीपति बना दीजिये, चाहे परम दरिद्र। नित्य सम्मान प्रदान कीजिये, अथवा अपमान। वैकुण्ठ में वास दीजिये चाहे नरक में रखिये,परन्तु हे गुरुदेव! आपसे भिन्न मेरी तो और कोई गति नहीं है।।

(पृष्ठ ११ का शेष भाग)

गुरु ही मृत्यु है :-

शास्त्रों में गुरु को मृत्यु भी कहा गया है क्योंकि वह शिष्य की त्वरित मृत्यु का कारण बनता है, नष्ट करता है उसके अब तक के संचित कर्मों को झूठी संपदा को, संस्कारों को। शिष्य के पाखण्ड , उसकी सन्देहशीलता , उसकी न्यूनता, उसका ओछापन और उसकी निर्लज्जता को मृत्यु देता है। वह मृत्यु देता है कि शिष्य के चित्त पर हृदय पर जो कुछ स्याह है, कालापन है वह समाप्त हो जाये, जो कुछ व्यर्थ है, निस्सार है, वह मर जायें तब फिर वह नये सिरे से निमार्ण करें, देवदूत की तरह, अद्वितीय मानव की तरह, दुर्लभ शिष्य की तरह। शिष्य की आस्था को ही बदल देना चाहता है वह ताकि शिष्य पूरी तरह मिट सके।

और यह मृत्यु ही महाजीवन का प्रारम्भ होती है। शिष्य मिटा नहीं कि उसके भीतर का परमात्मा दृष्टव्य हो जाता है। बड़ा विचित्र खेल है, यह ठीक वैसे ही जैसे बीज का माटी में खोकर अंकुरित होना। खोना जरूरी है, मिटना अनिवार्य है। जब तक शिष्य बीज के आवरण को ही अपना प्राण समझता है, उसे खोने से डरता है तभी तक वह अन्धकार में डूबा है। गुरु उसे स्पष्ट करता है कि यह तो मात्र आवरण है, प्राण तो इसके भीतर है आवरण हटेगा तभी प्राणों का अंकुरण होगा, तभी वृक्ष का जन्म होगा, तभी करोड़ों बीजों का अस्तित्व होगा।

पर स्वप्नों से निकलना इतना सुगम नहीं। बड़ी मीठी नींद है यह । कोई सम्राट बना बैठा है, कोई स्वर्ग की सैर कर रहा है तो कोई स्वर्ण महल में विश्राम कर रहा है और अगर कोई इस नींद से जगाता है तो बड़ी व्याकुलता होती है उसे, जब कोई इस नकली घेरे से बाहर निकालने की क्रिया करता है तो पीड़ा होती है क्योंकि वह उसी

सद्गुरुदेव

मृग मरीचिका में प्रसन्न है। पर सद्गुरु से नजर मिलते ही एक -एक कर सब लुटने लगता है, वे अपने शिष्य की सभी मिथ्या आशायें,संतोष ,सांत्वना, आस्था और मान्यताएं सब छीन लेते हैं , और जैसे जैसे खोखली संपदा छिनेगी शिष्य घबरायेगा, अन्धकार उसे घना होता प्रतीत होगा और सारी बैसाखियां हटते ही वह एकदम से गिर जायेगा, पर यह गिरना ही उसके अपने पैरों पर खड़े होने की प्रथम शुरुआत होगी। प्रत्येक पूर्णिमा के पहले अमावस्या तो आयेगी ही, गहन रात्रि के बाद ही प्रभात का सूर्य उदय होगा।

यह क्षण तो दुर्लभ है : -

प्रत्येक के जीवन में ऐसा क्रांति घटित नहीं होती यह कोई आवश्यक नहीं कि सद्गुरु मिल ही जाये, जो ठोकर मार कर जगा दें, सत्य की प्रतीति करवा दें ऐसा क्षण तो हजारों वर्ष बाद ही आता है जब सद्गुरु स्वयं आकर साकार रूप में उपस्थित हो शिष्य को पुकारता है, झकझोरता है, उसके जीवन को संवारने का प्रयत्न करता है, जो जीवन में बेसुध ही रहेंगे,पूरी जिन्दगी उनके हाथ से निकल जायेगी और एक बार पुनः ये सब बुद्धत्व से, पूर्णत्व से वंचित रह जायेंगे। वही क्षण जीवन का सर्वश्रेष्ठ क्षण होता है, सौभाग्यदायक क्षण होता है जबकि हमारे मृत प्रायः जीवन में ऐसे व्यक्तित्व का पदार्पण हो जिसका हमारे ऊपर अधिकार हो, जो हमें अपने प्राणों का अंश मानता हो, जो हमारे मिथ्या भ्रमजाल को तोड़ने की सामर्थ्य रखता हो इस मृगतृष्णा से निकाल कर उस परमसत्य से साक्षात्कार करने की हिम्मत रखता हो, और यह नींद से जागना ही ज्ञान को प्राप्त करना है, अपने आप में चेतना को अनुभव करना है,अपने आप में बुद्धत्व के दर्शन करना है और यह जागना ही जीवन के परम सत्य से परिचित होना है, पर यह आमूल रूपान्तरण उस व्यक्तित्व के बिना संभव नहीं जिसे सद्गुरु कहा गया है, जिसकी प्रशंसा संसार के सभी ग्रन्थों ने एक स्वर से की है।

प्रकृति रूपी गुरु :-

जन्म लेते ही बालक से गुरु का संबध स्थापित हो जाता है। प्रकृति को गुरु ही माना है। पशु पक्षियों के बच्चे प्रकृति में ही जन्म लेते हैं प्रकृति रूपी गुरु से उनका सीधा सम्बन्ध जुड़ जाता है और वह कुछ ही समय में अपने पावों पर खड़ा हो जाता है, विचरण करने लग जाता है। पक्षी पंख फैलाकर उड़ने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

पर मनुष्य को कई वर्ष लग जाते हैं इस क्षमता को प्राप्त करने में क्योंकि वह प्रकृति से कटा हुआ है, शुद्ध प्रकृति से उसका सीधा संबध नहीं जुड़ पाता, प्रकृति रूपी गुरु की थपथपाहट उसे अनुभव नहीं होती अतः जीवन के क्रिया कलाप सीखने में उसे वर्षों लग जाते हैं, यह मानव जीवन की विडंबना या न्यूनता ही कही जायेगी। इसी लिए यह भी स्वीकारा गया है कि जिसने प्रकृति को समझ लिया, आत्मसात कर लिया वह सद्गुरु को भी समझ सकता है क्योंकि, सद्गुरु भी महाप्रकृति से संबधं जोड़ देते हैं, सम्पर्क सूत्र स्थापित कर देते हैं।

(शेष पृष्ठ ५६ का)

कैसे हो यह मिलन ?

जो वास्तव में जाग्रत है, प्राण ऊर्जा से आपूरित हैं, अदृश्य जिन्हें आकर्षित करता है, जो अज्ञात की खोज पर निकल पड़ते हैं इतने साहस से कि चाहे रात्रि की गहन कालिमा हो चाहे तूफान का झंझावात उठ रहा हो, चाहे मर मिटने का डर हो पर रुका नहीं जा सकता, उन्हें गंतव्य मिल ही जाता है। कहावत भी है, जब शिष्य तैयार हो जाता है, सद्गुरु स्वयं प्रत्यक्ष हो जाते हैं।

पर यह मिलन किस रहस्यपूर्ण ढंग से होगा, किस क्षण होगा कहां तार मिल जायेंगें, किसी को ज्ञात नहीं। प्रकृति की बड़ी अद्भुत लीला है यह, और सद्गुरु से नजरें मिलते ही एक चिंगारी सी प्रज्वलित होती है जिसमें शिष्य का सारा अहंकार,लोभ, मोह, तृष्णाएं जल कर खाक हो जाती है उसकी अंतरात्मा ही मानों बदल जाती है। गुरु रूपी पारस का स्पर्श होते ही अमूल्य कुन्दन्न बन जाता है वह, और यह सब कुछ घटित होता है क्षण भर में ही, युगों की आवश्यकता नहीं है।

ऐसा ही सद्गुरु शिष्य की अन्तर शक्ति जगाकर उसे आत्म आनन्द में रमण कराता है, शक्तिपात द्वारा देह को पाप ताप से रहित कर दिव्य कुण्डलिनी जगाता है, योग की शिक्षा देता है, ज्ञान की मस्ती देता है, भक्ति का प्रमाण देता है, कर्म में निष्कामता सिखा देता है। ऐसे ही सद्गुरु के प्रसाद से शिष्य रूपी नर भी नारायण स्वरूप बनकर आनन्द मग्न हो जाता है।

जब तुम्हें जीवन के किसी मोड़ पर कोई चेतना पुंज , कोई जाग्रत व्यक्तित्व मिल जाय , तो अपनी इसी जिन्दगी में दौड़कर उससे मिल लेना , डूब जाना उसके प्रवचनो में समा जाना उसके व्यक्तित्व में, क्योंकि जीवन में ऐसे क्षण कभी कभी ही आते हैं और वे क्षण यदि चूक गये तो फिर तुम्हारे पास पछताने के अलावा कुछ भी नहीं बचेगा, इसीलिए तो कहता हूं,कि जब जाग्रत चैतन्य सद्गुरु मिल जाय, तो अपने आपको समर्पित कर देना, और इस समर्पण से तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा, जिसे सत्यम्-शिवम्- सुन्दरम् और ब्रह्मानन्द कहा है। ♦

(पृष्ठ १६ का शेष भाग)

यदि कोई है तो उसे हम समझ नहीं रहे हैं, जब हम कुछ समझने लगेगें तब बहुत समय बीत गया होगा। इस तरह हम अनेक बार धोखा खा चुके हैं क्योंकि जो महान गुरु आये ,उसे हम पहले ही नहीं पहचान पाये, क्योंकि हमारे समझने की पद्धति ही गलत थी हमारे इतिहास साक्षी है और हमेशा यह हमारी परम्परा रही है कि गुरु को सेवा के द्वारा ही समझा गया है, सेवा केद्वारा ही पाया गया है। कृष्ण को भी उस दिव्य ज्ञान की उपलब्धि के लिए सांदीपन आश्रम में गुरु के पास जाकर उतनी ही सेवा और वैसी ही सेवा बारह वर्ष तक करनी पड़ी , जो उस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त थी, और सेवा कें द्वारा कृष्ण महान बन पाये। इसलिए आप सौभाग्यशाली है, आप के पास अद्वितीय चेतना युक्त, दिव्यतम गुरु विद्यमान है । जिस उद्देश्य के लिए वे यहां पृथ्वी लोक में आये हैं, उस कार्य को पूर्णता देने के लिए उनके ज्ञान को उनके विचारों को तथा चेतना को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करें। आप की सेवा जितनी अधिक सटीक और निश्छल होगी , गुरु की शक्ति स्वतः हीआप में उतरती जायेगी। गुरु तो सुगन्ध का झोंका है। सिद्धियों का संघ है जहां अनुकूलता मिलेगी वहां समा जायेगा। उसे सुवासित कर देगा और आनन्दित कर देगा। अतः शिष्य के लिए गुरु सेवा ही तपश्चर्या है गुरु सेवा -सर्वोत्तम साधना है। ♦

कह दिया वो मंत्र हुआ,
कर दिया वो तंत्र हुआ।
जिसको भी स्पर्श किया ,
वो ही वस्तु यंत्र हुआ ।।

- अजय कृष्णा

दृष्टान्तो नैव दृष्टं स्त्रिभुवन जठरे
सद्गुरोर्ज्ञान दातु।
स्पर्शश्चेतत्र कल्प्यः सनयति यदहो
स्वर्णतामश्म सारम्।

न स्पर्शत्वं तथापि श्रित चरणयुगे
सद्गुरुःस्वीय शिष्ये।

स्वीयं साम्यं विधत्ते भवति निरुपम
स्तेन वा लौकिकोऽपि ।।

अर्थात् इस त्रिभुवन में गुरु की उपमा देने लायक कोइ दृष्टान्त नहीं है, गुरु को पारस की उपमा नहीं दी जा सकती ,क्योंकि पारस तो मात्र सोना ही बनाता है, उस वस्तु को पारस नहीं बना सकता, परन्तु सद्गुरु तो अपने शिष्य को स्वयं के समान ही बना लेता है।

शक्तिपात करते समय गुरु अपने पास जो साधना एवं सिद्धियों का समुद्र है, वह शिष्य में उंडेल देता है, और शिष्य में ऐसी क्षमता पैदा कर लेता है, कि उसमें उन सिद्धियों को समाहित करने की शक्ति आ जाय।

-शंकराचार्य

(पृष्ठ ३२ का शेष भाग)

१८. घी का दीपक १६.नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद २०. पांच फल २१ इलायची।

साधना प्रयोग :-

सर्वप्रथम स्नान कर शुद्ध सफेद धोती पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायें और अपने बाएं हाथ में जल ले कर दाएं हाथ से शरीर शुद्धि की प्रार्थना करते हुए जल छिड़कें, फिर सामने रखे कलश की प्रार्थना करते हुए जल छिड़के, फिर सामने रखे कलश को चावल की ढेरी पर स्थापित कर उसके चारों ओर कुंकुम या केसर की चार बिंदियां लगा दें, यह घट स्थापना सभी तीर्थों का प्रतीक है ,तत्पश्चात् कलश में से थोड़ा सा जल अपने हाथ में ले कर संकल्प करें-

'' मैं (अपना नाम ,गोत्र तथा शहर का नाम लें) अपने गुरु को साक्षी रखते हुए अपनी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु श्रावण मास साधना सम्पन्न कर रहा हूं , भगवान शिव मेरा पूजन सफल करें।'

इसमें जिन -जिन कार्यों की पूर्ति का विवरण दिया हो या आपकी जो भी इच्छा हो, उसका उच्चारण कर सकते हैं, या मन में बोल सकते हैं।

गणेश पूजन

फिर सामने स्टील या चांदी की प्लेट में कुंकुम से स्वास्तिक बना कर गणपति को स्थापित करें यदि गणपति की मूर्ति नहीं हो तो एक सुपारी रख कर उसे गणपति मान कर उस पर जल चढ़ा कर पोंछ कर केसर लगाकर , सामने नैवेद्य और फल रख दें, ऊपर पुष्प चढ़ावें और फिर हाथ जोड़ कर गणपति का ऋद्धि - सिद्धि सहित आह्वान करें और एक माला **'' ॐ गं गणपतयै नमः''** मन्त्र का जप करें।

फिर गणपति को किसी अलग स्थान पर स्थापित कर दें और सामने पात्र में **''सर्वकाम्य सिद्धि यन्त्र''** को स्थापित करें, इससे पहले ही कामेश्वर शिव के प्रामाणिक चित्र को फ्रेम में मढ़वाकर रख देना चाहिए और उसे जल से धो कर पोंछ कर , केसर लगा कर पुष्प लगा कर पुष्प माला पहना देनी चाहिए।

पात्र में सर्व काम्य सिद्धि यन्त्र के साथ -साथ **''साफल्य प्राप्ति रुद्राक्ष '' 'कल्पवृक्ष वरद ' 'सिद्धि प्राप्ति युक्त गोमती चक्र' 'ऋद्धि सिद्धि यन्त्र ' तथा ' सर्वकाम्य सिद्धि विग्रह '** को भी रख देना चाहिए।

फिर शुद्ध जल में थोड़ा सा कच्चा दूध और गंगाजल मिलाकर **'' ॐ नमः शिवाय''** मन्त्र का उच्चारण करते हुए इन सब पर जल चढ़ावें , पतली -पतली धार से लगभग पांच मिनट तक चढ़ाते रहें, साथ ही दूध, दही, घी, शहद , शक्कर , पंचामृत जल से भी स्नान करावें, फिर शुद्ध जल से धो लें , फिर इन सभी विग्रहों को बाहर निकाल कर शुद्ध वस्त्रों से पोंछ लें और अलग पात्र में स्थापित कर लें , तत्पश्चात् इन सभी विग्रहों पर निम्न मन्त्र पढ़ते हुये केशर और कुंकुम लगावें।

नमस्सुगन्धदेहाय ह्यबन्यफलदायिने।
तुभ्य गन्धन् प्रदास्यामि चानकासुरभन्जन।।

फिर इन सभी पर धीरे-धीरे पुष्प की पंखुड़ियां डालते हुए **'ॐ नमः शिवाय''** शिव मन्त्र का जप करते हुए इन्हें सिद्धि युक्त बनावें।

इसके पश्चात् भगवान शिव पर और इन सभी यन्त्रों पर अबीर -गुलाल और अक्षत चढ़ावें तथा पुष्प तथा पुष्पमाला समर्पित करें।

इसके बाद सर्वकाम्य सिद्धि पैकेट में जो **'रुद्राक्ष माला'** है, उसके द्वारा मन्त्र जप करें, इसमें रूद्राक्ष माला सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, इसमें ग्यारह माला जप इन यन्त्रों और विग्रह के सामने करना आवश्यक है।

पहले सोमवार का मन्त्र

।। ॐ लक्ष्मी प्रदाय ह्रीं ऋणमोचने श्रीं देहि देहि शिवाय नमः।।

दूसरे सोमवार का मन्त्र

।।ॐ महाशिवाय वरदाय ह्रीं ऐं काम्य सिद्धि रुद्राय नमः।।

तीसरे सोमवार का मन्त्र

।। ॐ महादेवाय सर्वकार्य सिद्धिं देहि देहि कामेश्वराय नमः।।

चौथे सोमवार का मन्त्र

।।ॐ रुद्राय शत्रु संहारय क्लीं कार्यसिद्धाय महादेवाय फट्।।

पांचवे सोमवार का मन्त्र

ॐ पंच तत्वाय पूर्ण कार्य सिद्धिं देहि देहि सदाशिवाय नमः ।।

ये सभी मन्त्र अद्वितीय और महत्व पूर्ण हैं यह हम लोगों का सौभाग्य है कि हमारे जीवन काल में ऐसा महत्वपूर्ण अवसर उपस्थित हुआ है, जिसका हम पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं।

प्रत्येक सोमवार का मन्त्र जप करने के बाद इन सभी यन्त्रों को अलग पात्र में रख देना चाहिए और नित्य इनके सामने सुबह शाम अगरबत्ती व दीपक लगाकर दिन में एक बार **''ॐ नमः शिवाय''** मन्त्र की एक माला अवश्य फेरनी चाहिए।

इस दिन सिद्ध किये हुए यन्त्रों को पूजा स्थान में लाल वस्त्र में बांध कर किसी स्थान पर रख देना चाहिए।

भगवान शिव तो सर्वाधिक दयालु और तुरन्त वरदान देने वाले महादेव हैं, अतः इन प्रयोगों एवं साधनाओं का फल तुरन्त प्राप्त होता है और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है। ♦

अब आप अपनी आंखों से मोटे मोटे लेंस के चश्मे हटा दीजिये

चश्मा सुन्दरता का शत्रु होता है जिस लड़की के चेहरे पर चश्मा होता है वह अपने आप में हीनता से ग्रस्त हो जाती है। पुरुष भी उसे पसन्द नहीं करते, विवाह के समय बहुत बाधायें आती हैं। इसी प्रकार जिन पुरुषों की आंखों पर चश्मा चढ़ा होता है वे बिना चश्में की सहायता से कोई कार्य नहीं कर पाते, खेलकूद नहीं सकते ,और एक प्रकार से उनका जीवन चश्मे का दास बन जाता है।

इस बात को अपने मन में भली प्रकार से समझ लीजिये कि चश्मे से आंख ठीक नहीं होती अपितु चश्मा पहिनने से आंख ज्यादा से ज्यादा खराब होती जाती है , इसी वजह से प्रति वर्ष चश्मे का नम्बर बढ़ता जाता है। यदि चश्में की सहायता से आंखे ठीक हो रही होती तो चश्मे का नम्बर घटना चाहिए था परन्तु हकीकत में ऐसा नहीं होता अपितु प्रतिवर्ष आधा या एक नम्बर बढ़ ही जाता है, यह इस बात का सूचक है कि आप कि आंखे ठीक नहीं हो रही है अपितु पहले की अपेक्षा ज्यादा खराब हो रही है।

डॉक्टरों ने और पश्चिम की मीडिया ने विज्ञापनों के माध्यम से एक प्रकार का मानसिक दबाव हम पर डाल दिया है कि चश्मा आंखों को ठीक कर सकता है ,जबकि चश्मे की वजह से आंख अपना नैसर्गिक गुण खो बैठती है, उसकी मांस पेशियां काम करना बन्द करने लगती हैं क्योंकि चश्मे की वजह से उन मांस पेशियां को काम करने का अवसर ही नहीं मिलता । वे स्थिर हो जाती हैं और इस वजह से आंख ज्यादा कमजोर और असुन्दर हो जाती है ,आंखों, के तीन रोग होते हैं-

दूर दृष्टि रोग - जिसकी वजह से व्यक्ति दूर की वस्तु को भली प्रकार से नहीं देख पाता।

निकट दृष्टि रोग - जिसकी वजह से व्यक्ति पुस्तक या अखबार भली प्रकार से नहीं पढ़ पाता है।

आंखों के रोग - चोट लगने से या रतौंधी के कारण या मोतिया बिन्द हो जाने के कारण । पर यह बात आप अच्छी तरह समझ लें कि दवाइयों से ये आंखों के दोष दूर नहीं हो सकते इस के लिए मैं कुछ नियम बता रहा हूं जिसकी वजह से मैं १८ नम्बर का मोटे मोटे लेन्सों वाला चश्मा फेंकने में समर्थ हो सका हूं और आज मैं बिना चश्में के अपना सारा कार्य भली प्रकार से करने में समर्थ हो सका हूं।

१. पाचन संस्थान -

यह बात तो अब निश्चित हो चुकी है कि खान पान या पाचन संस्थान में दोष की वजह से आंखें खराब हो सकती हैं। हम जो भी भोजन करते हैं उसका सीधा प्रभाव हमारे स्नायु संस्थान पर पड़ता है, फलस्वरूप आंखों के आस पास जो नाड़ियों का गुच्छ होता है वे कड़ी हो जाती है, आंख अपना नैसर्गिक गुण खो बैठती है ,अतः आंखों को ठीक रखने के लिए खान पान का संयमित होना अत्यधिक जरूरी है -

क. यथा संभव कम भोजन करें। सप्ताह में पांच समय बिना भोजन के रहें, यदि आप शाम को भोजन करना चाहें तो दोपहर का भोजन छोड़ दें । दोपहर में केवल सलाद या फलों का रस स्वीकार करें।

ख. शाम के भोजन में सलाद ज्यादा हो, उबली हुई सब्जियां ज्यादा से ज्यादा लें। चपाती एक या दो ही लें। आलू चावल या जमीन से निकलने वाले कन्द भूल कर भी सेवन न करें। वसायुक्त पदार्थ, घी, दूध , पनीर, मक्खन , मांस , मछली इत्यादि का बिल्कुल निषेध कर लें।

ग. सप्ताह में एक या दो दिन बिल्कुल भोजन न करें । गुनगुना पानी पी कर दिन व्यतीत करें। इसका प्रभाव तुरन्त व अचूक पड़ता है तथा आंखें और आंखों के आस पास का नाड़ी संस्थान सक्रिय होने लगता है।

२. टहलने की आदत डालिये :-

इस बात का ध्यान रखिये कि प्रातः काल आप को तीन या चार किमी. पैदल चलना ही है। इस से पूरे शरीर में स्फूर्ति और ताजगी आ सकेगी। ज्यादा से ज्यादा आप को आक्सीजन प्राप्त हो सकेगी, इसका प्रभाव आंखों की आस पास की नाड़ियों पर

पड़ना स्वाभाविक है।

३ . वैलमिक व्यायाम कीजिये :-

इस व्यायाम के लिए आप अपने दोनों पैरों में एक फुट का फासला रखें बाजू लटका दें। पहले दांयी ओर घूमते हुए झुकिये फिर बांयी ओर झुकिये । यह क्रम लगभग दस से बीस बार कीजिये, इस का सीधा और अचूक प्रभाव आंखों व दृष्टि पर पड़ता है।

आयुर्वेद में एक पौधा 'नेत्रत' है। जो आंखों की रोशनी बढ़ाने के लिए अद्भुत है इसके पुष्पों का पाउडर नित्य प्रातः व सायं काल में एक एक चुटकी भर लीजिये। इससे आंखें जल्दी और ज्यादा स्वस्थ व तन्दुरुस्त हो सकेंगी ,तथा उनमें देखने की शक्ति ज्यादा प्राप्त हो सकेगी।

प्रातः काल वाश- बेसिन के सामने खड़े हो जांय। नल से पानी लेकर मुंह में भर लें। आंखें बन्द कर के दोनों आंखों पर पानी जोर से छिड़किये, ऐसा पन्द्रह बीस बार करिये। इससे असक्रिय नाड़ियां पुनः सक्रिय हो सकेंगी उनमें रुधिर प्रवाह हो सकेगा फलस्वरूप देखने की शक्ति बढ़ जायेगी।

आप जब घर में या कुर्सी पर बैठे हों तब आप हर घंटे दो घंटे बाद अपनी हाथ की हथेली से आंखों को ढक दीजिये। इससे आंखों को राहत मिलती है और आंखे जल्दी स्वस्थ हो जाती हैं। यह ध्यान रखिये कि रोगी की आंखें ज्यादा नहीं झपकती, जब कि स्वस्थ पलकें जल्दी जल्दी झपकतीं हैं, यह झपकने की क्रिया आंखों की स्वस्थता का प्रमाण है। इसलिए आप प्रयत्न करके आंखों को ज्यादा से ज्यादा झपकाइये इससे आंखें,अपना नैसर्गिक गुण पुनः प्राप्त कर सकेंगी।

यदि आप की दूर दृष्टि ख़राब है तो चश्मा एक तरफ रख दें। कमरे में खिड़की के सामने खड़े हो जाइये । किसी दूर की वस्तु या पेड़ के शिखर पर ध्यान केन्द्रित कीजिये। और देखने की कोशिश कीजिये । हो सकता है कि प्रारम्भ में धुंधला सा दिखायी दे या न दिखायी दे, पर आप प्रयत्न चालू रखिये ,हो सकता है आप को एक दो दिन धुंधला दिखाई दे परन्तु प्रयत्न करने पर आंखों की मांस पेशियां अपना नैसर्गिक गुण प्राप्त कर लेंगी और पांच सात दिन बाद आप हर्षित हो सकेंगे कि आप उस वस्तु को स्पष्ट रूप से देखने लगे हैं। इसी प्रकार १५-२० फीट की दूरी पर दीवार पर लिखी लाइन को पढ़ने का प्रयत्न करिये। प्रत्येक दिन दीवार पर दृष्टि गड़ा कर पढ़ने का प्रयत्न कीजिये। निश्चय ही कुछ दिनों में आप को सफलता मिल जायेगी । यदि निकट दृष्टि दोष है और आप पुस्तक नहीं पढ़ पा रहे हैं तब भी आप चश्मे को एक तरफ रख दें और अखबार की किसी एक पंक्ति को पढ़ने का प्रयत्न कीजिये पहले दिन आप पंक्ति नहीं पढ़ पायेंगे किन्तु चिंतित नहीं हों, और आंखों को अपना कार्य करने दें। आंखों में ताकत आने दें और बराबर उस पंक्ति को देखते रहें । आठ -दस दिन के बाद आप अनुभव करेंगे कि उस पंक्ति के अक्षर स्पष्ट होने लगे हैं । प्रयासरत रहिये तो कुछ दिनों बाद आप बिना चश्मेकी सहायता से पढ़ सकेंगे। इस के बाद आप उस पंक्ति के किसी शब्द पर नजर गड़ाइये । प्रारम्भ में वह शब्द धुंधला दिखाई दे तब भी आप चिन्ता मत करिये और शब्द को एक टक देखते रहिये। कुछ दिनों में वह अक्षर बिना चश्मे की सहायता से पढ़ सकते हैं और आप महीने या दो महीने बाद बिना चश्मे की सहायता से पढ़ने में समर्थ हो सकते हैं।

यदि आप की आंखें रोग ग्रस्त हैं तो आप निराश मत होइये। ऊपर मैंने जो आयुर्वेदिक पाउडर लिखा है उससे आप की आंखें ठीक हो सकेंगी और बिना आपरेशन की सहायता के भी आप अपनी आंखों को सभी बीमारियों से मुक्ति दिला सकेंगे।

ऊपर मैंने जो तथ्य लिखे हैं उनको मैंने स्वयं आजमाया है और कई लोगों पर आजमा कर शत् प्रतिशत सफलता प्राप्त की है आप भी इनका प्रयोग करके मोटे मोटे लेन्सों वाले चश्में को फेंक सकते हैं और प्राकृतिक रूप से देखने में समर्थ हो सकेंगें। ♦

(पृष्ठ ४२ का शेष भाग)

मूल मंत्र :-

ॐ ऐं ह्लौं मनसः फट्

उपरोक्त मंत्र का २१ माला मंत्र जप करना आवश्यक है। जप करते समय साधक की दृष्टि यन्त्र पर ही रहनी चाहिए। मंत्र जप पूरा होने पर यंत्र व गुटिका को उसी प्लेट में पड़ा रहने दें और उसके ऊपर माला को इस प्रकार से रख दें जिससे यंत्र व गुटिका ढंक जाय।

इस प्रकार पांच दिनों तक मंत्र जप करना है,जप समाप्ति पर साधक विश्राम कर सकता है या दैनिक कार्य सम्पन्न कर सकता है।

जब पांचवे दिन साधना सम्पन्न हो जाय तब उस मन:शक्ति यंत्रको अपनी दाहिनी भुजा पर बांध लेना चाहिए, ऐसा करने से साधना सिद्ध हो जाती है, और वह व्यक्ति दूसरे के मन की बात जानने में सफल सिद्ध हो जाता है।

दैनिक जीवन में हमें सतर्क रहना पड़ता है इससे व्यर्थ का मानसिक तनाव बना रहता है । इस साधना से व्यक्ति के मन की सारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है,और हम चिन्ता मुक्त होकर आनन्द के साथ जीवन - यापन कर सकते हैं।

वास्तव में ही यह नवीन पद्धति अपने आप में अद्वितीय व दुर्लभ हैअपने आप में पूर्ण है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी है, प्रत्येक जागरूक पाठक को यह साधना सम्पन्न करनी ही चाहिए और अपने जीवन को सभी दृष्टियों से सुखी व आनन्दपूर्ण बनाना चाहिए। ♦

पूज्यनीया माता जी

करुणामयीत्रिजगतां परिपालयन्तीं,
नित्यं वराभयप्रदां सदसच्चरूपां।
संचिन्तनेन सकलं शुभमाददानां
त्वां मातरं प्रियकरां सततं नतोऽस्मि।।

करुणा से परिपूर्ण ,समस्त लोकों को अपनी शक्ति द्वारा पालन करने वाली, वर तथा अभयदान देने वाली , सत् और असत् दोनों रूपों से युक्त,केवल चिन्तन मात्र से समस्त कल्याण को देने वाली, प्रियकरी भगवती जगदम्बे को नित्यशः प्रणाम करता हूँ।

माँ!

मुझे और एमिस को जितना भी समय डॉ० श्रीमाली के चरणों में गुजारना पड़ा, वह मेरा सौभाग्य था, पर इस सौभाग्य को बनाने के पीछे प्रबल और स्नेहयुक्त हाथ था तो वह डॉ० श्रीमाली जी की धर्मपत्नी का जिन्हे हम 'माता जी ' के नाम से पुकारते रहे और वह पुत्रों के समान ही हमारा ध्यान रखती रही, हमारी छोटी से छोटी असुविधा का ख्याल रखती रही और हमारे ऊपर स्नेह और करुणा की वर्षा करती रहीं।

यदि मैं उपमा का सहारा लूं तो डॉ० श्रीमाली हिमालय के समान धीर, गम्भीर, उन्नत और विशाल हैं जिनकी थाह लेना या पार करना असंभव है तो पूज्यनीया माता जी निर्मल गंगा के समान प्रवाहमान हैं जिसमें स्नान कर मन को शांति, पवित्रता, स्निग्धता और सुख मिलता है।

पूज्य डॉ० श्रीमाली अत्यधिक व्यस्त रहते हैं, पता नहीं उनमें कितनी जीवट शक्ति है कि अठारह-अठारह घंटे काम करके भी थकते नहीं, उनके चेहरे पर वही ताजगी दिखाई देती है, उनकी हंसी मे वही मधुरता घुली रहती है और डा०श्रीमाली के शब्दों में इसके पीछे यदि कुछ भी रहस्य है तो वह माता जी की सेवा और शक्ति है।

अन्नपूर्णा वत

मैं इस भारतीय नारी को देखकर दंग हूं, दिन भर कार्य में इतनी अधिक व्यस्त रहती है कि एक क्षण भी सांस लेने की फुर्सत नहीं मिलती दिन भर सैकड़ों आगन्तुकं आते हैं, घर के भी, बाहर के भी, स्वजन भी परिजन भी, पर क्या मजाल कि कोई भूखा चला जाय या बिना कुछ लिये चला जाए, छोटी से छोटी बात का बराबर ख्याल रखती है कि कोई भूखा तो नहीं रह गया, किसी को कोई अभाव तो नहीं रह गया मां की

माँ ! हम तो चैतन्य हो उठे आपकी दृष्टि का स्पर्श अपने तन मन पर पाकर, कि बछड़े को उसकी माँ ज्यों अपने स्नेह से आप्लावित कर दे . . .

तरह दुलार कर,झिंझोड़ कर ठूंस-ठूंस कर खिलाती पिलाती है कि वह जीवन भर भूल ही नहीं सकता, सही अर्थों में वह अन्नपूर्णा हैं।

आज डॉ० श्रीमाली जी जो कुछ भी हैं, उसके पीछे पूरा हाथ इसी तपोनिष्ठ महिला का है, डॉ० श्रीमाली के उठने से पहले ही वह उठ जाती हैं, घर में सेवक होने पर भी वह स्वयं स्नान के लिए जल आदि की व्यवस्था करती हैं और इसके बाद जब तक डॉ० श्रीमाली शयन करने को नहीं चले जाते, तब तक माता जी बराबर ध्यान रखेंगी, कि उन्हें कोई असुविधा न हो जाए,इसका पूरा-पूरा विचार रखेंगी, उनके संकेतों को समझती हैं, और डॉ० श्रीमाली को कब क्या चाहिए इसका इन्हें पूरा एहसास रहता है- इसीलिए तो हमने उन्हें 'सेवा की साक्षात् मूर्ति ' कहा है। डॉ० श्रीमाली ने स्वयं एक बार चर्चा के दौरान कहा था, यह मेरी पत्नी ही नहीं, मेरी पथ-प्रदर्शिका भी है, आज जो कुछ भी मेरा निर्माण हुआ है, वह इसकी सेवा और त्याग की पृष्ठ भूमि पर, इसलिए मैं इस जीवन में इसका ऋणी हूं, डॉ० श्रीमाली ने शास्त्र वचन उद्धृत करते हुए बताया कि पत्नी की चार अवस्थाएं होती हैं- भोजन के समय उसका स्वरूप माँ के समान होता है, जिस प्रकार से वह पति को भोजन कराती है आराम के क्षणों में वह दासी स्वरूपा होती है, जिस प्रकार से भृत्य पूरा-पूरा ख्याल रखता है कि स्वामी को कोई असुविधा न हो उसी प्रकार से सुलक्षंणा पत्नी आराम के क्षणों में दासीवत् होती है, शयन के क्षणों में वह प्रेमिका स्वरूपा होती है, और मुसीबत के क्षणों में सच्चे साथी के समान होती है, शास्त्र वचन के बाद डॉ०श्रीमाली ने बताया था कि इसने इन चारों ही रूपों में सेवा की है।

और यह बात सही भी है, मैं जितने दिन भी गुरु जी के साथ रहा, मैंने देखा कि वास्तव में ही माताजी विविध रूपा है ;गुरु जी के प्रत्येक क्षण का ध्यान रखना उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझ लिया है, उनका अपना स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं है, उन्होंने अपना सब कुछ डॉ०श्रीमाली में ही लीन कर दिया है, एक प्रकार से वे पतिमय ही हो गई हैं।

गुरुदेव की आधार भूता

जहां तक त्याग और सेवा की बात हैं, यह महिला अन्यतम है,शादी करने के कुछ ही समय बाद, जब कि वह नववधू थी आंखों मे लाज और अधरों में मधुरिमा थी, हाथों में मेंहदी और स्वप्न मे पति के साथ रहने की ललक थी, ऐसे दिन इस महिला ने पति उन्नति की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दिये, अपनी सारी खुशियां लम्बी प्रतीक्षा की झोली में डाल दीं और जीवन के कीमती वर्ष उदासी और कठिनाइयों को दान कर दिये, डॉ० श्रीमाली ने एक बार उन क्षणों को याद करते हुए कहा था, जंगल मे जाने और दीर्घावधि तक जंगलों तथा हिमालय के पाषाण खण्डों में विचरण करने के लिए मुझे कहते हुए झिझक हो रही थी, पर जब इस महिला को ज्ञात हुआ तो इसने सहर्ष जाने की स्वीकृति दे दी, स्वीकृति ही नहीं दी, साथ ही कहा भी कि जीवन बिता देना अपने आप में कोई विशिष्टता नहीं, विशिष्टता तो इस बात में

है कि जीवन इस प्रकार से जिया जाय कि वह इतिहास बन जाए, जीवन में कुछ ऐसे कार्य हो कि जिससे मानव जाति का सही अर्थों में कल्याण हो सके, मृत्यु ऐसी हो कि लाखों करोड़ों की आंखें छलछला आएं और उस समय कहे हुए इसके ये शब्द आज भी मेरे कानों में गूंजते हैं।

पति के जाने के बाद केवल वियोग-पीड़ा ही नहीं ,अपितु जरूरत से ज्यादा कष्ट एवं परेशानियां भोगी हैं, श्वसुर का स्वभाव अत्यन्त उग्र था और क्रोधावस्था में तो वे पूरे दुर्वासा बन जाते थे,परन्तु उनके क्रोध के वेग को भी शान्ति के साथ झेला और इसके साथ ही परेशानियों , एवं कष्टों का लम्बा सिलसिला ,पर मुंह से कभी उफ नहीं की । सास - श्वसुर के गांवों में रहने के कारण उनकी सेवा ही जीवन धर्म बना लिया था । कठोर ग्राम्य-जीवन , श्वसुर की क्रोधातिरेक और पति के वियोग ने शरीर को तोड़ दिया, यद्यपि ये बाधाएं मन को नहीं तोड़ सकीं, पर शरीर को कमजोर और शिथिल बना दिया। जंगल से गायों के लिए घास के गट्ठर सिर पर उठा कर लाना , जलाने के लिए लकड़ियां ढोना, दूर -दूर स्थान से पानी लाना, चक्की चलाना और घर के छोटे से बड़े काम को हाथ से करना,भोजन पकाना आदि प्रातः चार बजे से रात को ग्यारह बजे तक निरन्तर शारीरिक श्रम ने शरीर को कमजोर कर दिया , परन्तु फिर भी-- इतना होने पर भी मुंह से उफ नहीं की, हमेशा चेहरे पर मुस्कराहट बनी रही , आंखों में सुखद स्वप्न तैरता रहता - कि एक दिन 'वे' अवश्य आयेंगे और मेरे जीवन की खुशियां लौट आयेंगी--उन दिनों का स्मरण कर माता जी आज भी विचलित हो जाती हैं और उन कष्टों को स्मरण कर उनकी आंखें आज भी भीग जाती हैं।

पर उनके मन में किसी के प्रति कोई कटुता नहीं, पता नहीं इस विदुषी महिला ने कितना हलाहल अपने कंठ के नीचे उतारा है, पर फिर भी इसकी जीभ से अमृत बरसता रहता है, जो सभी को अपनी मधुरता से आप्लावित करता रहता है।

हम दोनों-- मैं और मेरी पत्नी-- जब तक डॉ० श्रीमाली के सान्निध्य में रहे, पूज्यनीया माता जी का बराबर स्नेह और आशीर्वाद मिलता रहा, कभी हमारे चेहरे पर जरा भी शिकन देखतीं , तो उदास हो जातीं, खोद - खोद कर पूछतीं ,अपनी सौगन्ध दिलातीं और जब तक वह आश्वस्त न हो जातीं हमें भुलाती नहीं, हमें ही क्यों उनके घर जो भी आता, सभी के साथ ऐसा ही मातृवत् व्यवहार ।

अंग्रेजी में कहावत है, कि मां संस्कारित होती हैं तो पूरा घर और आने वाली पीढ़ियां भी संस्कारित हो जाती है, और मैंने यह कहावत पूज्य गुरुदेव के घर में देखी है , माता जी के व्यक्तित्व का उनकी सरलता का उनकी पवित्रता और धार्मिकता का प्रभाव पूरे घर पर है, घर के अणु-अणु पर है।

मातृ स्वरूपा

पूज्यनीया माता जी बहुत सवेरे जल्दी उठ जाती है, नित्य क्रिया से निवृत्त हो पूजा घर में चली जाती है, इसके बाद से रात्रि को साढ़े ग्यारह बजेतक । वे दो कार्यों में ही ज्यादातर व्यस्त रहती हैं ,पति सेवा,अतिथियों की सेवा या ईश्वर चिन्तन , पूजापाठ , धार्मिक चर्चा आदि , और मैंने देखा है कि घर में बारहों महीने कुछ न कुछ धार्मिक कार्य चलते ही रहते हैं न मालूम कितने ही अनाथ बच्चे माता जी की सहायता से पलते होंगे, कितने ही बच्चों की फीस माता जी की तरफ से जमा होती होगी,कितने ही रोगियों को फल ,दूध आदि माता जी की तरफ से पहुंचता होगा और इतना सब कुछ करने के बाद भी जब कोई प्रसंग छिड़ता है तो एक ही वाक्य में उत्तर मिलता है 'सब राम जी करते हैं, मैं कौन होती हूं करने वाली । वस्तुतः माता जी मातृस्वरूपा है - "या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता " --

मेरी और एमिस की डायरियों में पूज्य माता जी से संबंधित कई संस्मरण हैं, जिनसे उनके विविध पक्षों पर प्रकाश पड़ता है उनमें से कुछ संस्मरण देने का लोभ मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूं --

'ज्योतिष परिषद' ने पूज्य डॉ० श्रीमाली जी को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया था और उसमें पूज्य पंडित जी की जीवनी देने का भी विचार था, इसका भार पंडित जी के प्रिय शिष्य अरविन्द कुमार को सौंपा था, परन्तु वह समझता था कि इसमें यदि दुष्कर और कठिन कार्य है, तो यही कि जीवनी ज्ञात कर लिपिबद्ध करना , वह पूज्य श्रीमाली जी के सम्पर्क में रहा था और उनके स्वभाव से परिचित भी था।

वह आकर गुरुदेव के घर भी ठहरा , तीन-चार दिन बीत गये, एक दिन हिम्मत करके उसने निवेदन किया तो अनुकूल उत्तर नहीं मिला --बोले-- 'क्या होगा मेरी जीवनी लिखकर ? इस विशाल सागर में एक छोटे से बुलबुले की बिसात ही क्या है? और फिर जीवनी लिखना- लिखाना बड़े लोगों के कार्य हैं, मैं तो एक छोटा सा अदना सा आदमी हूं, जीवनी छप जायेगी तो और ज्यादा लोग जानेंगे और ज्यादा लोग आयेंगे

माँ ! ज्यों गौरया अपने शिशु को कुछ खिलाये भिगोकर, नरम कर उसी ढंग से तो पालन किया है आपने हम सभी का, अपनी गोद के घोंसले में हम सभी को छुपा कर बिना कुछ कहे, मौन रहकर।

और ज्यादा भीड़ तथा और ज्यादा व्यस्तता होगी-- इससे स्वाध्याय में, प्रभु भजन में व्यवधान पड़ेगा, व्यर्थ है रे जीवनी लिखना -- और अपने दूसरे कार्यों मे लग गये।

वत्सला

गुरु जी के सामने दूसरी बार जाकर निवेदन करने की हिम्मत उसमें थी नहीं, जो जिम्मेवारी ज्योतिष परिषद ने उस पर डाली थी वह पूरी नहीं कर सकेगा, स्मरण कर उसकी आंखों में आंसू छलछला आये, उस समय मैं और एमिस भी पास बैठे थे,हमने निर्णय किया कि अब और कोई चारा नहीं है , माता जी से ही निवेदन किया जाय तो कोई रास्ता निकल सकता है। उसी दिन शाम को हमने भोजन करने से इन्कार कर दिया, शाम का भोजन पूरे घर के प्राणी एक साथ बैठकर करते हैं, भोजन की टेबल पर जब हमे नहीं देखा , तो माता जी ढूंढ़ती - ढांढती हमारे कमरे में आईं ,तो हम तीनों कृत्रिम उदासी लिये बैठे थे। उदास चेहरा देख कर माता जी का हृदय परेशान हो गया, बच्चों को क्या तकलीफ हो गई? ये उदास क्यों है? पास आकर पूछा- क्या बात है? आज तीनों ने भूख हड़ताल करने का विचार किया है क्या?

हम सब आदर देने के लिए उठ कर खड़े तो हो गये , पर बोले कुछ नहीं।

माताजी अरविन्द के पास गईं क्या हो गया है रे तुझे? चलकर भोजन क्यों नहीं कर लेता ?

अरविन्द कुछ नहीं बोला , तो मेरी ओर मुखातिब होकर बोलीं- क्या है रे पोलर! मुझे भूखा रखने का इरादा है क्या?

- आज हम तीनों में से कोई भोजन नहीं करेगा- एमिस ने स्थिति संभाली।

- पर क्यों? परेशान सी माता जी ने पूछा।

मैंने कहा- आप बैठिये,हम सब कुछ बताए देते हैं।

माता जी बैठ गईं, अरविन्द ने अपने आने का कारण,गुरु जी से पूछने पर उनकी तरफ से मना कर देना आदि पूरी बात बता दी और यह भी कह दिया कि यह कार्य आपके ही सहयोग से हो सकता है, आप यदि यह कार्य सम्पन्न करवा देने का वायदा करें तो हम भोजन करेंगें अन्यथा आज से भूख हड़ताल ही समझें।

माता जी दो मिनट सोचती रहीं, फिर ठठाकर हंस पड़ीं--

तो तुम सबने प्लानिंग कर लिया है, मुझे हथियार बनाने का ---।

हममें से कोई नहीं बोला--।

अच्छा बाबा । चलकर भोजन तो कर लो,मैं कहकर तुम्हारा कार्य करवा दूंगी - बस।

हम लोगों की विजय हो चुकी थी-- गुरु जी भोजन के लिए तैयार बैठे थे। इन्तजार कर रहे थे, माता जी का और हम सब का --बोले---क्या बात है? क्या मंत्रणा कर आये हो तुम सब--- फिर पत्नी को संबोधित कर बोले-- इस अरविन्द की बातों में मत आ जाना --तूं।

ये तो भोजन ही नहीं कर रहे थे, बड़ी मुश्किल से मना कर लाई हूं-- मैंने तो वायदा कर लिया है इनसे--

----किस बात का

--- आपको भोजन के बाद आराम करते समय एक घंटा इनको दान देना ही पड़ेगा और उस एक घंटे में ये छोरे जो भी पूछेंगे, आपको उत्तर देना पड़ेगा।

गुरुजी दो क्षण तो बोले नहीं, फिर कहा--अच्छा भाई---।

और पूरा माहौल हंसी, आनन्द और उमंग के वातावरण में भीग गया।

सेवा का कारुण्य

एक बार एमिस को ज्वर चढ़ आया , डॉक्टर आया, देख गया, बोला-कोई विशेष चिंता की बात नहीं है, पर माता जी को कहां चैन था सिरहाने बैठी रहीं, यद्यपि घर के अन्य कार्य किये, पर बेमन से, प्राण एमिस में अटके हुए थे , कभी चाय बना कर लाती तो कभी दवा पिलातीं । एमिस कहती --माता जी केवल बुखार है, इसमें इतनी चिन्ता करने की क्या जरूरत है? पर मां का हृदय --घर में नौकर चाकर होते हुए भी उसकी सुश्रुषा का भार स्वयं उठाये चलतीं, रात को हम सो गये, पर उनकी आंखो में नींद कहां? जब तक वह ठीक न हो गई और सबके साथ टेबल पर भोजन करने न बैठ गई, तब तक वह बराबर उससे लगी रहीं। एमिस आज भी कहती है-- मां ! मां का स्वरूप तो जोधपुर में देखा है, मेरी सच्ची मां तो जोधपुर में है- और आज भी स्मरण कर उसकी आंखों की कोरें भींग जाती हैं।

एक दिन बात के प्रसंग में गुरु जी ने कहा कि प्राणमय कोष को जाग्रत रखने के लिए अन्नमय कोष का कम से कम सहारा लेना चाहिए , अतः भोजन कम करना चाहिए, ज्यादा भोजन से आलस्य और अकर्मण्यता आती है, भोजन तो केवल शरीर को चलायमान रखने का साधन मात्र है, भोजन में स्वाद लेना लक्ष्य की तरफ से हटना है।

मैंने दूसरे दिन से भोजन की मात्रा कम कर दी , उस दिन तो चल गया, पर दूसरे दिन मां ताड़ गईं, बोलीं क्या बात है? भोजन में कमी कैसे हो रही है?

एमिस बोली--- ये गुरुजी के उपदेशों पर चल रहे हैं, गुरु जी ने कहा, भोजन की मात्रा जितनी ही कम हो, उतना ही ठीक रहेगा।

थोड़ी देर बाद जब गुरुजी उधर से निकले मां जी बोलीं - यह आप बच्चों को क्या उल्टा-सीधा पढ़ाने लग गये हैं, मार डालोगे क्या इन्हें - और कहते - कहते दो रोटियां और मेरी थाली में डाल गयीं और जब तक मैंने खा न लीं तब तक हटी नहीं बोलीं- ये तो आधे साधू औरआधे गृहस्थ -- पर तुम तो पूरे गृहस्थ हो-- गृहस्थ की तो उपासना

ही खाना --और ठूंस-ठूंस कर खाना ही है--कहते -कहते खिलखिला कर हंस पड़ीं । कितनी मोहक, मधुर शान्त और पवित्र हंसी है मां की।

माता जी अपने नित्य के कार्यक्रम में लगी हुई थीं , घर का सारा कार्य उसी तरीके से चल रहा था जिस प्रकार से नित्य चलता है, तीन बजे तक वे कार्य से निवृत्त हुईं । नित्य नियमानुसार चार बजे चाय बनती है, चाय बनी पर माता जी कमरे में सो रही थीं दिन को--और माता जी का शयन --कुछ अटपटा सा लगा, एमिस ने थर्मामीटर से देखा तो बुखार एक सौ से ऊपर था।

- कब से बुखार है?

--कल रात से ही है? संक्षिप्त सा उत्तर मिला।

--तो आपने बताया नहीं और दिन को भी काम करती रहीं।

बताती तो तुम बच्चे चिन्ता करते, मेरी वजह से तुम्हें कष्ट,परेशानी या चिन्ता हो, यह उचित होता?

बुखार होने पर भी उठीं, हम सब लोगों के साथ चाय ली, दर्द को मन ही मन छुपाये रखना और सहन करना कोई माता जी से सीखे।

महीने में लगभग बीस दिनों तक तो उनके व्रत , उपवास आदि चलते रहते हैं,

एक दिन मैंने पूछा--माता जी । इतने अधिक व्रत रखने से क्या फायदा ,भूखे रहने से क्या लाभ ?

बोली- इसीलिए कि तुम्हें भरपेट भोजन मिलता रहे, आनन्द उमंग में क्षण व्यतीत हो सके।

छोटी सी बात , पर कितनी गहरी , कितनी सारगर्भित ।

हम देख रहे थे कि पिछले कुछ दिनों से कार्य का बोझ बहुत अधिक बढ़ जाने के कारण गुरुदेव थक से गये थे और हम चाहते थे कि उद्यान ले जायें ,पर उन्हें कहे कौन? और कहने से क्या वे मान जायेंगें? जिस प्रकार से आने जाने वालों का तांता लगा रहता है, उस हिसाब से तो उनका एक मिनट के लिए भी निकलना कठिन दिखाई देता है--थक हार कर माताजी के चरणों में गये और सारी वस्तुस्थिति से अवगत कराया ।

माता जी की आज्ञा से दूसरे दिन के सारे कार्यक्रम स्थगित कर दिये, जो मिलने आये थे और दूसरे दिन का समय मांग रहे थे, उन्हें एक दिन और आगे का समय दे दिया।

उस दिन सुबह उठकर ही हमने गुपचुप सारी तैयारी कर दी, नित्य नियमानुसार लगभग नौ बजे गुरुजी आगन्तुकों से मिलने कक्ष में आ जाते हैं- नौ बज गये- साढ़े नौ बज गये- गुरु जी ने पूछा -क्या बात है? आज कौन कौन मिलने वाले है?

-कोई नहीं।

-कोई नहीं ! ऐसा कैसे हो सकता है? उनके स्वर में आश्चर्य था, उन्होनें मुझे बुलाया ।

मैं माता जी को साथ लेकर कमरे में गया--गुरु जी ने पूछा--क्या बात है पोलर ?

आज के सारे कार्यक्रम स्थगित कर दिये हैं।--मैंने कुछ हिचकिचाते हुए उत्तर दिया।

--क्यों ? किसलिए? किस की आज्ञा से?--कुछ क्रोधित से हो गये थे वे।

मैंने कह दिया था इनको ।आप थक गये हैं, काम के बोझ से --इन छोरों ने हठ करके मंडोर का प्रोग्राम बनाया है आज, और आपको भी चलना है।

गुरुजी माता जी की तरफ और हमारी तरफ देखते रहे, उनसे आंख मिलाने की हिम्मत नहीं हो रही थी - दो मिनट तो तनाव में बीते-- और फिर कमरे में गुरु जी की हंसी भर गई-- हंसी के बीच बोले -- अरी पगली ! तू भी बहकावे में आ गई क्या इन छोरों के। यह सारी प्लानिंग तुम्हें लेकर की गई दीखती है, अच्छा भाई --। गुरु जी उठ खड़े हुए।

उस दिन मंडोर उद्यान में गुरुजी ने जो कुछ भी सिद्धियां दिखाईं , वे हमारे जीवन की यादगार हैं।

सैकड़ों संस्मरण हैं, सैकड़ों घटनाएं हैं, आज भी इन पंक्तियों को लिखते समय माँ का स्मरण कर मेरी आंखें झर रही हैं, उनकी कृपा की याद कर पुलकित हो रहा हूं, उनके स्नेह को स्मरण कर खो सा गया हूं-

काश ! मैं ऐसी माँ की कोख से जन्म लेता - ♦

> 'परम पूज्यनीया माताजी की तपस्या अपने आप में अवर्णनीय है वे बहुत ही कम "दीक्षा" देती हैंपर जो उनसे श्रेष्ठ दीक्षा या जो उनकी कृपा प्राप्त कर लेता है, वह तो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता ही है उसके सौभाग्य का तो वर्णन किया ही नहीं जा सकता",माँ से दीक्षा प्राप्त करना दूसरे शब्दों में समस्त वैभव प्राप्त करना है।
>
> **-माँ योग चैतन्या**

जिसके घर में

पूज्य गुरुदेव की वाणी झंकृत नहीं है
वह घर श्मशान तुल्य है

क्योंकि

गुरुदेव की वाणी केवल आवाज ही नहीं है

अपितु

सिद्धाश्रम के सरगम की झंकार है

और यह वाणी झंकृत हो सकती है, आपके घर में

इन दुर्लभ कैसेटों से

१.	स्वामी सच्चिदानंद	२.	पूज्य सच्चिदानन्द स्तवन
३.	सिद्धाश्रम	४.	सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
५.	मैं सिद्धाश्रम में सशरीर विचरण कर सकता हूं	६.	गुरुगति पार लगावे
७.	दुर्लभोपनिषद	८.	शिष्योपनिषद
९.	प्रेम धार तलवार की	१०.	अकथ कहानी प्रीत की
११.	घूंघट के पट खोल री	१२.	मैं खो गया तुम भी खो जाओ
१३.	पराविज्ञान	१४.	हिप्नोटिज्म रहस्य
१५.	पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (३ भाग)	१६.	कुण्डलिनी योग
१७.	ध्यान योग	१८.	समाधि के सात द्वार
१९.	ॐ मणि पद्मे हुं	२०.	षोडश अप्सरा साधना

प्रत्येक कैसेट उत्तम तकनीक से निर्मित

न्यौछावर : ३०/-

आज ही पत्र डालिये , जीवन की सफलता पाइये

मंत्र शक्ति केन्द्र

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी
जोधपुर (राजस्थान) ३४२००१
टेलिफोन - ०२९१ - ३२२०९

विश्व की

दुर्लभ साधनाएं

जिसके परिणाम आश्चर्य चकित कर देने वाले हैं

आप भी इनमें से कुछ साधनाएं आजमाएं

साधना करना और सफलता पाना विश्व का कोई नवां आश्चर्य नहीं। आवश्यकता होती है केवल प्रामाणिक उपकरणों की, सही मंत्रों की और थोड़े से प्रयासों की। यहां ऐसी ही कुछ साधनायें हैं,जिनके बारे में हम आपका पत्र मिलने पर संबंधित यंत्र चित्र माला, पूर्ण, प्रामाणिक व विशिष्ट साधना विधि के साथ आपको घर बैठे वी.पी. पी.से उपलब्ध करा देंगे।

१.	पुष्प देहा अप्सरा साधना (साबर विधि से)	३००/-
२.	सर्वजन वशीकरण प्रयोग (महर्षि जमदग्नि प्रणीत)	४५०/-
३.	कामदेव रति साधना (वृद्धता समाप्ति का सिद्ध प्रयोग)	३५०/-
४.	गृहस्थ जीवन की आवश्यक साधना --- कौमारी साधना	३५०/-
५.	ग्रह बाधा निवारण प्रयोग	४००/-
६.	स्वयंवरा अप्सरा साधना	३००/-
७.	विश्व की अप्रतिम साधना --- दूर श्रवण साधना	४५०/-
८.	संतान प्राप्ति का अनुभूत प्रयोग ---षष्ठी देवी साधना	४००/-
९.	मनोवांछित पदार्थ पाइये----शून्य साधना से	४५०/-
१०.	अदृश्य होने का गोपनीय प्रयोग- --पारद गुटिका द्वारा	३५०/-

- : सम्पर्क : -

गुरु धाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,
नई दिल्ली-११००३४,फोन-०११-७१८२२४८

मंत्र शक्ति केन्द्र
डॉ. श्रीमाली मार्ग,हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर- ३४२००१, टेलीफोन-०२९१-३२२०९

"इनमें से प्रत्येक साधना लाजवाब है, आप करिये तो सही, आप सफल होंगे ही, मैं आपके साथ हूं"

--गुरुदेव

राज्याभिषेक दीक्षा

जिनके जीवन का अभिषेक हो चुका है

गुजरात के प्रमुख नगर सूरत में पूज्य गुरुदेव के पुराने शिष्य **श्री नागजी भाई** का रत्नों का सुप्रतिष्ठित व्यवसाय है और वे वर्षों से गुरु साधना में संलग्न हैं। नाग जी भाई पूज्य गुरुदेव के ग्रन्थों का शीघ्र ही गुजराती में अनुवाद भी प्रस्तुत करने जा रहे हैं। उनके अनुभव उन्हीं के शब्दों में........

पत्रिका :- आपको राज्याभिषेक दीक्षा कैसे प्राप्त हुई?

नागजी भाई :-मैंने विगत वर्षों में गुरु मंत्र के तीन पुरश्चरण संपन्न किये, उस के बाद मेरे मन में प्रेरणा आई कि मैं पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना कर इस दीक्षा को प्राप्त करूं।

पत्रिका :- आपको यह महत्वपूर्ण दीक्षा प्राप्त करते समय क्या अनुभूति हुई?

नागजी भाई :- मेरा लक्ष्य किसी अनुभूति को प्राप्त करना नहीं था। मैं पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में पहले ही समझ चुका था कि अनुभूति तो साधना क्रम में अत्यन्त तुच्छ सी बात है। वैसे मैं उनके साहचर्य में अनेक अलौकिक अनुभूतियां प्राप्त कर ही चुका हूं।

पत्रिका :- इस दीक्षा से संबंधित कोई विशेष तथ्य हमें बताइये?

नाग जी भाई:- मैंने अनेक दीक्षायें प्राप्त की हैं, लेकिन यह दीक्षा तो अत्यन्त तेजस्वी है। दीक्षा के उपरान्त जब पूज्य गुरुदेव ने मेरी आंखों की ओर एक टक देख कर शक्ति पात किया तो मैं अचेत सा हो गया उसी अवस्था में मैंने अपने साथ एक दुर्घटना को देखा जो भावी जीवन से सम्बन्धित थी यहां तक कि मैंने उस स्कूटर का नम्बर एवं उस ट्रक का नम्बर तक देखा, मैं हड़बड़ा कर उठ गया मेरा सारा शरीर भय से रोमान्चित हो गया था और शरीर पसीने पसीने हो गया था, मेरी आंख खुली तो पाया कि पूज्य गुरुदेव मेरे सिर पर हाथ फेर रहे हैं और करुणा सिक्त स्वर में कह रहे हैं कि भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं। तुम्हारा भावी अशुभ इस दीक्षा के माध्यम से स्वतः ही विनष्ट हो गया है। बाद में वह एक्सीडेंट हुआ भी, पर मुझे पहले ही ज्ञात हो चुका था इसलिए बाल-बाल बच गया। ◆

कर्नल गणपति भारतीय सेना की चिकित्सा कोर में वरिष्ठ पद पर आसीन हैं। जिन्होंने चिकित्सा के क्षेत्र में उच्च डिग्रियों को प्राप्त किया है और वर्तमान में पूना में कर्नल पद पर है। यह पूज्य गुरुदेव के पुराने शिष्य हैं और निरन्तर साधनाओं में तल्लीन रहते हैं। पिछले दिनों इन्होंने राज्याभिषेक दीक्षा प्राप्त की एवं उन चुने हुये साधकों में अपना नाम अंकित कराया, जो बिरले ही होते हैं।

पत्रिका : डॉ० साहब, आप एक श्रेष्ठ साधक हैं, आप अपने अनुभवों को कृपया हमें चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से बताने की कृपा करें।

कर्नल गणपति : मैं चिकित्सा विज्ञान से सम्बंधित होते हुये भी पता नहीं किन पूर्व संस्कारों से अनायास ही साधना जगत् में मुड़ गया। पूज्य गुरुदेव से मिलने के बाद ही मुझे ऐसी तृप्ति मिली, जो धन, पद,यश, किसी में नहीं मिली थी। मैं प्रयास करके प्रत्येक साधना शिविर में भाग लेता ही हूं। मैं वर्षों से अपने स्वास्थ्य को लेकर चिन्तातुर रहता था और अपने चिकित्सा विज्ञान से कोई निश्चित उपाय नहीं प्राप्त कर पा रहा था।

जिस दिन मेरी राज्याभिषेक दीक्षा सम्पन्न हुई उस दिन प्रातः से ही पूज्य गुरुदेव ने निराहार रहने की आज्ञा दीथी, उन्होंने यह भी संकेत दे दिया था कि अब मेरी वर्षों से चली आ रही शारीरिक व्याधि भी समाप्त होगी। दीक्षा में पूजन प्रारम्भ होते ही मेरा सारा शरीर ऊष्मा से भर गया। यद्यपि मैं कमरे में बैठा था किन्तु मुझे लग रहा था कि मैं मानो ज्येष्ठ की तपती दुपहरी में बीच मैदान में खड़ा हूं। दीक्षा क्रम के उपरान्त जब पूज्य गुरुदेव ने एक टक अपनी आखों में देखने के लिए कहा, और अंगूठे का स्पर्श ललाट पर किया, तो मुझे ऐसा लगा कि जैसे मेरे मूलाधार से कोई तीव्र ज्वलनशील पदार्थ उठकर सारे शरीर में दौड़ रहा हो। वह तो पूज्य गुरुदेव की दृष्टि की प्रबलता थी कि मैं चाह कर भी गिर नहीं पड़ा अन्यथा मेरा सारा शरीर बिखर रहा था। कुछ क्षणों बाद यह स्थिति समाप्त हो गई और मैं पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर वापिस आ गया, आज दो माह बीत चुके हैं और मेरी शारीरिक व्याधि समाप्त होने के साथ-साथ शरीर मोहक सुडौलता और सम्मोहन युक्तता से भरता जा रहा है। ◆

जब मेरा खोया हुआ लड़का मुझे मिला :-

ख्याली राम शर्मा
गांव-आलापुर, फरीदाबाद

जून १९९1 को मेरा लड़का महेश कुमार घर से चला गया । मैंने बहुत ढूंढा लेकिन उसका कहीं कोई पता नहीं चला । मैं अत्यन्त दुखी और उदास मन से पूज्य गुरुदेव की शरण में गया। ७ जून १९९२ को महेश को वापिस बुलाने के लिए पूज्य गुरुदेव ने अनुष्ठान करवाया। इस अनुष्ठान के फलस्वरूप अगस्त १९९२ में महेश वापिस घर आ गया। महेश ने बताया कि मुझे हर वक्त कोई आज्ञा देता रहता था कि घर चलो -घर चलो! मैं घर आने के लिए बेचैन हो गया और घर लौट आया। हे प्रभु गुरुदेव! मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूं कि आपने महेश को प्रत्येक कठिनाइयों से बचाते हुए हमें लौटा दिया।

दीक्षा से आश्चर्य जनक सौन्दर्य प्राप्ति :-

मैंने अपने पति के कहने पर सद्गुरुदेव से "शक्तिपात दीक्षा" प्राप्त की। इस दीक्षा के फलस्वरूप मेरे सौन्दर्य में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है, चेहरे की झांइयां व आंखों के नीचे का कालापन आश्चर्यजनक रूप से मिट गया , मेरे व्यक्तित्व में पहले से ज्यादा आकर्षण आ गया है।

एलिजाबेथ
द्वारा रोजेन जेम्स (राजेन्द्र)
एकबाल नर्सिंग होम, लुधियाना

जब लक्ष्मी प्रकट हुईः-

सेलरप्रीन नम्बरदार
गांव-उगाला, अम्बाल

मैं परम पूज्य गुरुदेव से पहली बार सन् १९८८ में चण्डीगढ़ शिविर में मिला। इस शिविर के बाद मैं प्रत्येक शिविर में भाग लेता रहा हूं और सैकड़ों अनुभव मेरे जीवन के साथ जुड़े हैं। २० नवम्बर १९८८ को कुरुक्षेत्र में सदगुरुदेव के निर्देशन में महालक्ष्मी यज्ञ का आयोजन हुआ। इस शिविर में गुरुदेव ने पूर्णाहुति के समय यह घोषणाकी कि जिसके पास भी अच्छा कैमरा हो वह व्यक्ति (जब मैं भगवती लक्ष्मी का आवाहन करूं) अपने कैमरे से यज्ञ कुण्ड में प्रज्वलित अग्नि की फोटो ले लें । मैने उस विशेष क्षण का चित्र निकाला दूसरे दिन जब रील धुल कर आयी तो यज्ञ की लपटों में साक्षात् भगवती लक्ष्मी का स्वरूप स्पष्टतया चित्रित था। यह चित्र और इसकी निगेटिव आज भी मेरे पास है और कोई भी साधक देख सकता है।

खाकपति से लखपतिः-

महेन्द्र गुप्ता
बस स्टेण्ड के पास
यमुना नगर, हरियाणा

सन् १९८२ जून की बात है जब मैं जनता पार्टी के प्रधान श्री चन्द्रशेखर से मिलकरअपने घर यमुना नगर लौट रहा था,मैं जनता पार्टी के टिकट पर १९८२ पर यमुना नगर से चुनाव भी लड़ चुका हूं। मुझे बस स्टैंड पर ही बैठे-बैठे पूज्य गुरुदेव की पुस्तक 'प्रैक्टीकल हिप्नोटिज्म' को पढ़कर विचार आया कि यह तब सत्य मानूंगा जब मुझे कोई व्यक्ति आकर धन दे जाय । परस्थिति वश मेरे पास उस समय टिकिट खरीदने के पैसे तक नहीं थे। यह विचार आते ही मुझे घोर आश्चर्य हुआ कि मेरा एक पूर्व परिचित जो दस साल पहले मुझसे ५०० रु. उधार ले गया था मेरे पास आया और३०० रु. दिये। मैंने अपनी पत्नीको सारी बातें बतायी और तुरन्त जोधपुर गुरुदेव के पास जा पहुंचा। उनके कृपा से प्रापर्टी डीलिंग का काम शुरू किया अब मैंने सायकिल का टायर ट्यूब बनाने का कारखाना लगा लिया हूँ तथा मैं काफी सम्पन्न बन गया हूं। मेरी इच्छा है कि प्रत्येक गुरु भाई-बहन गुरुदेव पर पूर्ण श्रद्धा रखें और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन में तरक्की करें।

शेयर व राजनीतिक भविष्य

इस माह की ग्रह स्थिति संक्षेप में इस प्रकार है सूर्य माह के प्रारम्भ से मिथुन राशि पर है और दिनांक १६ से कर्क राशि में संक्रमित होगा। मंगल सिंह पर , गुरु कन्या पर, शुक्र वृषभ पर (२७ तारीख से मिथुन राशि पर) शनि कुम्भ पर, राहु वृश्चिक राशि में एवं केतु वृषभ में स्थित रहेगा। इस माह बुध की स्थिति सबसे अधिक डांवाडोल रहेगी। वह इस माह अस्त होगा एवं उदित होगा, वक्री व मार्गी भी होगा। २८ तारीख के बाद से उसकी गति सामान्य होगी।

राजनीतिक भविष्य :-

बुध की अनिश्चयात्मक स्थिति के कारण देश में अनिर्णय का वातावरण रहेगा। सर्वत्र एक आपाधापी और भ्रम का वातावरण बना रहेगा । भारत का भविष्य अभी एक दो माह अच्छा नहीं है। सकारात्मक पहलू केवल यही है कि इस काल में उसे किसी बाह्य चुनौती का प्रबलरूप से सामना नहीं करना पड़ेगा किन्तु आन्तरिक दबावों की बहुलता रहेगी । बम्बई जैसी दुखद घटना की पुनरावृत्ति दिल्ली में होनी संभावित है। पंजाब में वातावरण और अधिक सुधरता जायेगा। वहां पहले जैसी ही खुशहाली और समृद्धि के दिन वापिस लौटेंगे। देश की राजनैतिक स्थितियों में कांग्रेस का अन्तर्द्वंद्व उसको विघटन व देश को मध्यावधि चुनाव की ओर धकेलेगा । विरोधी पक्ष केवल उनकी फूट का लाभ उठायेंगें । सकारात्मक रूप से वे कुछ घटित नहीं करेंगे बम्बई काण्ड में कुछ और प्रतिष्ठित चेहरे बेनकाब होंगे। जिस प्रकार से रहस्योद्घाटन होंगे उससे किसी खाड़ी देश से भारत के संबंध सीधे टूटने की स्थिति में आ जायेंगें।

ईराक का रुख आश्चर्य जनक रूप से भारत के प्रति उदार होगा और तेल संबंधी महत्वपूर्ण सौदे होंगें । अमेरिका खाड़ी समस्या में व्यस्त होने के कारण भारत संबंधी मामलों में उदासीन रहेगा। रूस की बेरुखी स्पष्ट रूप से सामने आयेगी । हथियारों की बिक्री के कारण चीन का झुकाव पाकिस्तान की तरफ बढ़ता प्रतीत होगा, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय आलोचना के कारण उसे अपना कदम वापस लेना पड़ेगा। चीन के नेतृत्व परिवर्तन के भी आसार हैं। दक्षिण पूर्व के किसी देश में भीषण रक्तपात व जनक्रान्ति के बाद तख्ता पलट होगा।

शेयर मार्केट :-

बम्बई में हुये भीषण काण्ड उससे जुड़ी पश्चातवर्ती घटनाओं के कारण शेयर मार्केट में मन्दी का ही वातावरण चलता रहेगा। इस माह जिस शेयर की स्थिति निश्चित रूप से अच्छी कही जा सकती है उसमें टिस्को का नाम सबसे ऊपर है। ए.सी.सी. भी अच्छी स्थिति में व्यापार देगा। ग्रेसिम के विषय में भी ज्योतिष की दृष्टि से अनुकूल पक्ष ही सामने आता है और ऐसी ही धारणा टेल्को के विषय में बनाई जा सकती है। हिन्डालको मामूली सा व्यापार करके रह जायेगा। नेस्ले की शुरूआत तो अच्छी होगी लेकिन वह भी बहुत अच्छा व्यापार नहीं देगा । हिन्दुस्तान लिवर मार्केट में अपनी स्थिति मजबूत करने का प्रयास करेगा। यू.टी. आई. मास्टर गेन में धन लगाते समय अपनी आर्थिक स्थिति से सुनिश्चित हो लें।

इस मास सोना ,चांदी जैसी बहुमूल्य धातुएं हीरा ,मोती ,पन्ना व पुखराज के विषय में यह कहा जा सकता है कि इनके व्यापार में धन लगाना सुरक्षित रहेगा किन्तु अन्य बहुमूल्य रत्नों के विषय में ऐसा मत निश्चित रूप से प्रकट नहीं किया जा सकता ।

सरसों का तेल ,बिनोला, अलसी और वनस्पति के दामों में आश्चर्यजनक रूप से कमी आयेगी । बीच में १७ तारीख के आसपास एक बार स्थिति सुधरने की आशा है, किन्तु वह अस्थायी ही सिद्ध होगी।

रूई, सूती कपड़ा, रेशमी कपड़ा, व पटसन के भाव में सुधार होगा और आने वाले समय में भी निरन्तर अच्छे व्यापार देगी। गेहूं , मटर ,जौ,चना, बाजरा, मूंग ,अरहर इस माह अच्छा व्यापार देंगे।

वर्षा की स्थिति देश में श्रेष्ठ रहेगी किसी भी भाग में प्रबल रूप से सूखा जैसी स्थिति पड़ने की संभावना नहीं है। इस कारण विश्व बाजार में उत्साह का वातावरण रहेगा। ♦

जीवन की दिव्यता श्रेष्ठता एवं पूर्णता प्राप्ति के लिये अनुपम अग्रिम दीक्षाएं

मई माह के अंतिम कवर पृष्ठ पर दी गई दीक्षाओं के आगे की दीक्षाएं जो एक के बाद एक, या सभी एक साथ लेकर अद्वितीयता प्राप्त की जा सकती है

८.शतोपंथी दीक्षा :- जीवन में उन्नत ललाट , भव्य व्यक्तित्व एवं सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त करने हेतु महत्वपूर्ण दीक्षा।

९.चैतन्य दीक्षा :- जो शरीर के अन्दर स्थित सातों लोकों १.भू , २.भुव ३ स्व ४. मह,५.जन, ६.तप और ७.सत्य लोक को जाग्रत करने की अनुपमदीक्षा।

१०.महामणि दीक्षा:- जीवन में अपने सम्पूर्ण लक्ष्य को जल्दी से जल्दी प्राप्त करने की दुर्लभ दीक्षा।

११ .वेदान्त दीक्षा:- शरीर एवं मुंह से पूर्णता प्राप्ति युक्त "वचन सिद्धि' सफलता की ओर बढ़ने की श्रेष्ठ दीक्षा।

१२.परम दीक्षा :- योगियों को भी दुर्लभ एक ऐसी तेजस्वी दीक्षा, जिसके माध्यम से चेहरे के चारों ओर प्रभामंडल स्थापित होने की प्रक्रिया ऐसी दीक्षा तो गुरुदेव के द्वारा ही संभव हैं।

१३. आत्म दीक्षा :- इसी दीक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने शरीर में स्थित ब्रह्माण्ड से पहली बार साक्षात्कार करता है और बाहरी ब्रह्माण्ड से उसे जोड़ने की क्रिया करता है।

१४. पूर्ण वैभव दीक्षा :- जिसके द्वारा साधक उस स्थिति में पहुंच जाता है जहां उसकेलिए धन ऐश्वर्य एवं वैभव के रास्ते खुल जाते हैं।

दीक्षा के लिये सम्पर्क

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली
टेलीफोन ०११-७१८२२४८

दीक्षा केलिये तारीख व समय पहले से ही टेलीफोन पर तय कर लें।

(पृष्ठ ४५ का शेष भाग)

ध्यायेच्च नित्यं गुरुमेक रूपं, तदैव शिष्यत्वं याति धन्यं ।
गुरोर्हितस्य परिक्षणं स्यात् , संवर्धनं नित्यं पालनं च ।।

जो शिष्य हर समय गुरु का ही चिन्तन करता है, वही सही अर्थों में शिष्य है गुरुदेव के हितों की रक्षा करना ही उसका धर्म है, उनके हितों का पालन ,संवर्धन और ऊंचाई पर ले जाना ही उसका कर्तव्य है। जो गुरुदेव की तरह ही उनके पुत्रों को भी गुरु की तरह ही सम्मान दे,चाहे अत्यधिक छोटा सा गुरुपुत्र ही क्यों न हो उसके चरण स्पर्श करने में भी हिचकिचावे नहीं, गुरु पत्नी तो "जगत्जननी" और पुण्यदायिनी गंगा है ऐसा समझे,तभी शिष्यत्व धन्य होता है।

गर्वालस्य प्रमादाख्यं कृतकार्य प्रशंसनं , निन्दनं श्रवणं चापि शिष्यत्वस्य प्रघातकाः ।
मलिनोऽव्यवस्थितो नित्यम् अपशब्दं च भाषते अहंकाराश्रितः यो वै तस्य पुण्यं प्रणस्यति ।।

अहंकार,आलस्य,प्रमाद, अपने किये गये कार्यों की प्रशंसा और निन्दा करना या निन्दा सुनना - ये पांच शिष्य के शत्रु होते हैं जो उसके पुण्य को क्षीण कर देते हैं,जो गंदा, अव्यवस्थित और मैले कुचैले कपड़े पहिनने वाला गाली गलौज या नशा करने वाला, अहंकार वश दूसरे गुरु भाइयों या बहिनों की निन्दा करनेवाला या क्रोध करनेवाला अपने ही पुण्य का क्षय करता है।

जीवने तु गुरुं लब्धृत्वा सौभाग्यं सोऽपि गच्छति , आज्ञासंपालनेनात्र उच्चः उच्चतरं भजेत् ।।
जीवितं जाग्रतं पुण्यं गुरुं यो परिसेवते , तद्भागधेयं देवोऽपि शंसयन् नावलस्येत ।।

वे शिष्य सौभाग्यशाली होते हैं जिन्हें अपने जीवन में ही "गुरु " मिल जाते हैं जो गुरु आज्ञा पालन करते हैं वे उससे उच्च होते हैं पर जिनको निरन्तर रात-दिन गुरु सेवा में ही रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है उनके भाग्य तो निश्चय ही "सोने की कलम " से लिखे होते हैं और फिर जिनको जाग्रत चैतन्य गुरु शरीर मिल जाता है वह शिष्य स्वयं ही शिववत् बन जाता है।

यो गुरोः गुरुसंस्थाया : उन्नति नैव कांक्षति , अधमः पुरुषः ज्ञेयः, धनं धान्यं विवर्जितः ।
अति नम्रतया सम्यक् गुरुसेवां विधीयते, आज्ञापालनेशक्तः अहोभावं च जायते ।।

शिष्य का उपार्जित द्रव्य गुरु स्वीकार करे, यह सौभाग्य है, शिष्य का शरीर गुरु के लिये उपयोगी हो, इससे ऊंचा पुण्य हो भी क्या सकता है, यह तो शिष्य का पुण्योदय होता है कि गुरु उसकी सेवा या द्रव्य स्वीकार करे, गुरु का दिया हुआ भोजन ग्रहण करे, गुरु के दिये हुए या पहिने हुए कपड़े धारण करे गुरु के चरणों का अमृत पान करें , नित्य प्रातः चरण स्पर्श कर दैनिक जीवन प्रारंभ करे वही शिष्य है, जो गुरु को धोखा देता है,या ऐसा सोचता भी है तो उसके कई कई जन्मों के पूण्य क्षय हो जाते हैं जो गुरु या उनसे संबंधित संस्था की उन्नति में प्रतिक्षण व्यतीत नहीं करता वह अधम है, जो गुरु की आंख से आंख मिलाकर बात करता है वह पापी है, निरन्तर नीची नजर कर नम्रता पूर्वक गुरुदेव से बात ,आज्ञा पालन या उनके हितों का संवर्धन करता है वह श्रेष्ठ शिष्य है।

यस्यस्पुरौरेव स्पर्श गुरौर्वे स पाषाण हीरक खण्ड मेव ।
गुरौर्वदान्यै वचने स सत्यं स्पर्श कथं दृष्टवां तथैव।।

पूज्य गुरुदेव जिस पदार्थ को भी स्पर्श कर लेते हैं वह स्वर्ण बन जाता है यदि वे पत्थर को भी स्पर्श कर कह दें,कि यह हीरक खण्ड है, तो शिष्य के लिये तो वह हीरे की तरह ही प्रभावशाली होगा, गुरुदेव ने जिस किसी पदार्थ (माला,यंत्र,पूजन सामग्री) के लिये जो कुछ कह दिया वही सत्य है, उनके स्पर्श करने से, कहने से अथवा मात्र देखने से ही उस सामान्य पदार्थ में भी वे ही गुण पूर्णता के साथ आ जाते हैं, जो गुरुदेव ने उच्चरित किया है।

आप अपनी प्रत्येक

मनोकामना

पूरी करें. . .

आज का हमारा जीवन अत्यन्त संघर्षशील और बाधाओं से युक्त है, इस जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को पग -पग पर संघर्ष करना होता है, इतना होने के बावजूद भी व्यक्ति अपने जीवन काल में अपनी सारी इच्छाओं को पूरी नहीं कर पाता।

ऐसी स्थिति में हमारे पूर्वजों ने और ऋषि मुनियों ने यह संकेत दिया है कि व्यक्ति मन्त्र और तन्त्र के माध्यम से अपनी समस्त इच्छाओं को पूरी कर सकता है और अपने जीवन में पूरी तरह से सफलता प्राप्त कर उस स्थिति को प्राप्त कर सकता है जो कि उसके जीवन का लक्ष्य है।

मन्त्र तन्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी हेतुकानन्द जी ने अपने जीवन के अनुभवों को कुछ पन्नों में स्पष्ट कर पत्रिका पाठकों के लिये जो उपहार इस लेख के माध्यम से भेजा है, वह प्रत्येक व्यक्ति के लिये उपयोगी रहेगा।

मानव की मनोकामनाएं असीमित है, उसके मन में कोई न कोई इच्छा बराबर रहती है, और वह अपना सारा श्रम और शक्ति इस कार्य के लिए लगा देता है, जिससे कि वह अपने जीवन काल में ही अपनी इच्छाओं की पूर्ति देख सके।

यों तो मानव की इच्छाएं इतनी अधिक होती है कि उन सबकी पूर्ति सम्भव नहीं होती। ये इच्छाएं भी विविध होती हैं, परन्तु कुछ इच्छाएं ऐसी होती है, जो अधिकतर प्राणियों में समान रूप से पाई जाती है।

जब मानव श्रम और शक्ति के माध्यम से अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सके, तो उसे चाहिए कि वह कुछ ऐसी शक्तियों का सहयोग ले, जो कि अपने आप में विशिष्ट शक्ति सम्पन्न और कार्य सिद्धिदायक हों, इनमें मन्त्र तन्त्र यन्त्र और विभिन्न प्रकार की साधनाएं है।

मै नीचे कुछ ऐसी ही साधनाएं स्पष्ट कर रहा हूं जो कि सरल होने के साथ ही साथ शीघ्र एवं श्रेष्ठ फलदायक हैं,साथ ही साथ इस प्रकार का मन्त्र जप या साधना कोई भी साधक कर सकता है इसमें गृहस्थ भी हो सकता है, और सन्यासी भी, इसमें पुरुष भी हो सकता है, और स्त्री भी।

यदि भूल वश या किसी कारण से साधना पूरी न हो पावे, तो भी इसका प्रभाव देखने को नहीं मिलता ,नीचे मैं जो साधनाएं दे रहा हूं वे सौम्य साधनाएं हैं, सैकड़ों लोगों ने इसका अनुभव किया है, और उन्हें आश्चर्यजनक सफलता मिली है, उनकी

इच्छाएं पूरी हुई है, वे अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति में सफल रहे हैं, और उनके जीवन में एक नवीन उत्साह उमंग और ओज आया है। मैं समझता हूं कि इन साधनाओं का उपयोग पत्रिका पाठक करके अपने जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकेगा, और जीवन की न्यूनताओं को पूरी कर समाज के अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ और सम्पन्न हो सकेगा।

मनोकामना सिद्धि मन्त्र

यह मन्त्र महत्वपूर्ण है और साधक को चाहिए कि इस मन्त्र जप में मात्र **लघु रुद्राक्ष की माला** का ही प्रयोग करें, यह रुद्राक्ष की माला मन्त्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो जिससे कि उसे जीवन मे पूरी -पूरी सफलता प्राप्त हो सके।

अपने सामने **दुर्गा यन्त्र** स्थापित करें और उसकी लाल पुष्प से पूजा करे, पूजा से यहां तात्पर्य केवल मात्र पुष्प समर्पित करना ही है, इसके अलावा अन्य किसी प्रकार की विधि विधान की आवश्यकता नहीं है।

साधक पश्चिम की तरफ मुंह कर लाल आसन पर बैठे, यह आसन ऊनी या सूती हो सकता है इसके बाद नित्य दस मालाएं निम्नलिखित मन्त्र की करे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं मानससिद्धिकरी ह्रीं नमः ।।

जब दस मालाएं पूरी हो जाय तब एक कनेर का पुष्प यन्त्र के सामने चढ़ाए, और अपनी जो मनोकामना है, पुष्प चढ़ाते समय स्पष्ट कर दे, इस प्रकार चालीस दिन तक करने पर मनुष्य की वह मनोकामना निश्चित रूप से पूरी हो जाती है।

नौकरी मिलने का मुसलमानी मन्त्र

यह एक अनुभूत और सफलतादायक है, और मुझे एक पहुँचे हुए फकीर ने बताया था, उसने यह भी बताया था कि इस मन्त्र का प्रभाव कभी खाली नहीं जाता है।

सवा पाव जौ का या उड़द का आटा लेकर उसे रोटी की तरह बनावे और उसे तवे पर डालकर सेके, परन्तु उस रोटी को एक तरफ से ही सेकना है, दूसरी तरफ से यह कच्ची ही रहेगी।

इस प्रकार एक तरफ रोटी सेक कर नीचे उतार कर उसके चार टुकड़े कर दे, और प्रत्येक पर **सुलेमानी हकीक** रख कर निम्नलिखित मन्त्र का ११ बार जप कर उस रोटी के टुकड़े को मन्त्र सिद्ध करे, और बाद में इन चालीस टुकड़ों को नदी में मछलियों को खिला दे या नदी नहीं हो तो कौओं को खिला दे। हकीक को नदी में विसर्जित कर दें।

इस प्रकार साधक स्वयं अपने हाथों से नित्य करे और चालीस दिन पूरे होने पर निश्चय ही उसकी नौकरी या रोजी का प्रबन्ध हो जाता है, साधना प्रारम्भ करने से पूर्व अज्ञात पीर को नमस्कार करेंऔर दक्षिण दिशा की तरफ मुंह कर इस मन्त्र का जप करे।

मन्त्र

या इजाफील या बहक्क या अल्ला हो।

वस्तुतः यह मन्त्र चमत्कारिक है, इसमें **ग्यारह मनकों की स्फटिक माला** का ही प्रयोग किया जा सकता है।

व्यापार द्वारा धन प्राप्ति का मन्त्र

यह मन्त्र एक योगी ने बताया था और उसका कहना था कि जितनी बार भी और जिसने भी इस मन्त्र का प्रयोग किया है, उसे निश्चय ही सफलता मिली है।

इस मन्त्र में **सफेद हकीक माला** का प्रयोग किया जाता है, और इसमें तीन मालाएं इस मन्त्र की जपी जाती है, अर्थात् नित्य तीन सौ बार मन्त्र जप करना चाहिए और उसके बाद अपनी दुकान पर या कार्यालय में उसी माला को पहन कर जाना चाहिए।

रात को सोते समय इस माला को उतार दें, प्रातः काल पुनः इसी माला से मन्त्र जप करे,और दिन भर इस माला को पहने रहे,यह प्रयोग चालीस दिन का है, इसके लिए अलग कोई विशेष विधि की आवश्यकता नहीं है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं लक्ष्मी मम गृहे निवासय निवासय व्यापारे धन पूरय पूरय चिन्ताम् दूरय दूरय नमः।।

चाहे किसी व्यक्ति की दुकान या व्यापार बांधा हुआ हो या अन्य किसी प्रकार की कोई भी समस्या हो इस प्रयोग से वह समस्या समाप्त हो जाती है, और व्यापार में असाधारण वृद्धि होने लगती है।

वस्तुतः यह मन्त्र चमत्कारिक और श्रेष्ठ फलदायक है।

मुकदमें में विजय मन्त्र

यह प्रयोग चालीस दिन का है, और उसमें **मूंगे की माला** का प्रयोग किया जाता है, साधक को चाहिए कि किसी भी मंगलवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करे, यह मन्त्र जप दक्षिण दिशा की तरफ बैठकर किया जाना चाहिए तथा इसमें लाल ऊनी आसन का प्रयोग करना चाहिए ।

सर्वप्रथम मंगलवार को कुंकुम

(रोली) से किसी सफेद कागज पर किसी कलम से या किसी हाथ की किसी भी उंगली से इस मन्त्र को लिख ले, और बीच में अपने शत्रु का नाम लिख ले, फिर इस कागज को मोड़ कर **विजय यन्त्र** के नीचे रखें।

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र का जप करे-

मन्त्र

ॐ क्लीं मम् शत्रुन (अमुकस्य) पराजय क्लीं फट्।

इस मंत्र में "अमुकस्य" के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारित करे, यदि मुकदमे में चार-पांच व्यक्ति हों तो उनमें जो महत्वपूर्ण शत्रु हो तो उनके नाम का एक साथ उच्चारण करे।

चालीस दिन जब पूरे हो जाय तो उस कागज को जंगल में जाकर एक हाथ गड्ढा खोदकर उस कागज को भूमि में दबाकर वापिस आ जाय, ऐसा करने पर निश्चय ही उसे मुकदमें में सफलता मिलती है, और शत्रु पराजित होता है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और इस प्रयोग से कई लोगों ने लाभ उठाया है।

सर्व आकर्षण प्रयोग

तन्त्र शास्त्रों में यह प्रयोग अत्यन्त दुर्लभ कहा गया है, और इससे व्यक्ति, जिसको भी चाहे, उसे अपने वश में कर सकता है।

किसी भी शुक्रवार से यह प्रयोग प्रारम्भ होता है, इसमें मंत्र जप करते समय **काली हकीक माला** का प्रयोग किया जाना आवश्यक होता है।

शुक्रवार के दिन साधक भोज पत्र पर अपनी अनामिका उंगली के रक्त से उस पुरुष या स्त्री का नाम लिखे, जिसे वश में करना है, उसके नीचे निम्न लिखित मंत्र को भी लिख दे।

लिखने में उंगली का या किसी भी प्रकार की कलम का प्रयोग किया जा सकता है।

लिखने के बाद उस भोज पत्र को मोड़कर शहद में डाल दे, और उसके सामने नित्य ग्यारह मालाएं निम्न मंत्र की फेरे-

मन्त्र

ॐ नमो आदि पुरुषाय अक्षाय अमुकस्य आकर्षणम् कुरु कुरु स्वाहा।।

मन्त्र में जहां "अमुकस्य" शब्द आया है, उस स्थान पर उसका नामउच्चरित करना चाहिए जिसे वश में करना है।

शहद में डुबाये हुए उस भोज पत्र के सामने ग्यारह मालाएं मन्त्रकी जप करें यह प्रयोग चालीस दिन का है, चालीस दिन के भीतर -भीतर वह जिसे भी आकर्षित करना चाहता है, वह निश्चय ही आकर्षित होता है, तथा जीवन भर उसके वश में बना रहता है

साधक को चाहिए कि वह शहद में उस यन्त्र को बना रहने दे, जब उसे आकर्षण से मुक्त करना हो तो उस यन्त्र को शहद में से निकाल कर पानी से धो ले तो उस व्यक्ति पर किया आकर्षण समाप्त हो जाता है, जब तक वह यन्त्र शहद में डूबा हुआ रहेगा तब तक वह निश्चय ही वश में बना रहेगा और उसकी प्रत्येक इच्छा पूरी करने के लिए वह तत्पर रहेगा।

विद्वेषण मन्त्र

यदि किसी स्त्री का सम्बन्ध किसी अन्य पुरुष से हो गया हो और उन दोनों के बीच लड़ाई करानी हो, या दो शत्रु हों और उन दोनों के बीच लड़ाई करानी हो तो विद्वेषण प्रयोग किया जाता है, यह विद्वेषण प्रयोग आजमाया हुआ है, और निश्चय ही सफलतादायक है।

यह प्रयोग चालीस दिन का है और उसमें **काली हकीक** की माला का प्रयोग किया जाता है, तथा नित्य साधक को दक्षिण दिशा की तरफ मुंह कर तीन मालाएं फेरनी चाहिए

मंत्र

ॐ नमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषण कुरु कुरु स्वाहा।।

इसमें "अमुकस्य" के स्थान पर एक व्यक्ति का नाम उच्चरित करे और उसकी लड़ाई जिससे करानी हो "अमुकेन" के स्थान पर उसका नाम उच्चारित करे। ऐसा करने पर निश्चय ही उन दोनों के बीच जबरदस्त लड़ाई हो जाती है, और वे भविष्य में एक दूसरे का मुंह भी देखना नहीं चाहेंगे। वस्तुतः यह प्रयोग सरल होने के साथ साथ पूर्ण सफलतादायक हैं।

ऊपर मैंने कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दिये हैं। इस लेख में ऐसे ही प्रयोग दिये गये हैं जो कि मेरे आजमाये हुए हैं, और मैंने जिन -जिन लोगों को भी बताया है, उन्हें भी अपने उद्देश्य में इन मन्त्रों के माध्यम से पूरी पूरी सफलता मिली है, वस्तुतः ये सभी प्रयोग पूर्ण सफलता दायक एवं सिद्धिदायक हैं।

◆ ◆ ◆

हे ! गुरुदेव मैं आपको
किस नाम से पुकारूं
जमाने में तो बहुत नाम है,
मगर आपके काबिल कोई नहीं।।

आशीष भट्टाचार्य, धनबाद

राशिफल

मेष :-

आपके लिए यह समय दायित्वपूर्ण है। पारिवारिक रूप से आपको विशेष सजग रहना पड़ेगा। परिवार के सदस्यों द्वारा मिलने वाले सहयोग में न्यूनता रहेगी। धनागम की स्थितियां बनेंगी, किंतु पारिवारिक दायित्वों के कारण आप उनका विशेष लाभ संभवतः न ले सकें, अतः इस ओर भी सचेष्ट रहें।

वृष :-

पिछले कुछ समय से चली आ रही कोई गुत्थी सुलझेगी अतः मन में उत्फुल्लता विशेष रूप से व्याप्त रहेगी। स्वास्थ्य में सामान्य गड़बड़ हो सकती है। लम्बी यात्रा का विचार त्याग दें,आपका शीघ्र ही किसी पर विश्वास कर लेना व्यवहारिक दृष्टि से उचित नहीं।

मिथुन :-

आकस्मिक धन प्राप्ति की संभावनायें प्रबल पहले आप अपने ऋण के भुगतान के विषय में सुनिश्चित हो लें तभी किसी अन्य को ऋण देने की सोचें। पत्नी के स्वभाव में चिड़चिड़ाहट को अपने संयम से शांत करें। गृह कलह का वातावरण बनने से बचायें।

कर्क :-

परीक्षार्थियों के लिए शुभ समय। इस राशि के जिन विद्यार्थियों का इस माह इंटरव्यू पड़ रहा है उनकी सफलता प्रायः निश्चित। व्यापारी वर्ग के लिए भी नये कार्य करने का सुअवसर आप इस माह किसी शेयर आदि में भी धन लगा सकते हैं। जिन योजनाओं को आप अभी तक आरम्भ न कर पाये हो उन्हें मूर्त रूप देने का उपयुक्त समय।

सिंह :-

आफिस में गुटबंदी के कारण खिन्नता। मकान आदि के कार्य में चले आ रहे विघ्न समाप्त होंगे। विवाह में आ रही अड़चनें समाप्त होंगीं। आप अपने नित्य प्रति के जीवन का एक निश्चित समय पूजन अर्चन में अवश्य दें। उद्देश्य पूर्ण यात्राओं का उचित समय।

कन्या :-

धनागम की विशेष स्थितियां। धन संचय करने के भी पर्याप्त अवसर। राज्य पक्ष से सम्मान मिलेगा। मुकदमें बाजी की अप्रिय स्थितियों से बचने का प्रयास करें। नवीन वाहन का क्रय भी इसी माह में करें।

तुलाः-

प्रेम प्रसंगों में सावधान रहे। अपने व्यवहार में शालीनता लायें। मित्र वर्ग के द्वारा आपको कोई विशेष लाभ नहीं मिलेगा। लाटरी में धन का दुरुपयोग न करें। धन लाभ की वर्तमान में कोई विशेष आशा नहीं।

वृश्चिक :-

पुत्र का स्वास्थ्य ठीक न रहने से खिन्नता रहेगी। कहीं से रुका हुआ या उधार दिया धन वापस मिलेगा। अध्ययन मनन में समय व्यतीत होगा। ऑफिस में आपके प्रति सम्मान बढ़ेगा। जीवन साथी का सहयोग रहेगा।

धनु :-

इस माह आपके जीवन में विशेष परिवर्तन होगा जो कला जगत से संबंधित है वे कोई सम्मान भी प्राप्त कर सकते हैं। व्यापारी वर्ग को सोच समझ कर समझौतों में हाथ डालना उचित रहेगा। शेयर आदि में अथवा ऋण में धन कदापि न फंसायें। जीवन साथी के प्रति आपका व्यवहार और मधुर होना अपेक्षित।

मकर :-

आपके लिए उपयुक्त रहेगा कि आप कोई साइड बिजनेस करें जिससे प्रचुर मात्रा में धन लाभ हो सके। आपके मातृपक्ष के रिश्तेदार आपके विशेष सहयोगी रहेंगें स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा न बरतें। स्वप्न में मिलने वाले संकेतों को समझने का प्रयास करें।

कुंभ :-

इस माह आप गुप्त घातों से सावधान रहें और अपने स्वभाव की उग्रता में भी कमी लायें। कूटनीतिक चालों से सावधान रहें। किसी धार्मिक स्थान की यात्रा लाभप्रद रहेगी। मानसिक तनावों से बचें। सभंव है कि इस माह आप घर के लिए उपयोगी कोई विशेष उपकरण भी खरीदने में सफल हों।

मीन :-

धन प्राप्ति के लिए आपको सक्रिय होना ही पड़ेगा। आलस्य का त्याग करें। उपेक्षा एवं वैमनस्य से खिन्न न हों। ।नवीन योजनाओं का निर्माण करते रहें। जिससे अनुकूल समय आने पर उसे कार्यान्वित कर सकें। शेष विषय सामान्य ही रहेंगे। ◆

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

आज का मनुष्य अत्यधिक उग्र और हिंसक हो गया है, शारीरिक जटिलताओं की अपेक्षा वह मानसिक जटिलताओं में उलझ गया है, और सही अर्थों में देखा जाय तो मनुष्य अपने आप में ही उलझ कर रह गया है।

ऐसी स्थिति में उसके पारस्परिक संबंध ज्यादा से ज्यादा जटिल हो गये हैं, हर पुरुष, हर स्त्री अपने ही बनाये हुए जाल में उलझ कर रह गयी है, और एक दूसरे के प्रति संदेह की परत ज्यादा से ज्यादा घनी होने लगी है, ऐसी स्थिति में पारिवारिक संबंध लगभग खत्म से होने लगे है।

कोई विज्ञान कोई टेक्नोलोजी इस जटिल समस्या को सुलझा नहीं सकती, यह स्थिति, यह समस्या केवल भारत की ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व की है, और पूरी दुनिया के वैज्ञानिक और जानकार मानव मन की ग्रंथियों को सुलझाने में प्रयत्नशील है और वे सभी इसी निर्णय पर पहुंचे है कि केवल हिप्नोटिज्म या सम्मोहन विज्ञान ही इस क्षेत्र में पूरी तरह से सहायक हो सकता है, और इस विज्ञान ने मानव को निराश भी नहीं किया है अपितु यह उम्मीद बंधाई है कि यह मानव मन की उलझी हुई गुत्थियों को पूरी तरह से सुलझाने में सहायक है।

पूज्य श्रीमाली जी ने इस क्षेत्र में जो आधुनिकतम शोध या निर्णय हुए है उन्हें इस पुस्तक में समेटने का प्रयत्न किया है जिससे कि मानव ज्यादा सुखी ज्यादा सफल ज्यादा प्रसन्नचित्त हो सके।

यह पुस्तक मात्र शब्दों का संग्रह ही नहीं, अपितु इस पुस्तक के माध्यम से कोई भी व्यक्ति प्रयत्न करने पर और किसी योग्य सम्मोहन कर्ता से प्रैक्टिकल रूप से समझकर सफल सम्मोहन वेत्ता हो सकता है, और किसी को भी पूरी तरह से सम्मोहित करने में सफल हो सकता है।

पति-पत्नी के मतभेद, पारिवारिक कलह, प्रेमी या प्रेमिका के बीच की खाई पाटने, मनोवांछित प्रेमिका या प्रेमी को प्राप्त करने, पुत्र को सन्मार्ग पर लाने, पुत्री के विचारों को घर की मर्यादा के अनुकूल बनाने, अधिकारी को अपने अनुकूल बनाने मजदूरों के मानस को परिवर्तित कर हड़ताल टलवाने, पूरे जनसमुदाय को अपने अनुकूल, बनाने और अपने व्यक्तित्व को ज्यादा भव्य, ज्यादा आकर्षक, ज्यादा प्रभावयुक्त बनाने में यह पुस्तक सहायक हो सकती है, और इस प्रकार इस पुस्तक के माध्यम से व्यक्ति ज्यादा स्वस्थ, ज्यादा ' फ्री ' ज्यादा संतुष्ट अनुभव कर अपने जीवन को मधुरतम बना सकता है।

इन अमृत की बूंदों को पुस्तकाकार देने का प्रयास किया है " अरविन्द प्रकाशन " ने और कलात्मक रूप से सजाकर पूरी दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाने का जिम्मा लिया है " मंत्र शक्ति केन्द्र " ने मात्र साठ रुपये मूल्य में, डाक व्यय की जिम्मेवारी भी उसी ने उठाई है।

- कनक पाण्डे

युग बदल गया है, मनुष्य बदल गया है, स्थितियां बदल गई हैं, अब शरीर बल की जरूरत नहीं रही वह तो अर्थहीन हो गया है, जरूरत है, किसी के मन, हृदय, पर आत्म पर नियंत्रण करने की, और यह सम्मोहन के माध्यम से ही संभव है . . .

पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी की यह पुस्तक अपने आप में क्रांतिकारी है, जिसके माध्यम से सम्मोहनकर्ता, पत्थर को भी पूर्ण रूप से अपने वश में कर सकता हैं . . .

सम्पर्क :-

मंत्र शक्ति केन्द्र

डॉ. श्रीमाली मार्ग हाई कोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर (राज.) पिन ३४२००१

टेलीफोन - ०२९१- ३२२०६

सिद्धाश्रम साधक परिवार के वे गौरवशाली रत्न जिन्होंने मई में प्रकाशित सातों दीक्षाएं एक साथ लीं

अजय भल्ला
दिल्ली

* सातों दीक्षाएं एक साथ लेते ही ऐसा लगा जैसे मेरा पूरा शरीर झनझना गया हो . . . पर कुछ ही क्षणों के बाद जीवन में पहली बार गहरा ध्यान लग गया . . . और मैं खुमारी में डूब सा गया।

वेद प्रकाश गुंसाई
विकास पुरी, दिल्ली

* मैंने पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी से भव्यतम रूप से ३०६, कोहाट में दीक्षा ली, और दीक्षा के बाद गुरुदेव ने अंगूठे से ज्यों ही मेरे ललाट के मध्य भाग आज्ञा चक्र को छुआ, त्यों ही सनसनाहट सी फैल गई, और मुझे हिमालय . . . जंगल, गुरुदेव का सन्यासी रूप और मेरा शिष्यत्व रूप सब कुछ दिख गया . . . पूरा का पूरा पिछला जीवन . . .।

डॉ नरेश कुमार वर्मा
जुलाना,

* मैं डॉक्टर हूं पढ़ा लिखा, इक्कीसवीं सदी का . . . पर मेरा क्लिनिक चल ही नहीं रहा . . . घर में गरीबी सी आने लगी थी, बाहर मुश्किल से इज्जत बचा रहा था . . . एक मित्र के कहने से सातों दीक्षाएं लीं . . . और पिछले चार महीनों में . . . मात्र एक सौ बीस दिनों में धड़ल्ले से क्लिनिक चलने लगा है, और लक्ष्मी की तो जैसे वर्षा होने लगी है।

अमरजीत
लुधियाना

* मैं सरदार हूं, फर्नीचर की दुकान करता हूं, घर में तो सात पीढ़ी से दरिद्रता घर जमाये बैठी थी, मैंने एक दिन दिल्ली जाकर सातों दीक्षाएं एक साथ लीं, और आज शहर में सब से अच्छी दुकान मेरी चल रही है।

वीरेन्द्र
वाशिंगटन

* मेरा तो पूरा जीवन तनावों में बीता, घर परिवार और पत्नी के साथ, उसके उग्र और क्रोधित ने रूप मेरे जीवन को नर्क बना दिया था, पर इन दीक्षाओं के बाद तो उसने मेरे चेहरे में कौन सी सौम्यता देखी. . . क्या देखा कि वह समर्पित ही हो गई, जीवन ही बदल गया मेरा।

कृष्ण कुमार
चौटाला

* इन सातों दीक्षाओं के बाद मैंने भगवती भुवनेश्वरी के साक्षात् जाज्वल्यमान दर्शन किये, सम्पूर्णता के साथ . . . भव्यता के साथ... दिव्यता के साथ।

योगेन्द्र सिंह सेंगर
झांसी

* मैं बीमारी से खोखला बन गया था, जीवन का आनन्द-रस ही समाप्त हो गया था, मैं सही रूप में तो नित्य मृत्यु की याचना करता था . . . पर इन चार-पांच महीनों में जो परिवर्तन, जो स्वास्थ्य लाभ पाया था, वह तो सैकड़ों डॉक्टर भी आज तक नहीं दे पाये थे, इन दीक्षाओं ने तो मेरा कायाकल्प ही कर दिया। **समय दीक्षा, ज्ञान दीक्षा, जीवन मार्ग दीक्षा, शांभवी दीक्षा, चक्रजागरण दीक्षा, विद्या दीक्षा, शिष्याभिषेक और धन्वन्तरी दीक्षा** - ये सातों दीक्षाएं मेरे जीवन का सौभाग्य ही बन गईं।

सद्गुरुदेव विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधनाओं में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री		पृष्ट	न्यौछावर
सिद्धाश्रम गुरु गुटिका		५	६०/-
सम्पूर्ण सम्मोहन दीक्षा		८	२१००/-
पारद पादुका		१३	१५०/-
स्फटिक माला		१४	३००/-
निखिलेश्वरा नं श्रीफल(५)		१४	१५०/-
अष्टादश दुर्गा शक्ति यन्त्र		१६	३५०/-
१८ हकीक		१६	१८०/-
कमल गट्टे की माला		१८	१२०/-
मार्तण्ड यन्त्र ,चित्र		२१	३००/-
कार्तवीर्याजुन यन्त्र		२३	३००/-
रति प्रिया यन्त्र		२६	३००/-
रति प्रिया माला		२६	११०/-
गोमती चक्र		२६	२१/-
घण्टाकर्ण यन्त्र		२६	१५०/-
परकाया प्रवेश सिद्धि यन्त्र		२८	२४०/-
श्रावण मास सर्वकामना सिद्धि पैकेट		३२	४५०/-
ज्येष्ठा लक्ष्मी यन्त्र		३६	१५०/-
६ लक्ष्मी सिद्धि श्रीफल		३६	१५०/-
प्रियंकू माला		४२	१५०/-
मनः शक्ति गुटिका		४२	६०/-
मनः शक्ति यन्त्र		४२	६०/-
पुष्प देहा अप्सरा यन्त्र		५४	२४०/-
अप्सरा हकीक माला		५४	२४०/-
अग्रिम दीक्षाएं	शतोपंथी दीक्षा	७१	१५००/-
	चैतन्य दीक्षा	७१	२१००/-
	महामणि दीक्षा	७१	२४००/-
	वेदान्त दीक्षा	७१	३०००/-
	परम दीक्षा	७१	३५००/-
	आत्म दीक्षा	७१	३६००/-
	पूर्णवैभव दीक्षा	७१	४२००/-
लघु रुद्राक्षी माला		७४	६००/-
दुर्गा यन्त्र		७४	१५०/-
४ सुलेमानी हकीक		७४	१२०/-
११ मनकों की स्फटिक माला		७४	५१/-
सफेद हकीक माला		७४	१५०/-
मूंगे की माला		७४	१५०/-
विजय यंत्र		७५	२१०/-
काली हकीक माला		७५	२१०/-

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑडर या ड्राफ्ट भेजने का पताः

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०६

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आवें

३०६,कोहाट एन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन :०११-७१८२२४८

मुद्रक एवं प्रकाशक - श्री कैलाश चंद्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति प्रिंटर्स, दिल्ली,फांन - ५५६६५७०

विशेष तंत्र रक्षा कवच

यह अत्यधिक दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं आपके लिये सौभाग्य दायक योजना है

* यह एक जीवन की पूर्णता प्रदायक योजना है, जिसके माध्यम से आप अपने जीवन को निडर भाव से आगे बढ़ा सकते हैं
* आप निश्चिन्त भाव से लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि इस योजना के माध्यम से हम आपके साथ हैं, प्रतिपल प्रति क्षण सम्पूर्ण जीवन भर ....

हमारे समाज में हर दूसरा या तीसरा परिवार अपने शत्रु या स्वजनों द्वारा शत्रुतावश किये हुए या दूसरों से करवाये हुए तांत्रिक प्रयोग से अत्यन्त परेशान रहता है। ये तांत्रिक प्रयोग जिस पर किया जाता है, उस व्यक्ति का सर्वनाश सा हो जाता है, इसमें व्यापार बांधना, मानसिक डिप्रेशन, बुद्धि काम न करना, कमाई होते हुए भी पैसे उड़ जाना, बीमारी से ग्रस्त होना तो होता ही है, यहां तक कि मारण प्रयोग से मृत्यु भी हो जाती है, आदमी जिन्दा लाश बनकर रह जाता है। इस तरह के सैकड़ों पत्र कार्यालय में प्रतिदिन आते हैं एतदर्थ विशेष तांत्रिक पण्डितों ने करुणावश सर्वजन हिताय पूर्ण मंत्रसिद्ध, प्राणप्रतिष्ठित सद्यः लाभप्रद "आजीवन तंत्र रक्षा-कवच" सुलभ किया है, जो अद्वितीय एवं दुर्लभ है। इसके धारण करने के कुछ समय बाद ही इसके अचूक प्रभाव से व्यक्ति प्रभावित होने लगता है। यन्त्र जिस व्यक्ति विशेष के नाम से संकल्पित करके तैयार किया जायेगा, उसी को ही इसके लाभ मिल सकेंगे। इस कवच को धारण करने वाले व्यक्ति पर संसार के किसी भी तांत्रिक या मांत्रिक का तंत्र प्रयोग निष्प्रभावी रहेगा।

कवच धारक पर किसी तंत्र प्रयोग का कोई असर नहीं होगा, उल्टे प्रयोग कर्ता की स्थिति भयानक हो सकती है।

यदि किसी व्यक्ति पर कवच धारण से पूर्व ही किसी ने तंत्र प्रयोग करवा रखा हो तो कवच धारण करने के एक महीने के भीतर-भीतर उस प्रयोग का दुष्प्रभाव समाप्त होने लग जायगा।

इस कवच को धारण करने वाला व्यक्ति आजीवन किसी भी प्रकार की तंत्र बाधा एवं भूतप्रेत आदि बाधाओं से सुरक्षित रहेगा।

इस दिव्यतम कवच की न्यौछावर मात्र ११०००/- रूपये (ग्यारह हजार) है। यह कवच गुरूधाम में आकर प्राप्त कर सकते हैं, या पत्र आने पर भिजवाया जा सकता है।

और फिर इतने बड़े अनुष्ठान को देखते हुए यह धनराशि है क्या ... कुछ भी तो नहीं

आप क्या करें

कुछ भी नहीं, न पंडितों-पुरोहितों के चक्कर काटें और न परेशान हों ... सब कुछ हम पर छोड़ दें

धनराशि अग्रिम मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजें, बैंक ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो पर जोधपुर में देय हो एवं "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान जोधपुर" के नाम से बना हो।

यह धनराशि वापिस लौटाई नहीं जायगी और न इस संबंध में किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य होगी और पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर छपे सभी नियम मान्य होंगे।

इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले साधक शिष्य या पत्रिका पाठक ले सकते हैं।

ड्राफ्ट इस पते पर भेजें :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)-३४२००१, टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

अथवा

आप दिल्ली में-३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं - टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

रजिस्ट्रेशन नं. ३५३०५/८१ A.H.W. पोस्टल-एल.आर.जे. ३६६७/८६-८७

संसार की श्रेष्ठतम एवं अद्वितीय दीक्षा

कुण्डलिनी जागरण दीक्षा

- कुण्डलिनी जागरण का तात्पर्य है एक उन्नति, एक छलांग, जीवन की एक पूर्णता।
- जिसके माध्यम से पूर्व जीवन और इस जीवन के समस्त पाप-ताप-शोक आदि की समाप्ति।
- शरीर के आन्तरिक समस्त चक्रों का पूर्णतः जागरण, एक दिव्य प्रकाश, एक आन्तरिक उ़ल्लास।
- मूलाधार से सहस्रार तक का स्फुटन, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से एकात्मकता।
- एवं समस्त साधनाओं में पूर्णतः सिद्धि के लिए अद्वितीय अवसर की प्राप्ति।

कुण्डलिनी एवं सहस्रार जागरण के अद्वितीय

अध्येता

परम पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त जी श्रीमाली

द्वारा

पूर्णतः विधि विधान युक्त दीक्षा

"कुण्डलिनी जागरण"

जीवन का सौभाग्य, पूर्णता की उपलब्धि

सम्पर्क

विशेष जानकारी के लिए

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली

टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

दीक्षा के लिए तारीख व समय पहले से ही टेलीफोन से तय कर लें।